टिप्पणी

30

स्थानीय क्षेत्र नियोजन

स्थानीय स्तर की समस्याओं और मुद्दों के समाधान से सम्बंधित योजना बनाने की प्रक्रिया 'स्थानीय क्षेत्र नियोजन' कहलाती है। लोगों का पूरा कल्याण करना और स्थानीय क्षेत्र का विकास करना इसकी प्राथमिकताएं हैं। सामाजिक सेवाओं व सुविधाओं को बनाए रखना, स्थानीय उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता व मात्रा में प्रौन्नति और परिवेश तथा स्थानीय पर्यावरण को स्वच्छ और हरित बनाए रखना इसके कुछ सतत् प्रयोजन होते हैं। लोगों और स्थानों से सम्बंधित यह आकार में लघुत्तम नियोजन इकाई है। लोगों की भागीदारी के जरिए जो नियोजन किया जाता है वो स्थानीय क्षेत्र में सतत् वृद्धि तथा विकास प्रतिबिम्बित करने वाली वास्तविक स्थिति बन जाता है। आप स्थानीय क्षेत्र का अर्थ व अवधारणाओं, भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में अपनाई गई स्थानीय क्षेत्र नियोजन की विभिन्न विचार–पद्धतियों (अभिगमों) और स्थानीय क्षेत्र नियोजन प्रयासों की सफलताओं के बारे में इस पाठ में ज्यादा विस्तार से अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- स्थानीय क्षेत्र नियोजन, विकास के पारिस्थितिक तथा सामाजिक–आर्थिक आधार को समझा सकेंगे;
- 'नियोजन स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों का इस्तेमाल करने में कैसे मदद करता है' की ख्याख्या कर सकेंगे;
- विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत स्थानीय क्षेत्र का विकास करने के लिए विकसित हुई भिन्न विचार पद्धतियों और उनके उद्देश्यों की तुलना कर पाएंगे;
- भारत के विभिन्न नियोजन क्षेत्रों और उनकी अनूठी जरूरतों को मानचित्र में पहचान सकेंगे;

टिप्पणी

- नक्शे द्वारा बता सकेंगे कि किस प्रकार पारिस्थितिकी, पर्यावरण और संसाधन उपयोग एक–दूसरे से सम्बंधित है और किस प्रकार स्थानीय क्षेत्र नियोजन के लिए इनका प्रबंध किया जाएगा।

30.1 स्थानीय क्षेत्र नियोजन की अवधारणा

स्थानीय क्षेत्र नियोजन से सम्बंधित अवधारणाओं और विचार पद्धतिओं को समझाने के लिए, हमें उस पूरे विचार को गठित करने वाले शब्दों को समझना होगा। 'स्थानीय क्षेत्र' शब्द का उपयोग पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था और समाज में भिन्न–भिन्न तरह से किया जाता है। यह स्थल–विशेष मुद्दा, वस्तु या समुदाय है। विशेषताओं के रूप में, स्थानीय क्षेत्र की भौतिक और सांस्कृतिक विशेषताएं दोनों होती हैं जैसे कि भूदृश्य, इलाके का परिवेश, स्थानीय उत्पाद, लोक नृत्य और दस्तकारी, इत्यादि।

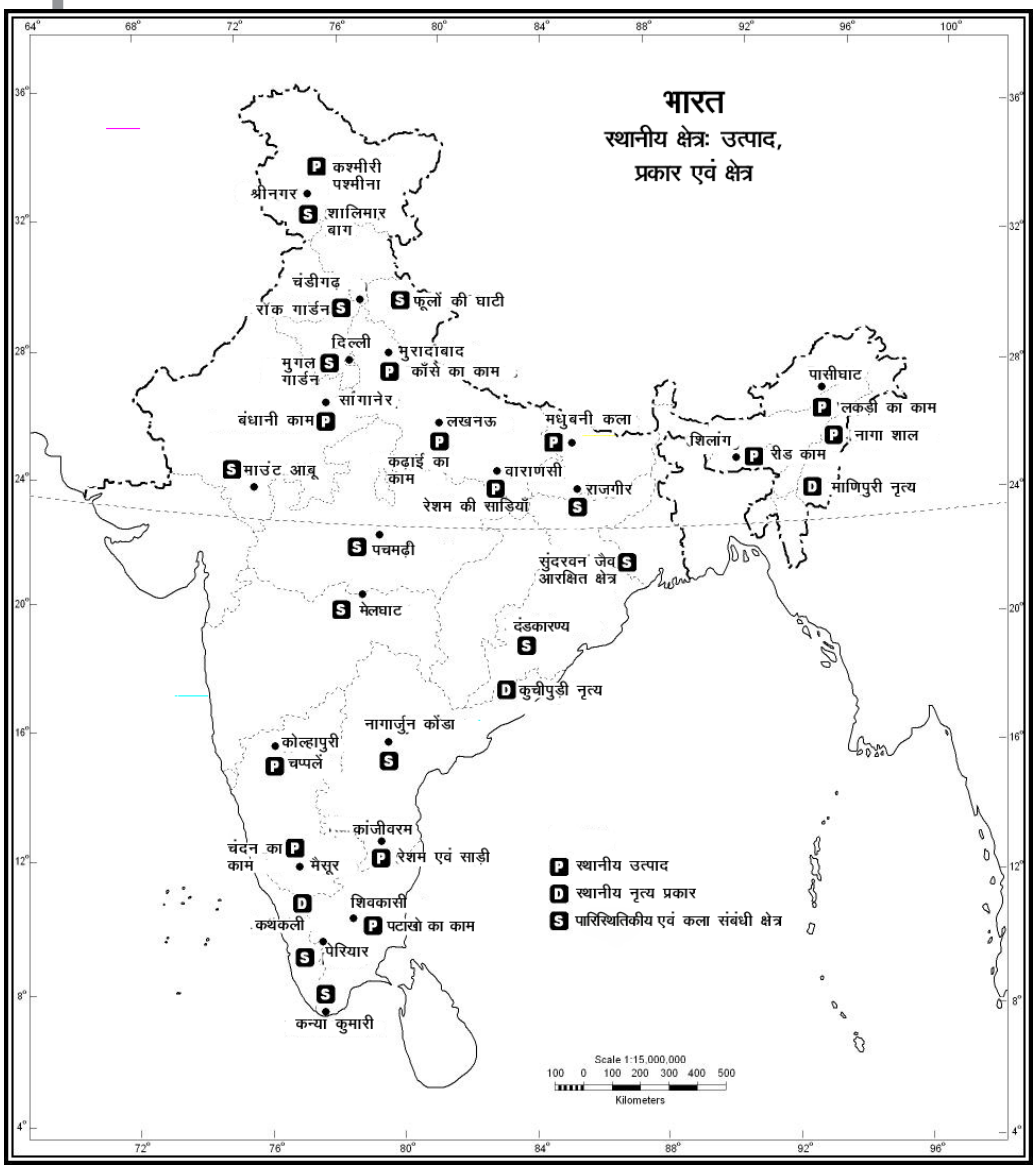

चित्र 30.1 स्थानीय क्षेत्रः उत्पाद, नृत्य एवं स्थल

टिप्पणी

स्थानीय क्षेत्र की विशेषताएँ स्थान/ठिकाने और लोगों के साथ सम्बंध के शक्तिशाली बन्धन को प्रतिबिम्बित करती हैं। गैर स्थानीय क्षेत्र और लोगों के सम्बंध में, यह सम्बंध के निर्बल होते अनुबंध और बढ़ती हुई भिन्नताएं प्रतिबिम्बित करती हैं। उदाहरण के लिए समुद्री समीर, स्थानीय पवन समुद्र के किनारे काफी प्रभाव डालती है और समुद्र से दूर यह निर्बल होती जाती है। कभी–कभी स्थानीय क्षेत्र उत्पाद या पहचान इतनी लोकप्रिय और विशिष्ट बन जाती है कि दूसरे स्थानों व क्षेत्रों में उसकी मांग की जाने लगती है। कोल्हापुर की चप्पल, मैसूर की चंदन की अगरबत्ती, शिवकासी के पटाखे, नागा शालें, कश्मीरी पश्मीना, वाराणासी की रेशमी साड़ियां, मधुबनी कला, कुच्चीपुड़ी नृत्य इत्यादि कुछ स्थानीय क्षेत्र उत्पाद और विशिष्टताएं हैं, जिनकी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बहुत मांग है। अच्छे से बनाकर रखा इलाका अपने स्वच्छ और हरित पर्यावरण के साथ गैर–स्थानीय लोगों के लिए आर्कषण के स्रोत के रूप में कार्य करता है और दूसरे स्थानों को इसे आदर्श रूप में अपनाने की प्रेरणा देता है। उदाहरण के लिए शालीमार बाग (श्री नगर), मुगल गार्डन (दिल्ली), फूलों की घाटी (उत्तराखंड) रॉकगार्डन (चण्डीगढ़), नागार्जुन कोण्डा (आन्ध्र प्रदेश), राजगीर (बिहार), कन्याकुमारी (तमिलनाडु) इत्यादि स्थानीय क्षेत्र के स्थल हैं जो पारिस्थितिक और सौन्दर्य–बोध विषयक महत्व का अच्छा सन्तुलन पेश करते हैं। स्थानीय उत्पाद, क्षेत्र और लोगों से लगाव और उनके प्रति गर्व का भाव, एकता और गतिविधि का स्रोत होता है। यह सामान्य समझ और पहचान की ओर भी अग्रसर करता है। पारिस्थितिक रूप से, स्थानीय क्षेत्र पर्वतीय, पठारी, मैदानी, समुद्र तटीय, मरुस्थलीय या आर्द भूस्थल हो सकते हैं। प्रकार्यात्मक रूप से, स्थानीय क्षेत्र चारागाही, कृषि प्रधान, औद्योगिक, संस्थानिक या सेवा प्रधान क्षेत्र हो सकते हैं। निवास स्थान के रूप में, स्थानीय क्षेत्र ग्रामीण, शहरी, यायावर या जनजातीय हो सकते हैं। स्थानीय क्षेत्र अपने सामाजिक व्यवस्था के सम्बध में आधुनिक या पारम्परिक हो सकते हैं। उसी तरह से, आर्थिक विकास के रूप में, स्थानीय क्षेत्र विकसित या कम विकसित हो सकते हैं।

क्षेत्र और उसके लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए तरीके और माध्यमों का उपाय निकालने का प्रयत्न ''नियोजन'' कहलाता है। एक विद्यार्थी के रूप में, हम अध्ययन, परीक्षाओं और अन्य दिन–प्रतिदिन के कार्यों के लिए योजना बनाते हैं। हम जहां काम करते हैं और जहां रहते हैं वहां स्थानीय स्तर की सामान्य समस्याओं के हल ढूंढ़ने में भी अपने को जोड़ लेते हैं। सुख–साधन और सार्वजनिक उपयोगिता सेवाएं, साफ–सफाई, सामान्य स्वास्थ्य और शिक्षा कुछ सर्वाधिक आम समस्याएं हैं जिनका कि स्थानीय लोग सामना करते हैं। स्थानीय क्षेत्र क्योंकि नियोजन की लघुत्तम इकाइयाँ हैं उनकी समस्याओं के समाधान ढूंढ़ना आसान होता है। उनकी समस्याएं ज्यादा छोटी होती हैं और उनके आयाम का प्रबन्धन आसान होता है। अधिकांश समस्याएं जिनके लिए नियोजन और समाधान की आवश्यकता होती है, वह. पारिस्थितिक असन्तुलन, आर्थिक मन्दी और सामाजिक तनावों से संबधित होती हैं। स्थानीय क्षेत्र में लोगों की सामान्य स्थितियों को सुधारने के लिए मूलभूत सामाजिक सुख–साधन और सुविधाओं की व्यवस्था की योजना बनाने की जरूरत होती है। स्थानीय लोगों की सहभागिता,

टिप्पणी

स्थानीय पदार्थों, देसी ज्ञान का उपयोग करने में, और आधारिक ढ़ांचे, जिसके लिये योजना बनाई है, को बनाए रखने में सहायता करती है। नियोजन का लक्ष्य, वृक्षारोपण, स्थानीय जल भंडार जैसे नदी, तालाब, झील इत्यादि की देखरेख और शैल व मृदा के प्रबन्धन द्वारा, स्थानीय पर्यावरण की गुणवत्ता सुधारने का भी होता है। स्थानीय क्षेत्र के नियोजन में लोगों की सहभागिता और उनके रख–रखाव में सतत सहभागिता के परिणाम स्वरूप स्वास्थ्यपूर्ण स्थानीय पर्यावरण विकसित होता है।

''अतः नियोजन दिए गए समय में उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्धारित प्राथमिकताओं के अनुसार स्थानीय लोगों और सरकार द्वारा पर्यावरण और सामाजिक आर्थिक कार्यकलापों को सोचने, समझने, प्रारंभ करने, नियमित और नियंत्रित करने के रूप में परिभाषित किया जाता है।''

30.2 नियोजन के स्तर

नियोजन विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। एक छोटे स्थानीय क्षेत्र से प्रारम्भ करते हुए इतने बड़े जितना कि विश्व स्तर तक नियोजन मानव उन्नति और क्षेत्रीय विकास, का अंतरंग हिस्सा है। आदि काल से लोग अपने कार्यकलाप, गतिविधियां, आवास स्थान इत्यादि की योजना बनाते रहे हैं। अतः यह समय और क्षेत्र को लेकर सतत् प्रक्रिया है और इसका लक्ष्य लोगों का और वातावरण का कल्याण है। भू–मण्डल स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र द्वारा समस्त विश्व के लिए नियोजन का प्रयास किया गया और अन्य राष्ट्र, नियोजन योजना के क्रियान्वयन में सहयोग प्रदान करते हैं। विभिन्न कार्यक्रम जैसे संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक कार्यक्रम (U.N.E.P), तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (U.N.D.P.) इत्यादि पर्यावरण, निर्धनता, विकास इत्यादि के भू–मण्डलीय मुद्दों के स्तर पर, राष्ट्र के कल्याण और विकास के लिए राष्ट्रीय योजनाएं बनाई जाती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर देश के कल्याण और विकास के लिए योजनाएँ बनाई जाती हैं। हमारे देश में, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्योग इत्यादि; भिन्न पारिस्थितिक अंचलों जैसे पर्वत, मरुस्थल, समुद्र तटीय क्षेत्र इत्यादि और समाज के भिन्न वर्गों जैसे स्त्रियां, बच्चे, जनजातीय समूह, युवा, वृद्ध व्यक्ति, इत्यादि के लिए योजना बनाने का कार्य केन्द्रीय एजेन्सी योजना आयोग करता है। प्रधानमन्त्री योजना आयोग का अध्यक्ष होता है। राष्ट्र को प्रशासनिक और नियोजन के उद्देश्यों के लिये आगे कई उप–इकाइयों में विभाजित किया जाता है। यह प्रत्येक राष्ट्र में भिन्न नाम के होते हैं। हमारे देश में, राष्ट्र को राज्यों, जिला और खण्डों में उप–विभाजित किया है। राज्य के स्तर पर राजकीय नियोजन परिषद है जो पूरे राज्य के लिए योजना तैयार करता है। इसे प्रादेशिक योजना के नाम से भी जानते हैं। राज्य का मुख्यमन्त्री राजकीय नियोजन परिषद का अध्यक्ष होता है। राष्ट्र व राज्यों के बाद तृतीय क्रम की नियोजन इकाईयां जिले हैं। जिले के स्तर पर, नियोजन और विकास संस्थाएं एक साथ कार्य करती हैं और जिलाधीश योजना क्रियान्वयन का समन्वय करता है। सामुदायिक विकास खण्ड चौथे स्तर की लघु नियोजन इकाइयां हैं। प्रत्येक सामुदायिक विकास खण्ड के अंतर्गत

टिप्पणी

लगभग 50 गांव होते हैं। ये खण्ड, गांव और परिवार के स्तर पर योजना क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार होते हैं। खंड विकास अधिकारी नियोजन के इस स्तर पर योजना का समन्वयक होता है। स्थानीय क्षेत्र नियोजन छोटे इलाके जैसे गांव, बस्ती या मोहल्ले के लिए होता है। एक स्थान पर निवास कर रहा और काम कर रहा समस्त समुदाय, योजनाओं को बनाने और सरकारी संगठनों, गैर–सरकारी संगठनों व अन्य से सहायता तथा सहयोग पाने के लिए जिम्मेदार होता है। यह प्रयास सिर्फ कुछ लोगों का नहीं होता है बल्कि बहुत से व्यक्तियों की मेहनत होती है जो स्थानीय क्षेत्र को स्वच्छ, हरित और समृद्धशाली बनाती है।

नियोजन के भिन्न स्तरों का चित्रीय प्रस्तुतीकरण नीचे दिया गया है:

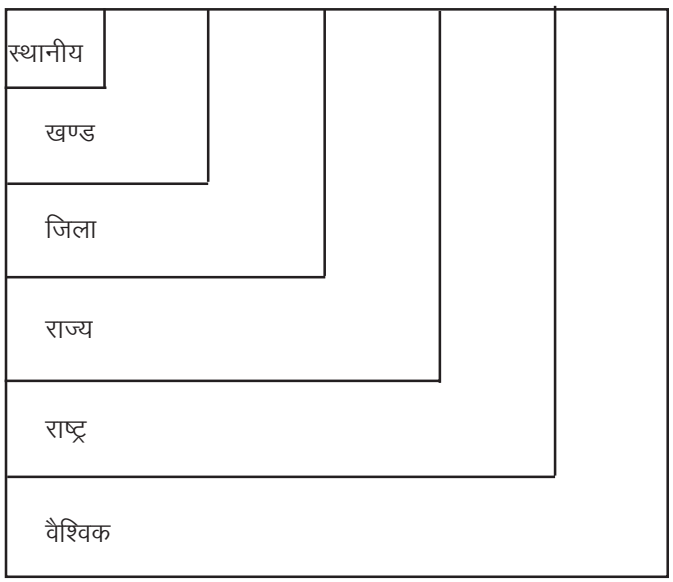

चित्र 30.2 नियोजन के स्तर

तालिका क. 30.1 नियोजन के स्तर

नियोजन का प्रकार	स्तर
वैश्विक नियोजन	I
राष्ट्रीय नियोजन	II
राज्य नियोजन	III
जिला नियोजन	IV
ब्लाक या लघु स्तरीय नियोजन	V
स्थानीय क्षेत्र नियोजन	VI

टिप्पणी

30.3 नियोजन की चुनौतियां

किसी कार्यक्रम के नियोजन की सफलता के लिए गम्भीर चुनौतियां होती है। अक्सर नियोजन शुरू कर दिया जाता है और क्षेत्र व लोगों, जिनके लिये योजना बनाई है, पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में यथोचित विचार नहीं किया जाता है। नियोजन क्योंकि ऊपर से नीचे की ओर जाता है, तो यह जिन क्षेत्रों और लोगों के लिए बनाया जाता है उन तक पहुँचने से पहले विभिन्न स्तरों पर अवरुद्ध हो जाता है। तुलनात्मक रूप से उच्च आर्थिक विकास के बावजूद भारत सामाजिक प्रगति के मामले में निरन्तर पीछे चल रहा है। हमारे देश में निर्धन, कुपोषित और निरक्षर व्यक्तियों का अधिकतम संकेन्द्रण है। इन गम्भीर चुनौतियों को सरकारी या कुछ गैर–सरकारी एजेन्सी स्तर के जरिए नहीं संचालित किया जा सकता है, इसके लिए स्थानीय लोगों की प्रभावपूर्ण सहभागिता और सहयोग की जरूरत है। लोग चाहते हैं और योजना बनाते हैं कि सड़क उनके घर के दरवाजे तक पहुँचे, प्रत्येक बच्चा स्कूल में पढ़े, उनके पास ऊर्जा और सुरक्षित पेयजल हो, उनके पास खेतों की सिंचाई के लिए जल हो और अपने स्थानीय उत्पादों को बेचने के लिए बाजार हो। अतः स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ा आधारिक ढांचा लोगों को जागरूकता, उनकी प्रभावपूर्ण सहभागिता और उनकी सक्रियता सुनिश्चित कर सकता है, जो कि कार्यक्रम के नियोजन की सफलता के लिए आवश्यक है। यदि नियोजन को सफल करना है और उसे बनाए रखना है तो पारिस्थितिक और आर्थिक पहलुओं में पूर्ण सन्तुलन होना चाहिए।

स्थानीय क्षेत्र नियोजन की मूलभूत आवश्यकताएं निम्नलिखित हैं :

1. उद्देश्यों या लक्ष्यों को सुव्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करना।
2. नियोजन के लक्ष्य और प्राथमिकताएं जिन्हें प्राप्त करना है को निर्धारित करना।
3. योजना को कार्यान्वित करने के लिए संसाधनों का संग्रह करना।
4. योजना के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सामाजिक समूह या संगठन सृजित करना।
5. की गई प्रगति का नियमित मूल्यांकन और जांच–पड़ताल करना।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. स्थानीय क्षेत्र और नियोजन की परिभाषा दीजिए।

_____

2. भारत में नियोजन के विभिन्न स्तर कौन से हैं?

_____

टिप्पणी

3. किसी क्षेत्र के नियोजन के लिए तीन चुनौतियां बताइए।

_____

4. नियोजन से लोगों की मूलभूत अपेक्षाएं क्या हैं?

_____

5. नियोजन की मूलभूत आवश्यकताएं क्या हैं?

_____

30.4 नियोजन का आधार

नियोजन के कई आधार हो सकते हैं परन्तु यहां हम नियोजन के सिर्फ पारिस्थितिक और सामाजिक–आर्थिक आधार की चर्चा कर रहे हैं।

(क) नियोजन का पारिस्थितिक आधार

समस्त प्राकृतिक जीवों का उनके वातावरण के साथ अंतर्सम्बन्ध वर्णन करने वाला शास्त्र पारिस्थितिक विज्ञान कहलाता है। वो सब स्थितियां, परिस्थितियां और प्रभाव जो किसी एक जीव या जीवों के समूह के विकास को प्रभावित करती हैं पर्यावरण कहलाती है। अतः पारिस्थतिकी और पर्यावरण, जीवों और व्यवस्थाओं जो उन पर असर डालती है, के सन्दर्भ में, एक दूसरे के साथ घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। भौगोलिक रूप से, भूमि और समुद्र के बीच पदार्थ का विनिमय दो मुख्य भौतिक–भौगोलिक प्रक्रियाओं द्वारा प्रारम्भ होता है।

मनुष्य और प्रकृति के बीच अंतर्क्रिया अपृथकनीय है। यह सामान्य रूप से जीवन और विशेषतया पर्यावरण के बीच अंतर्क्रिया का उच्चतम स्वरूप है। करोड़ों वर्षों से अधिक समय में विकसित हुए जीवन के रूपों की विविधता और उनकी भिन्न, अक्सर विषम पर्यावरण सम्बन्धी स्थितियों से सामंजस्य आश्चर्यजनक है। मनुष्य का प्रकृति के साथ सामंजस्य उस समय प्रारम्भ हुआ जब उसने अपने को प्राकृतिक पर्यावरण से पृथक कर लिया था। मनुष्य और प्रकृति के बीच सम्बन्ध उसके आवास के भीतर गढ़े जाते हैं।

मनुष्य–प्रकृति अंतर्क्रिया का अनुभव नियोजन की सदियों पुरानी परिपाटी है। प्रकृति का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए, मनुष्य पारिस्थितिक व्यवस्था में आवश्यक समायोजन करता आ रहा है। पारिस्थितिक व्यवस्था को संतुलन में रखते हुए, लोगों के कल्याण के लिए नियोजन के कुछ उदाहरण हैं—जंगली पशुओं को पालतू बनाना, प्राकृतिक वनस्पति से लाभकारी पौधों को चुनना, पर्वतीय ढलानों को सीढ़ीदार बनाना, सिंचाई के लिए नदियों को वश में करना या बाढ़ नियंत्रण इत्यादि। मानवीय निवास स्थान जल स्रोतों के, कार्यस्थलों के बहुत निकट सान्निध्य में और सुरक्षा तथा गतिशीलता को

टिप्पणी

विचार में रखते हुए योजनाबद्ध किए गए थे। अधिकांश प्राथमिक धन्धे जैसे कृषि, बागवानी, रेशम उत्पादन इत्यादि उत्पादकता के स्वाभाविक विचार पर आधारित हैं। इसी तरह से, कुछ गौण उत्पादन तन्त्र जैसे सॉफ्टवेयर, कागज, कई स्वच्छंद उद्योग इत्यादि की रूपरेखा भी इस तरह से बनाई गई कि वो पारिस्थितिक व्यवस्था में न्यूनतम बाधा उत्पन्न करे। तथापि, मानव की बढ़ती हुई जरुरतों और वाणिज्य का ध्यान रखने से पारिस्थितिक व्यवस्था को गम्भीर क्षति पहुँची है। बड़े पैमाने पर विकासात्मक गतिविधियां, वनोन्मूलन, संरचनात्मक परिवर्तन, अवशेष सृजन, आदि ने रिक्तीकरण, भू–मण्डलीय उष्मा, हिमक्षेत्रों का पिघलना, समुद्री स्तर में बढ़ोत्तरी, प्राकृतिक आपदाओं इत्यादि की गति तेज कर दी है।

(ख) नियोजन का सामाजिक-आर्थिक आधार

पृथ्वी की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है और 6 अरब के बिन्दु से ऊपर हो गई है। लोगों की हमेशा बढ़ती हुई जरूरतों को पूरा करने के लिए, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बढ़ेगा। इसलिए, एक निश्चित पारिस्थितिक व्यवस्था में संसाधन उपयोग के दायरे और मानव की जरूरतों के बीच साम्य बनाए रखना आवश्यक है। सतत् पोषणीय विकास के लिए सामाजिक–आर्थिक नियोजन को पारिमित्र बनाए रखना है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के अलावा, स्थानीय परिवेश, गलियों, नालियों, पार्क, खेल के मैदान, खुली जगह इत्यादि को भू–दृश्यों और वृक्षारोपण के साथ विकसित करने के दीर्घीकृत प्रयत्न करने की जरूरत है। वृक्षारोपण की रूपरेखा; भू–विज्ञान सम्बन्धी ढांचे, भू–आकृति, जलवायु सम्बन्धी स्थितियां, मृदा, जल निकास प्रणाली और प्राकृतिक वनस्पति के आधार पर बनानी चाहिए। बौने, मध्यम और बड़े वृक्षों की देशी किस्मों का रोपण उपलब्ध जगह, पौधों की स्थितियों, स्थानीय मौसम और जलवायु सम्बन्धी स्थितियों के आधार पर करना चाहिए। स्थानीय पर्यावरण को प्रौन्नत और बनाए रखने के लिए, लोगों की मदद अनिवार्य है। बदले में स्वास्थ्यपूर्ण स्थानीय पारिस्थितिकीय व्यवस्था स्थानीय लोगों की बहुत सी जरूरतों को पूरा करती है और साथ ही हरित परिवेश का सुखद दृश्य प्रस्तुत करती है।

30.5 स्थानीय क्षेत्र नियोजन के आयाम

(क) मूलभूत और उच्चतर आवश्यकताएँ

''स्थानीय'' समुदाय का कल्याण लोगों की मूलभूत और साथ ही उच्चतर आवश्यकताओं को पूरा करने पर निर्भर करता है। मूलभूत आवश्यकताओं में सुरक्षित पेय जल, बेसिक शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल, परिवहन और संचार सुविधाओं इत्यादि के अलावा खाद्य पदार्थ, कपड़ा और मकान शामिल हैं। उच्चतर जरूरतों में अभी और ज्यादा उच्च क्रम के सुख–साधन, सेवाएं और सुविधाएं इत्यादि शामिल हैं। उच्चतर जरूरतें समाज को कुशल, सेवा–अभिमुख और गतिशील बनने में मदद करती हैं। जबकि मूलभूत जरूरतें जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं, नियोजन की प्रक्रिया का उद्देश्य लोगों और स्थानों की मांगों को पूरा करना है। नियोजन की कई योजनाओं को लोगों की सामान्य और

टिप्पणी

साथ ही प्रकार्यात्मक जरुरतों को पूरा करने के लिए बनाया जाता है। तथापि, जनसंख्या वृद्धि और गतिविधियों का विशिष्ट स्थलों पर केन्द्रीयकरण नियोजन प्रक्रिया के लिए चुनौती पेश करता है।

(ख) जनसंख्या वृद्धि और भावी नियोजन

जिन स्थानों पर जनसंख्या वृद्धि सामान्य रहती हैं, वहां प्रकार्यात्मक गतिविधियां सामान्यतः अपरिवर्तित रहती हैं और नियोजन की योजना सफल हो जाती है। उदाहरण के लिए, सिविल लाइन्स, माल रोड, छावनी बस्तियां इत्यादि स्थानीय जनसंख्या की वृद्धि के साथ सुख–साधनों और सुविधाओं के समान और प्रकार्यों तथा गतिविधियों के केन्द्रीयकरण के बीच असाधारण सन्तुलन पेश करते हैं। इसके विपरीत, उन स्थानीय क्षेत्रों में, जहां जनसंख्या में वृद्धि ज्यादा है और गतिविधियों का केन्द्रीयकरण अबाधित जारी रहता है, नियोजन का सम्पादन सामान्यतः बुरा रहता है। उदाहरणार्थ, व्यस्त बाजार, औद्योगिक स्थल, परिवहन जंक्शन, झुग्गी–झोपड़ी की बस्तियां इत्यादि तुलनात्मक रूप से जनसंख्या में ज्यादा वृद्धि और गतिविधियों का ज्यादा केन्द्रीयकरण प्रकट करते हैं। यह संकुलन और भीड़–भाड़ को बढ़ावा देता है जो कि नियोजन की असफलता को प्रतिबिम्बित करता है।

ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार अवसरों की अनुपस्थिति में, अधिकांश ग्रामीण युवा शहरों की ओर जाने लगते हैं। यह मूल स्थानों में आर्थिक स्थिति को और कमजोर और गंतव्य स्थानों में जनसंख्या के केन्द्रीयकरण को बढ़ावा देता है। प्रवासी जनसंख्या की सीमित देय क्षमता के कारण ये समूह में इकट्ठे रहते हैं, परन्तु शहरों में ये पर्याप्त सस्ता श्रम उपलब्ध कराते हैं। जनसंख्या वृद्धि और सेवाओं, सुविधाओं और सुख–साधनों के बीच असंतुलन से गंदगी, सार्वजनिक स्वास्थ्य में कमी और सबसे अधिक, स्थानीय पर्यावरण प्रदूषित होता है। अतः, नियोजन की व्यवस्था इन क्षेत्रों में बढ़ती हुई स्थानीय मांगों को पूरा नहीं कर पाती।

(ग) स्थायित्व और विकास के लिए आर्थिक आधार

किसी क्षेत्र का आर्थिक विकास स्थानीय क्षेत्र नियोजन का दूसरा आयाम है। इसका लक्ष्य उत्पादन व सेवाओं के स्तर को बढ़ाना, रोजगार सृजन, संशोधित बाजार तंत्र, अनुकूल मूल्य/कीमत नीति, परिवहन और सम्प्रेषण की दक्ष प्रणालियां, इत्यादि हैं। आर्थिक रूप से, उन्नत क्षेत्र सामान्यतः प्राकृतिक संरक्षण और पारिस्थितिक सुधारों में काफी विनियोग करने में सक्षम होते हैं। इसी तरह, यदि क्षेत्रों का आर्थिक आधार अच्छा है तो सामाजिक आधारिक ढांचा और सुविधाएं भी सृजित की जा सकती हैं।

लगभग सभी क्षेत्र–ग्रामीण और शहरी, प्राकृतिक सामर्थ्य/अंतःशक्ति से सम्पन्न होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक गतिविधियां प्रमुख स्थान रखती हैं जबकि गौण और सेवा–प्रधान गतिविधियां शहरी क्षेत्रों में प्रमुख होती हैं। आर्थिक वृद्धि की गति प्रौद्योगिकीय विकास और संस्थागत तन्त्र के द्वारा तेज हो जाती है। कृषि का यांत्रिकीकरण और

टिप्पणी

उद्योगों का आधुनिकीकरण प्रौद्योगिकीय विकास के उदाहरण हैं, जबकि वित्तीय, शैक्षणिक और नीति सम्बन्धी सहायता, क्षेत्र का आर्थिक आधार सुधारने के लिए संस्थागत भूमिकाएँ हैं। उत्पादकों, उपभोक्ताओं, सेवा प्रदान कर्ताओं और कर्मचारियों के हितों जैसे मुद्दों का, नियोजन में ध्यान रखना चाहिए। आर्थिक पैकेज के स्वाभाविक परिणास्वरूप रोजगान सृजन और आय का दर्जा, बचत और विनियोग की क्षमताएं बढ़ेंगी। यह देखने में आया है कि बहुत से आर्थिक पैकेज समय के साथ लाभकारी बन जाते हैं। शिलांग का सरकण्डे का कार्य (Reed works), मोरादाबद के पीतल के बर्तन, वाराणसी और कांजीवरम का रेशम व ज़री का काम, और सांगानेर का बंधनी का काम, लखनऊ का कढ़ाई का काम इत्यादि सफल कहानियों के कुछ उदाहरण हैं जिनको आर्थिक नियोजन की सहायता मिल गई थी। अतः, स्थानीय क्षेत्र के उत्पाद और सेवाएं उस स्थान की पहचान और लोगों की आर्थिक समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं।

(घ) नियोजन में लोगों की सहभागिता

लोगों की जागरूकता और स्थानीय क्षेत्र नियोजन में उनकी सहभागिता समुदाय के हितों की सुरक्षा कर सकती हैं और साथ ही स्थानीय पारिस्थितिकीय सन्तुलन भी बनाए रखती हैं। जिस नियोजन योजना में स्थानीय लोग जुड़े होते हैं, उसकी असफलता के अवसर न्यूनतम होते हैं क्योंकि भ्रष्टाचार, शोषण और कु–प्रबन्ध काफी समय तक रूक जाता है। इसके अलावा, उपरोक्त लोग क्योंकि सीधे लाभार्थी होते है, तो वो क्षेत्रीय विकास और सामाजिक कल्याण बनाए रखने के प्रति जिम्मेदार रवैया रखते हैं। जब स्थानीय लोग योजना तैयार करते हैं और अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित करते हैं तो यह लोगों के लाभ को अधिकतम और नियोजन की लागत को न्यूनतम रखते हैं। यह ज्यादा सम्भव है कि नियोजन विकासात्मक गतिविधियों में वृद्धि के चक्र और विविधताओं को बढ़ाएगा।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. पारिस्थितिकी अनुकूल नियोजन के दो उदाहरण दीजिए।

   (क) _____ (ख) _____

2. संसाधनों और मानवीय आवश्यकताओं के बीच सन्तुलन बनाए रखने की क्या आवश्यकता है?

   _____

3. स्थानीय क्षेत्र में वृक्षारोपण की रूपरेखा बनाने के लिए क्या आधार अपनाना चाहिए?

   _____

टिप्पणी

4. मूलभूत और उच्चत्तर आवश्यकताओं के दो–दो उदाहरण दें

   क) i. _____ ii. _____

   ख) i. _____ ii. _____

5. प्रौद्योगिकीय परिवर्तन और संस्थागत सहायता, प्रत्येक के दो प्रभाव बताइए।

   क) i. _____ ii. _____

   ख) i. _____ ii. _____

30.6 स्थानीय संसाधनों का आवश्यकता-आधारित उपयोग

स्थानीय लोगों द्वारा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग किया जाता है। वायु, जल, खाद्य पदार्थ, कपड़ा और मकान मनुष्य के जीवित रहने के लिए अनिवार्य आवश्यकताएं हैं। प्रकृति के जैविक और अ–जैविक पदार्थ स्थानीय लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। उपयोगी पौधों, पशुओं और प्राकृतिक स्थलों के चयन से मानवीय अनुक्रियाओं जैसे कि खेती, मछली पालन, बागवानी और यायावर पशुपालन। स्थानीय आवश्यकताएं जैसे– भवन निर्माण, गलियों, नालियों, जल स्रोतों, सुन्दर भूदृश्य इत्यादि की स्थानीय संसाधनों द्वारा पूर्ति होती है। क्योंकि अधिकांश पदार्थ स्थानीय लोगों की सामूहिक सम्पत्ति होते हैं, वो सभी के द्वारा निर्माण सामग्री और जीवनयापन के साधनों के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं। अतः स्थानीय संसाधनों का आवश्यकता आधारित उपयोग उन्हें पारिस्थितिक अनुकूल और आर्थिक रूप से धारणीय बनाए रखता है। स्थानीय संसाधनों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया है :

(क) भूमि संसाधन : चट्टानें और मृदाएं:

स्थानीय क्षेत्र की सर्वाधिक असा धारण विशेषता उसकी चट्टानें और मृदाएं हैं। यह भूमि संसाधन सुरम्य भू–दृश्य का आधार होने के अलावा मानवीय आवास और प्राथमिक गतिविधियों का आधार हैं। चट्टानों की अनावृत सतह प्राकृतिक मंचों का कार्य करती है जबकि उसकी ढलानें और सोपान पौधों की वृद्धि का आधार बने हुए हैं। ऐसी स्थिति में स्थानों को पिकनिक, उद्यान और प्राकृतिक सौन्दर्य स्थलों के रूप में विकसित किया गया है।

मृदा मानव की विभिन्न गतिविधियों जैसे कि कृषि, पशुपालन और बागवानी इत्यादि के लिए आधार है। उपजाऊ मृदा मानव सभ्यता और विकास के लिए हमेशा से आकर्षण का स्रोत रही है। तथापि, प्रकृति का यह दुर्लभ उपहार अधिक मृदा अपरदन और निम्नीकरण द्वारा जोखिम में पड़ गया है, और तेजी से बंजर भूमि में बदल रहा है। बड़े पैमाने पर वननाशन और भूमि के वाणिज्यिक उपयोगों ने मृदा के ढांचे में असन्तुलन उत्पन्न कर दिया है। क्योंकि मृदा के निर्माण, उसकी नवीकरण योग्यता और पुनःस्थापन को काफी लम्बा समय चाहिए, इसलिए मृदा

टिप्पणी

संरक्षण और उसकी प्राकृतिक उर्वरा शक्ति बनाए रखने की अत्यन्त आवश्यकता है।

(ख) जल संसाधन

जीवन को दीर्घकालीन आधार पर विकसित करने और बल प्रदान करने के लिए एक सर्वाधिक मूलभूत आवश्यकता जल की उपलब्धता है। यह सभी पारिस्थितिक तंत्रों का केन्द्र है। अधिकांश प्रारंभिक मानव सभ्यताएं जल संसाधनों, विशेष रूप से उपजाऊ नदी घाटियों के समीप विकसित हुई हैं। मानवीय अनुक्रियाओं सभ्यताओं और बस्तियों दोनों के लिए जल अनिवार्य तत्व है। जल को विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों जैसे विद्युत उत्पादन, सिंचाई, घरेलू और औद्योगिक उपयोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता है और स्थानीय क्षेत्र को भी स्वच्छ व हरित रखा जाता है।

जल के दुरुपयोग ने जल की कमी उत्पन्न कर दी हैं। जल प्रदूषण से बीमारियाँ हो जाती हैं। भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में सूखा और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसलिए, जल का प्रबन्ध जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। जल संग्रहण, जल के अपव्यय को कम करने और विभिन्न उद्देश्यों के लिए जल के विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए समन्वित प्रयत्न करने की जरूरत है। बरसाती जल के सतही बहाव को रोकने के लिए, जल का, मृदा के अंतः धरातलीय परत तक पुनर्भरण अनिवार्य है। जल के पुनर्भरण में, टैंकों, झीलों, रिसाव गड्ढों, ढलाऊँ सतह के साथ छोटे बांधों का उपयोग मदद करता है।

(ग) बागान/वन संसाधन

पौधे जीवन का मूलभूत आधार हैं और ये ऑक्सीजन के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। वे जीवन निर्वाह और प्राकृतिक आकर्षण का साधन है। जनसंख्या के निरन्तर बढ़ते दबाव के कारण, वन आवरण तेजी से क्षीण हो रहा है जिससे गम्भीर पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो गया है। राजमार्ग, रेलपथ, पहाड़ी ढलानों, नहरों के बगल में वृक्षारोपण ने सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी इत्यादि जैसी योजनाएँ विकसित की है।

स्थानीय लोगों के संगठित प्रयत्न बागानों और उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक है। यह लोगों के रीति–रिवाजों और प्रथाओं के रूप में चला आ रहा है। उदाहरण के लिए, विशेष रूप से हरियाणा और राजस्थान के भागों में विश्नोई समुदाय पौधों की सुरक्षा के लिए प्रसिद्ध है, इसी तरह से मैयती विवाह सम्बन्धी रिवाज है जो कुमाऊँ पहाड़ियों में प्रचलित है। वैवाहिक समारोह के दौरान दुल्हन नए पौधे का रोपण करती है और दूल्हा उस पर पानी डालता है। इस रिवाज ने कुमाऊँ में बहुत से गांवों को हरित बना दिया है। वृक्ष आवरण की सुरक्षा, उनका संवर्धन जीवन के भरण–पोषण की बुनियाद है। क्योंकि वृक्ष भवन सामिग्री, ईंधन और विभिन्न प्रकार के फल, फूल और हरित आवरण प्रदान करते हैं। स्थानीय स्तर पर, वृक्ष आवरण की सुरक्षा और बढ़ोतरी जीवन का भरण–पोषण करने के मूल आधार है।

टिप्पणी

30.7 स्थानीय संसाधनों का मूल्यांकन

स्थानीय संसाधनों का मूल्यांकन नियोजन के लिए अनिवार्य है। स्थानीय समस्याओं के हल खोजने और साथ ही विकास के उद्देश्य के लिए हमें स्थानीय संसाधनों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। सामान्यतः भूमि, मृदा, जल, वन, पशु, अन्य जीव, खनिज इत्यादि किसी एक क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधन होते हैं। इसी तरह से, मानव, उनका शैक्षणिक स्तर, मानवीय अनुक्रियाएँ, कौशल, स्वास्थ्य दर्जा, इत्यादि मानवीय संसाधनों में आते हैं। क्षेत्रीय सर्वेक्षण करके और क्षेत्र के रिकार्ड की मदद से उस स्थान पर उपलब्ध संसाधनों की सूची बनानी चाहिए। उदाहरण के लिए, स्थानीय भूमि संसाधनों के लिए कुल क्षेत्र (गांव के या शहरी इलाके) का अनुमान, चट्टानों और मृदाओं की प्रकृति, भूमि जोतों (कृषि भूमि) का आकार, खण्डों की संख्या, भूमि उपयोग का स्वरूप व प्रकार, इत्यादि के बारे में तथ्य लिखने चाहिए। इसी तरह से, जल संसाधनों के सम्बन्ध में नदी, नाले, तालाब, झील का सर्वेक्षण, उनकी अनुमानित लम्बाई, चौड़ाई और जल की गहराई की जानकारी होनी चाहिए जिससे जल उपलब्धता, जल अतिरेक या कमी की स्थितियों का जल उपभोग से जुड़ी मुख्य समस्याओं का पूर्वानुमान हो सके। वृक्षों, मौसमी पौधों का ईंधन, इमारती लकड़ी, फल और फूलों के रूप में समुदाय के लिए उनके विशिष्ट उपयोग का अनुमान लगाना चाहिए। इसी तरह से, मानवीय और साथ ही पशु संसाधनों का भी मूल्यांकन होना चाहिए।

(क) स्थानीय संसाधनों के मूल्यांकन के लिए आंकड़े एकत्र करने के स्रोत

अतः स्थानीय संसाधनों का मूल्यांकन करने के लिए, हम सरकारी तथा गैर–सरकारी स्त्रोतों का इस्तेमाल कर सकते हैं। द्वितीयक स्त्रोतों के जरिए जानकारी इकट्ठा करने के अलावा, हम कुछ जानकारी जो कि द्वितीयक स्त्रोतों से उपलब्ध नहीं है अथवा प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करने के लिए क्षेत्र का सर्वेक्षण भी कर सकते हैं।

(ख) योजना तैयार करना और उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करना

स्थानीय संसाधनों के मूल्यांकन के आधार पर हमें उनके क्रियान्वयन की रूपरेखा तैयार करना चाहिए। इसमें मोटे तौर पर शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, थोक बाजारों इत्यादि के पहलुओं को शामिल करना चाहिए। योजना को सामुदायिक प्रकार्यों के अलावा, कृषि और औद्योगिक गतिविधियों की संवृद्धि को भी शामिल करना चाहिए। योजना का संरूपण स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता, लोगों की आवश्यकताओं, सम्भावित व्यय और लोगों को अनुमानित लाभ पर आधारित होना चाहिए। योजना को समय और लक्ष्यों के अनुसार क्रमबद्ध रूप से समाप्त कर देना चाहिए।

स्थानीय क्षेत्रीय योजना का क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए, स्थानीय लोगों के समर्थन को, श्रम, कच्चे माल, कौशल और मार्गदर्शन के रूप में जुटाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, सरकारी, गैर–सरकारी संगठनों, स्व सहायता समूहों इत्यादि के समर्थन को वित्त, प्रौद्योगिकी और सामग्री की सहायता के रूप में प्राप्त करना चाहिए। जो काम कर

टिप्पणी

लिया गया हो, उसकी मॉनीटरिंग सुनिश्चित करने के लिए प्रभावपूर्ण जांच और नियंत्रण प्रयोग में लाना चाहिए।

यह अक्सर देखा जाता है कि इमारतों, नलों का पानी, सार्वजनिक शौचालयों इत्यादि सेवाओं के दुरुपयोग और देखभाल के अभाव में वह ढांचा, जो नियोजन द्वारा एक बार सृजित कर दिया गया, उसका रख–रखाव खराब बना रहता है। स्थानीय संसाधनों को गैर–स्थानीय लोगों द्वारा व्यापारिक उपयोग के लिए खुला नहीं छोड़ देना चाहिए, क्योंकि इससे संसाधनों के अत्यधिक दोहन और उसके अंततः समाप्त हो जाने की संभावना उत्पन्न हो जाती हैं। अतः, यह स्थानीय लोगों के लिए आवश्यक है कि वो नियोजित परियोजनाओं के रख–रखाव और देखभाल के बारे में विशेष ध्यान रखें।

अतः यह सिद्ध हो चुका है कि स्थानीय संसाधनों का आवश्यकता–आधारित उपयोग समुदाय के बने रहने और विकास के लिए अनिवार्य है। तथापि, पारिस्थितिक स्थितियों और समुदाय की सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं के बीच सन्तुलन बनाए रखने की जरूरत होती है। नियोजन की प्रक्रियाएँ, पारिस्थितिक व्यवस्थापन और स्थानीय लोगों की सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं के साथ, परिवर्तित होगी।

30.8 विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में विकास

भारत अपनी अर्थव्यवस्था, समाज और क्षेत्रों का विकास करने के लिए योजनाबद्ध प्रयत्न कर रहा है। योजनाएं पांच वर्षों की अवधि के लिए बनाई जाती है। भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951 में प्रारम्भ हुई और इस समय दसवीं पंचवर्षीय योजना चालू है। अब तक जो प्रगति हुई है वो भारत में 55 वर्षों के योजनाबद्ध प्रयत्न का रिकार्ड है जो दस पंचवर्षीय योजनाओं और कुछ वार्षिक योजनाओं के जरिये पूरा किया गया है। विभिन्न योजनाओं का संक्षिप्त परिचय, उनकी स्थानीय क्षेत्र रूपरेखा और विकास पर विशेष जोर नीचे दी गई तालिका के जरिए बताया गया है।

तालिका कं. 30.2
विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान स्थानीय क्षेत्र विकास

योजना और उसकी अवधि	स्थानीय क्षेत्र की रूपरेखा	विकास पर विशेष बल
1. प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951 - 1956	सामुदायिक विकास खण्डों की पहचान की गई	सिंचाई तंत्रों का विकास और कृषि उत्पादन में वृद्धि
2. द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1956 - 1961	औद्योगिक सम्पदाएँ स्थापित की गई थी।	औद्योगिक विकास में आत्म–निर्भरता
3. तृतीय पंचवर्षीय योजना 1961 - 1974	गहन कृषि सम्बन्धी जिला कार्यक्रम (IADP)	अर्थव्यवस्था के कृषि और औद्योगिक दोनों क्षेत्रों में उत्पादन के ज्यादा उच्च स्तरों की प्राप्ति

टिप्पणी

4. चौथी पंचवर्षीय योजना 1969 - 1974	संतुलित क्षेत्रीय विकास (BRD), आलाकमान समीय विकास कार्यक्रम (CADP)	लक्ष्य क्षेत्र, लक्ष्यसमूह
5. पांचवी पंचवर्षीय योजना 1971 - 1979	विकेन्द्रित नियोजन, जन जातीय क्षेत्र, पहाड़ी क्षेत्र, सूखा प्रवृत क्षेत्र विकास कार्यक्रम।	राष्ट्रीय न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम
6. छठी पंचवर्षीय योजना 1980 - 1985	बहु–क्षेत्रीय अभिगम, ड्वाकरा ट्राइसेम, आर.एल.जी.पी. पिछड़े जिले।	गरीबी उन्मूलन, छोटे किसानों का विकास, सीमावर्ती क्षेत्र,
7. सांतवीं पंचवर्षीय योजना 1985 - 1990	कृषि जलवायविक क्षेत्र जलसंभर विकास	स्वरोजगार योजना, जवाहर रोजगार योजना
8. आठवीं पंचवर्षीय योजना 1992 - 1997	पंचायतीराज संस्थाएं, एच.ए.डी.पी., बी.ए.डी.पी., डब्लु.जी.डी.पी., एन.इ.सी.	मानव संसाधन विकास, आर्थिक विविधीकरण
9. नौवीं पंचवर्षीय योजना 1997 - 2002	मूलभूत न्यूनतम सेवाएं	मानव संसाधन विकास, लोगों के लिए आवास तथा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिक्षा
10. दसवीं पंचवर्षीय योजना 2002 - 2007	मुख्य नदियों की सफाई, वर्षा जल संभरण (पारम्परिक तरीकों का नवीकरण) नदियों के जल का एक–दूसरे से जोड़ना, सूखे क्षेत्रों में जल पुनःभरण।	सार्वजनिक वितरण प्रणाली, सम्पूर्ण साक्षरता अभियान, ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुख–साधनों की व्यवस्था, सबके के लिए स्वास्थ्य।

पाठगत प्रश्न 30.3

1. क्षेत्रीय नियोजन में स्थानीय लोगों की क्या भूमिका है?

   _____

2. प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में विशेष बल किन विकास कार्यों पर दिया गया था?

   _____

3. दसवीं पंचवर्षीय योजना के क्या उद्देश्य हैं?

   _____

4. स्तम्भ-I में दर्शाई योजनाओं और II में सुझाए स्थानीय क्षेत्र नियोजन को आपस

टिप्पणी

में मिलाइए :

स्तम्भ-I **योजना**		**स्तम्भ-II** **सुझाया गया स्थानीय क्षेत्र नियोजन**
क)	द्वितीय पंच वर्षीय योजना	1) संतुलित क्षेत्रीय विकास
ख)	चौथी पंच वर्षीय योजना	2) औद्योगिक विकास में आत्म निर्भरता के लिए औद्योगिक सम्पदाएँ
ग)	पांचवी पंच वर्षीय योजना	3) निर्धनता उन्मूलन, ड्वाकरा, ट्राइसम, आरएलइजीपी
घ)	छठी पंच वर्षीय योजना	4) मुख्य नदियों की सफाई, सम्पूर्ण साक्षरता अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता अभियान, ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुख साधन की व्यवस्था, वर्षा जल संभरण।
ङ)	दसवीं पंच वर्षीय योजना	5) समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम

30.9 विभिन्न नियोजन क्षेत्रों की अपनी-अपनी आवश्यकताएं

प्रकृति ने सभी क्षेत्रों को कुछ संसाधन प्रदान किए हैं जो क्षेत्र का विकास करने में मदद कर सकते हैं। विभिन्न क्षेत्रों की अपनी भिन्न–भिन्न समस्याएं और सामर्थ्य शक्तियां हैं। अतः यह नियोजन की बेजोड़ आवश्यकताएं प्रस्तुत करती है। परन्तु प्रत्येक क्षेत्र जिसकी समस्याएं हैं, उसके पास ऐसी समस्याओं को हल करने की संभावनाएँ भी होती हैं। उसी हैसियत से, विशिष्ट क्षेत्रों के विकास और लोगों के कल्याण के लिए विशिष्ट योजनाएं बनाने की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए, खानों के क्षेत्रों में खनिज की परतें होती हैं। परन्तु मोटे तौर पर, इन क्षेत्रों को स्वास्थ्य और प्राकृतिक विपदाओं, ध्वनि प्रदूषण, खान की छतों के गिर जाने और जलाक्रान्ति इत्यादि की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खनन क्षेत्रों की समस्याओं पर नियोजन के लिए विशेष तौर से विचार किया जा सकता हैं।

शहर में झुग्गी–झोपड़ी बस्ती को सामान्यतः गंदगी, अपर्याप्त आवास तथा मूलभूत सामाजिक सुविधाओं और सुख–साधनों की तीव्र कमी का सामना करना पड़ता है। यहाँ जीवन की गुणवत्ता बहुत खराब होती है और स्वास्थ्य संकटों से भरी होती है। इसलिए स्थानीय क्षेत्र नियोजन में अनिवार्य आधारभूत ढांचे का प्रावधान होना चाहिए।

औद्योगिक क्षेत्रों को प्रदूषण की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जबकि बाजार क्षेत्र संकुलन, भीड़–भाड़ और, गंदगी से घिरे हैं। फलस्वरूप, औद्योगिक क्षेत्रों के नियोजन में प्रदूषण नियंत्रण की प्राथमिकता होगी, जबकि बाजार क्षेत्रों की प्राथमिकता क्रय–विक्रय के अन्य केन्द्र विकसित करने की होगी ताकि वे दबाव से निर्मुक्त हो सकें और संतुलन व भीड़–भाड़ कम कर सकें। कृषि क्षेत्रों में बाढ़ व सूखे, मृदा अपरदन, प्राकृतिक उर्वरा का कम होते जाना और भूमि–मनुष्य अनुपात के कम होने की समस्याएं हैं, जबकि चारागाही क्षेत्रों में परास भूमि प्रबन्ध, घास भूमियों का खेतों में परिर्वतन इत्यादि की समस्याएं होती हैं। फसलों के प्रारूप में विविधिकरण फसल उत्पादन क्षमता

और बढ़ती हुई कृषि उत्पादकता कृषि नियोजन की प्राथमिकताएं हैं। जबकि पशुचारण क्षेत्रों में नियंत्रित चराई और प्रभावपूर्ण परास भूमि–प्रबन्ध और व्यापारिक पशुचारण की नियोजन प्राथमिकताएं होती है।

विविध भौतिक व सामाजिक–आर्थिक तंत्र वाले क्षेत्रों की अपनी अनूठी आवश्यकताएं होती है। यह आवश्यकता आधारित नियोजन समाधानों की मांग करती है। उदाहरण के लिए, पहाड़ी क्षेत्रों में अतिप्रवण ढलानें, गहन घाटियाँ, मृदा की पतली परत और भूमि की तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर की वहन क्षमता होती है। इसलिए, पहाड़ी क्षेत्रों को अपने विकास के लिए वृक्षारोपण, बागवानी की प्रौन्नति, हर्बल और औषधियुक्त पौधे, पारिस्थितिक पर्यटन और छोटी जलविद्युत परियोजनाओं की आवश्यकता है। इसी प्रकार से मरुस्थलीय भूमि क्षेत्रों की विशेषता पानी की अत्यधिक कमी के कारण बहुत बड़े क्षेत्र का अनुत्पादक होना, बालू के टीले और ऊसर भूमि होती है। मरुस्थल में विकास के लिए पानी की व्यवस्था नियोजन की सर्वोच्च प्राथमिकता रहती है। भारत के थार क्षेत्र में इन्दिरा गांधी नहर मरुस्थलीय विकास के लिए आवश्यकता आधारित नियोजन का उद्देश्य पूरा करती है।

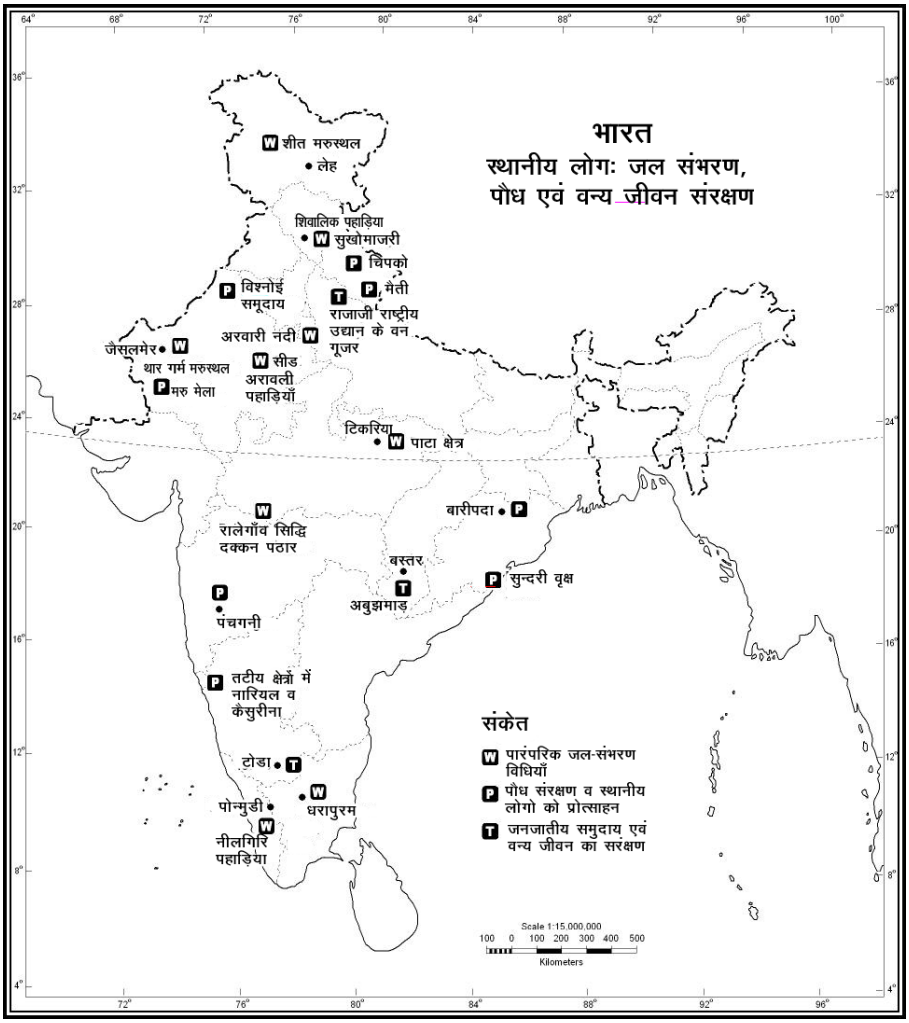

चित्र 30.3: भारत : स्थानीय लोग : जल संभरण, पौधे और वन्य जीवन सुरक्षा

टिप्पणी

आवश्यकता आधारित नियोजन पर संक्षिप्त चर्चा नीचे दी गई है :

(क) जल संग्रहण और प्रबन्ध

ये क्षेत्र जल का वैज्ञानिक और विवेकपूर्ण उपयोग प्रदर्शित करते हैं, लेह के दूरस्थ ठण्डे रेगिस्तान से थार के गर्म रेगिस्तान तक; मध्य भारत के पाथा क्षेत्र से केरल और तमिलनाडु के दूरस्थ स्थानों तक, जल प्रबन्ध की तकनीकों ने इन क्षेत्रों में जीवन और भू–दृश्य को बिल्कुल बदल दिया है। (राजस्थान में अरवारी और मध्य भारत के पाथा क्षेत्र में टिकरिया के हाल ही के उदाहरण क्षेत्र के जल संसाधनों का संचालन करने के लिए स्थानीय लोगों की पहल है)। भारत के प्रत्येक भाग में, पारम्परिक जल संग्रहण और प्रबन्ध की विधियां भी पाई जाती है।

(ख) वनों की सुरक्षा और प्रौन्नति

इलाके में पारिस्थितिक और जैवीय सन्तुलन बनाए रखने के लिए पौधों और पशुओं की सुरक्षा व प्रौन्नति की जरूरत है। लोग पौधों और पशुओं की सुरक्षा आंशिक रूप से धर्म की वजह से और आंशिक रूप से प्रचलित प्रथाओं और परम्पराओं की वजह से कर रहे हैं। यह समुदाय के दीर्घकालिक हित में प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के उदाहरण हैं।

> पीपल, नीम, तुलसी, बेरी जैसे पौधे हिन्दू परम्परा में पवित्र हैं जबकि खजूर, शाहबलूत, ओक, बरगद इस्लामी, ईसाई और बौद्ध परम्परा में क्रमशः पवित्र समझे जाते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में पारिस्थितिक स्थितियों के आधार पर, पौधों की सुरक्षा की जाती है। जैसे कि समुद्र तटीय क्षेत्रों में नारियल और केसुरिना, रेगिस्तानी क्षेत्रों में खजूर और बेरी और पहाड़ी क्षेत्रों में फलोद्यान प्रौन्नति और सुरक्षा के लिए क्षेत्रीय प्रथाएं हैं। इससे मिलती–जुलती परम्पराएँ पवित्र पशुओं जैसे—गाय, बकरी और भेड़, ऊँट, सांप इत्यादि की सुरक्षा करने की भी है।

(ग) जनजातीय समुदाय और वन्य जीवन की सुरक्षा

जनजातीय समुदाय और वन्य जीव दोनों को वृक्षोन्मूलन के सम्मुख विकास और उत्तरजीविता की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। वन निवासियों ने वन्य जीवन की सुरक्षा की है। उदाहरण के लिए राजाजी नेशनल पार्क (उत्तरांखड) के बन गुज्जर लोग, बस्तर के अबुझमाड़ लोग और नीलगिरि के टोडा लोग वन्य जीवन संरक्षण में अपने कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं। तथापि, इन वन निवासियों में से कुछ को अब बेदखल कर दिया गया है और उनका पुनर्वास उन क्षेत्रों में किया गया है, जहाँ वनों तक इनकी कोई पहुँच नहीं है। ऐसा कर्नाटक में नागरहोल नेशनल पार्क में और उत्तराखंड के राजाजी नेशनल पार्क में हुआ है। जनजातीय लोगों का जुड़ाव और उनके वन अधिकारों की रक्षा अब वन्य जीवन रक्षा बेहतर तरीकों के उपयोग के कारण हो रही है।

(घ) लोगों को शक्ति : स्थानीय स्तर पर पर्यावरण प्रबन्ध

स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय प्रबन्ध, लोगों को, उनके प्राकृतिक साधनों का प्रबन्ध करने

के लिए ताकत देता है। विकास और कल्याण की गतिविधियों पर बड़ी धन राशि खर्च करने के पश्चात् भी, भारत पर्यावरणीय प्रबन्ध का मुकाबला अच्छी तरह से नहीं कर पाया। अतः, यह महसूस किया गया है कि स्थानीय कार्यकलापों का संचालन स्थानीय लोगों द्वारा किया जाना चाहिए जिससे कि वो अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का ध्यान रख पाएं। संविधान के 73वें और 74वें संशोधन ने प्रजातन्त्र में विकेन्द्रित नियोजन सम्भव बना दिया है। स्थानीय स्तर के पर्यावरणीय प्रबन्ध के कुछ उदाहरण मानचित्र क्र. 30.4 में दर्शाया गए हैं।

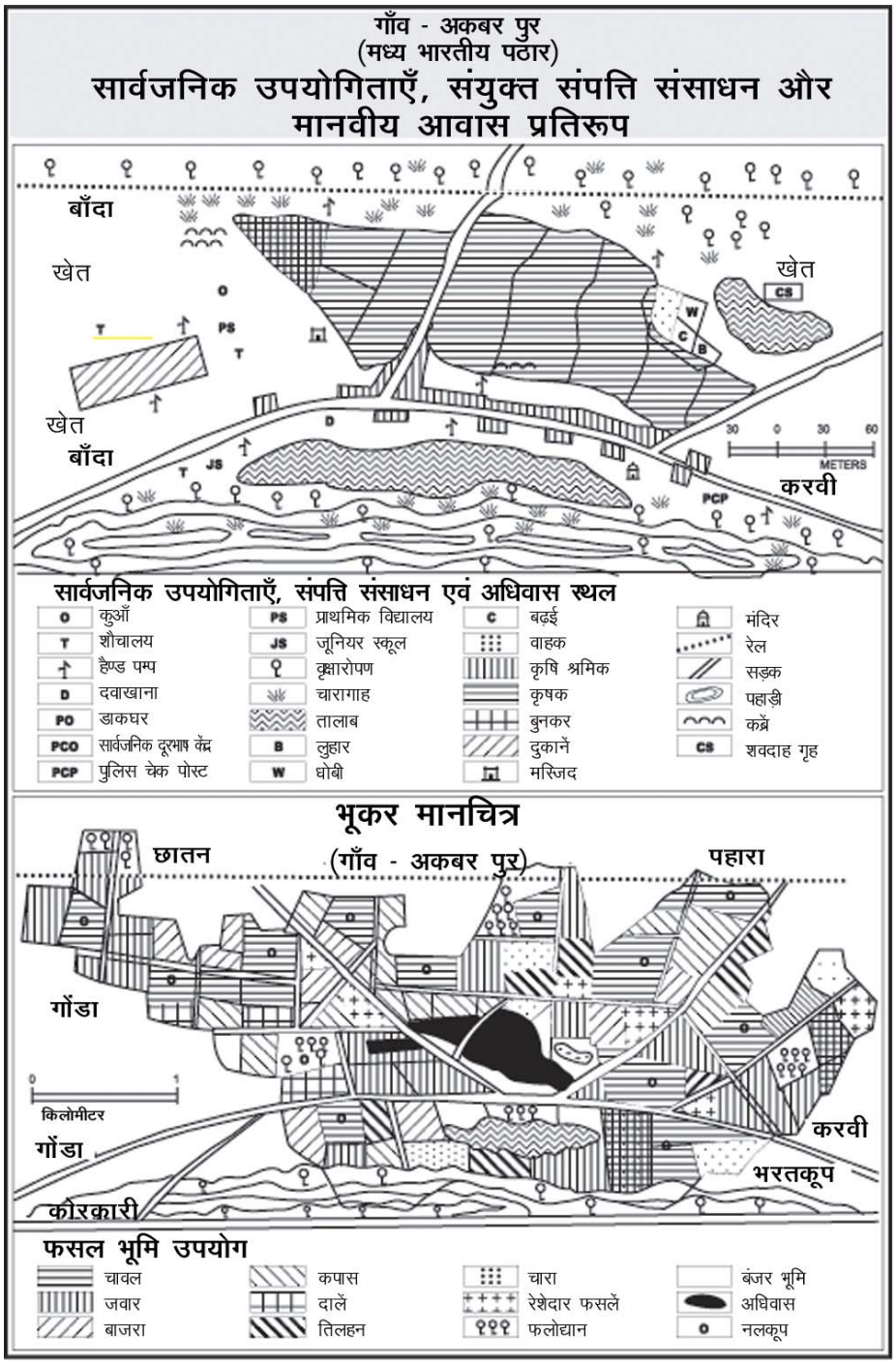

चित्र 30.4 गांव अकबरपुर

टिप्पणी

टैंकों, छोटे बांधों, जल संभरण के लिए छोटे जलाशय, ढलाऊँ पगडंडियों की बगल में बागान और नियंत्रित चारावाही गतिविधियां उन स्थानीय प्रयासों के कुछ उदाहरण हैं जिन्होंने पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार किया है।

30.10 संसाधन उपयोग और अन्तर्संबंध

वे सब पदार्थ और वस्तुएं जो लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध हैं अथवा उपयोग हेतु तैयार हैं, संसाधन कहलाते हैं। संसाधनों का उपयोग एक स्थिति है जिसमें प्रकृति प्रदत्त वस्तु उपयोग की जाती है। संसाधनों का सन्तुलित उपयोग होना चाहिए। संसाधनों को संकट सीमा के परे या बिना प्रतिस्थापन के इस्तेमाल करने से पारिस्थितिक तंत्र में और अन्ततः पर्यावरण में असन्तुलन उत्पन्न होता है। अतः संसाधनों का समझदारी से इस्तेमाल करना अत्यंत आवश्यक है। इससे दीर्घकाल में मानवीय प्रगति में सहायता मिलती है।

(क) संसाधनों के प्रकार एवं उपयोग

संसाधन दो प्रकार के होते हैं : गैर–नवीकरणीय (खनिज सम्पदा) जो एक बार इस्तेमाल होने के बाद समाप्त हो जाते हैं और विश्व में ऐसे संसाधनों की एक निश्चित मात्रा है; और नवीकरणीय संसाधन (नदियों में ताजा जल, वातावरण में ऑक्सीजन, वन और जैवीय समूह), जो पृथ्वी पर क्रियाशील प्राकृतिक प्रक्रियाओं से मिलते हैं और वार्षिक वृद्धि और, मनुष्य द्वारा उपयोग किए संसाधन समेत, वार्षिक उपभोग के बीच संतुलित हो जाते हैं। आइए देखें किस प्रकार पर्यावरण मनुष्य को प्रभावित करता है और बदले में समाज प्रकृति पर क्या असर डालता है। आज ऐसी जगह मुश्किल से कोई होगी जहां मानव नहीं रह सकता या काम न कर सकता होगा। मानवीय हस्तक्षेप का प्रभाव प्रकृति में बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए, खनिज सम्पदा का दोहन करने, ईंधन जलाने, या शुष्क ऊसर भूमि में फसलों की सिंचाई करने के समय, हम प्रकृति से कुछ पदार्थ प्राप्त कर लेते हैं। इसी तरह, औद्योगिक और कृषि अवशेषों और अन्य ऐसे गौण उत्पादों को वायुमंडल और जलमंडल में डालकर, हम पर्यावरण में नए घटक पैदा करते हैं। दलदल भूमि पर खेती करने या परिवारों और औद्योगिक जरूरत के लिए पाइप द्वारा जल की आपूर्ति करने से, हम जल सन्तुलन के कुछ तत्वों को परिवर्तित कर देते हैं। पर्वतों और घाटी के क्षेत्र जैसे दुर्बल पारिस्थितिक तंत्र, वृक्षों को काट गिराने, सड़क निर्माण, चट्टानों को बारुद से उड़ाने और विशाल बांध परियोजनाएं द्वारा जोखिम में पड़ गए हैं। ये गतिविधियां, पृथ्वी की संरचना में परिवर्तन और पारिस्थितिक व्यवस्था में असन्तुलन के लिए जिम्मेदार हैं।

मृदा संसाधनों का फसलों के उत्पादन, व्यापारिक बागान और चारागाहों के लिए उपयोग मनुष्यों द्वारा की जाने वाली पारिस्थितिक अनुकूल गतिविधियां हैं। तथापि, अधिक गहन फसलें लेना या अत्यधिक घास चराई जैसी अवैज्ञानिक परिपाटियों से मृदा अपरदन होने

टिप्पणी

लगता है और यह पारिस्थितिक व्यवस्था के लिए चुनौती बन जाती है। इसी तरह से, वृक्षोन्मूलन, वनों को काटकर कृषि करने के लिए उन्हें जला देना, उद्योगों का प्रदूषण इत्यादि पारिस्थितिक और साथ ही पर्यावरणीय संकट उत्पन्न करते हैं। अतः स्थानीय संसाधनों को और पारिस्थितिक अनुकूल तथा वहनीय ढंग से उनके उपयोग को समझना आवश्यक है, जिसके न करने पर पारिस्थितिक संकट अवश्यंभावी हो जाएगा।

(ख) संसाधनों का अवक्षय

लोगों ने अपनी विभिन्न अनुक्रियाओं द्वारा हमारे दोनों, नवीकरणीय और गैर–नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधनों से काफी कुछ प्राप्त किया है। उनमें से कुछ तो काफी सीमा तक या करीब–करीब पूरे अवक्षयित हो गए हैं और दूसरे बहुत कम सीमा तक अवक्षयित हुए हैं। मानवीय अनुक्रियाएँ इस हद तक बढ़ गई हैं कि इन्होंने पदार्थों की चक्रीय गति के स्थापित प्रतिमान को पलट दिया है, जिससे पृथ्वी की सतह पर विभिन्न प्रक्रियाओं के प्राकृतिक कार्यकलाप प्रभावित हुए हैं।

संसाधनों का अवक्षय, मानवों का प्रकृति पर बढ़ता प्रभाव और सबसे अधिक, पर्यावरण का प्रदूषण बढ़ती हुई चिन्ता के विषय हैं। यह चिन्ता ऊर्जा संकट और बढ़ती हुई खाद्य पदार्थों की कमी द्वारा उजागर होती है। परिणामस्वरूप, बहुत गम्भीर पारिस्थितिक संकट उत्पन्न हो सकता है। परन्तु संकट से बचना सम्भव होगा, यदि स्थानीय स्तर से भू–मण्डलीय स्तर तक संसाधनों को विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने के उपाय किए जाते हैं और संसाधनों का संरक्षण करने की नीति अपनाई जाती है।

(ग) अनुकूलतम संसाधन उपयोग

समाज द्वारा उत्पादन के दौरान पर्यावरण का रूपान्तरण अवश्यंभावी है। न केवल मानव समाज बल्कि वास्तव में किसी भी रूप में जीवन अपनी गतिविधि द्वारा प्रकृति को प्रभावित करता है। पारिस्थितिक वैज्ञानिक अपने विश्वास में अडिग है कि समाज का विकास मानवों पर अनिवार्य रूप से नकारात्मक प्रभाव डालेगा। यह परिणाम संसाधनों के अवक्षय के पारिस्थितिक और साथ ही आर्थिक संकट को और ज्यादा बढ़ा देता है।

स्थानीय क्षेत्र नियोजन के प्रयत्नों का लक्ष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों और वहनीय ढंग से उनके अनुकूलतम उपयोग के बीच सन्तुलन बनाए रखना है, जबकि निजी उद्यम सामाजिक फायदों और हानियों का ख्याल किए बिना लाभ की अभिप्रेरणा द्वारा निर्देशित होते हैं।

यह देखा गया है कि सार्वजनिक क्षेत्र का विकास भी, राजनैतिक या व्यापारिक कारणों द्वारा क्षेत्रों को विकसित करने के प्रति, पूर्वाग्रह से ग्रस्त होते हैं। उदाहरण के लिए, ऐशो आराम की वस्तुओं का व्यापारिक पैमाने पर उत्पादन संसाधनों के समाप्त करने की ओर ले जाता है। इसके परिणामस्वरूप, जन साधारण जीवन के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं के लिए भी कष्ट उठाते हैं क्योंकि दोनों सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के उद्यम, व्यवस्था में, अंतर्निहित कमजोरियों का लाभ उठाते हैं, इसलिए संसाधनों के नियोजन और प्रबन्ध में लोगों की सहभागिता अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

टिप्पणी

संसाधनों का उपयोग उनकी उपलब्धता, विद्यमान कार्यकुशलता और समाज की तत्कालीन व भावी जरूरतों द्वारा निर्देशित होना चाहिए। संसाधन नवीकरण की चक्रीय प्रक्रिया को और विकासक्षम विकल्पों की खोज को ध्यान में रखते हुए संरक्षण परिपाटियों की निरन्तर निगरानी करना संसाधन अवक्षय की चुनौतियों का सामना करने के कुछ उपाय हैं।

पाठगत प्रश्न 30.4

1. किस प्रकार स्थानीय आवश्यकताएं प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न–भिन्न होती है?

   _____

2. किस प्रकार स्थानीय संसाधन स्थानीय क्षेत्र नियोजन के लिए महत्वपूर्ण हैं?

   _____

3. संसाधन अवक्षय क्या है?

   _____

4. अनुकूलतम संसाधन उपयोग क्या है?

   _____

30.11 स्थानीय क्षेत्र नियोजन के प्रबंधन में मानचित्रों का उपयोग

स्थानीय क्षेत्र, जहां लोग रहते हैं और काम करते हैं का ज्ञान अति महत्वपूर्ण होता है। क्षेत्र का सूक्ष्म, सही और विस्तृत ज्ञान, योजना के प्रभावपूर्ण ढंग से संचालन में मदद करता है। स्थानीय क्षेत्र योजना तैयार करने के लिए, भूमि की क्षमता, लोगों की कार्य निपुणता और उनके विचारों की रीति को समझना अनिवार्य है। अर्जित जानकारी को, गतिविधियों का निरीक्षण और मार्गदर्शन पर परिचर्चा और अंतर्क्रिया के लिए किसी प्रदर्शनीय ढंग में हस्तांतरित करना चाहिए। प्राथमिक आंकड़ों, मुद्दों और समस्याओं को व्यवस्थित ढंग से संगठित करना चाहिए जो कि भूमि की विशेषताएं प्रतिबिम्बित करे। इसके लिए मानचित्र, चित्र, चार्ट, फोटोग्राफ और रेखाचित्र बहुत जरुरी है। मानचित्र नियोजकों और भूगोलवेत्ताओं के लिए आशुलिपि का कार्य करते हैं और जनसाधारण का मार्गदर्शन करते हैं।

स्थानीय क्षेत्र उनके भौतिक संगठन और सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के अर्थ में भिन्न होते हैं। सूचनाओं/ज्ञान को एकत्रित व प्रदर्शित करने की विभिन्न तकनीकें हैं। सूचनाओं के प्रस्तुतीकरण के विभिन्न रूपों में से मानचित्र सबसे प्रभावी उपकरण है, जो कि मापक व दिशाओं के उपयोग द्वारा सही व विषय वस्तु केन्द्रित प्रस्तुतीकरण करते हैं। इन सबके अलावा मानचित्र संभालने, समझने व सूचनाओं के संचार में आसान हैं।

टिप्पणी

(क) मानचित्रों, रेखाचित्रों और फोटोग्राफों का उपयोग

मानचित्रों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। उनका उपयोग भू–आकृतियों, संसाधनों, मानव बस्तियों, स्थल–विशिष्ट सुविधाओं और सुख–साधनों की पहचान के लिए किया जाता है। मानचित्रों का उपयोग इमारतों के डिजाइन, परिवहन मार्ग और विभिन्न गतिविधियों जैसे बाजार, उद्योग, स्कूल, पार्क, खेल के मैदान इत्यादि के लिए नियोजन दर्शाने के लिए भी किया जाता है। नियोजन परियोजनाओं का औचित्य और व्यवहार्यता भी उसके नक्शों के जरिये आंकी जाती है। बिना पैमाने, दिशा और प्रक्षेपण के चित्रांकन, रेखाचित्र कहलाता है। रेखाचित्र तथ्यों के स्थल विशेष पर प्रस्तुतिकरण के लिए अनगढ़ चित्रांकन के रूप में और लिपिबद्ध प्रलेख को याद करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। यह रेखाचित्र और फोटोग्राफ स्थानीय क्षेत्र नियोजन के अंतिम खाके को अन्तिम रूप देने के लिए काफी उपयोगी है।

(ख) स्थानीय क्षेत्र नियोजन के लिए मानचित्रों का आकार व पैमाना चुनना

मानचित्र बनाते समय कई कारकों को ध्यान में रखना होता है। इन कारकों में मानचित्रों का आकार, दर्शाए जाने वाले विवरण, पैमाने का चुनाव इत्यादि काफी महत्वपूर्ण हैं। मानचित्र का आकार, जिन तत्वों को समाविष्ट करना है, उनके विस्तार को निर्धारित करता है। जो ब्यौरा दर्शाना है वह प्रत्येक तत्व के लिए प्रतीक–प्रयोग और हल्का या गहरा रंग (शेड) निर्धारित करता है। पैमाने का विकल्प, मानचित्र पर क्षेत्र के तथ्य प्रदर्शित करने के लिए उपलब्ध स्थान द्वारा निर्देशित होता है। पैमाना मानचित्र पर दूरी और धरातल की दूरी के बीच अनुपात है। आवश्यकता के अनुसार मानचित्र छोटे या बड़े पैमाने का हो सकता है। छोटे पैमाने का मानचित्र थोड़े ब्यौरे के साथ बड़ा क्षेत्र दिखाने के लिए उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, विश्व मानचित्र, दीवार मानचित्र, एटलस मानचित्र इत्यादि छोटे पैमाने पर रेखांकित किये जाते हैं। इसके दूसरी ओर, बड़े पैमाने के मानचित्र का उपयोग भवन योजना, कृषि सम्बन्धी खेतों/गांव के इलाकों के भूखण्डों के भौगोलिक विवरण सम्बन्धी शीट इत्यादि की योजना प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। स्थानीय क्षेत्र नियोजन, आपदा प्रबंधन, सार्वजनिक वितरण प्रणालियाँ इत्यादि के लिए बड़े पैमाने के मानचित्रों का उपयोग किया जाता है क्योंकि वो छोटे क्षेत्र की बहुत सी जानकारी विस्तार से प्रस्तुत करते हैं।

(ग) स्थानीय क्षेत्र नियोजन के प्रबंधन में मानचित्र

मानचित्र भवन निर्माणकर्ता, विकासकार्य करने वालों, प्रबंधकों और नियोजकों के लिए मूलभूत उपकरण हैं। वो दर्शनार्थियों के लिए मार्गदर्शक के रूप में और सहभागियों, नियोजकों और लोगों के लिए सफलता के आदर्शों के रूप में कार्य करते हैं। मानचित्र भावी योजनाओं के खाके होते हैं।

टिप्पणी

स्थानीय क्षेत्र का नियोजन करने के लिए आधार मानचित्र अनिवार्य होता है। यह भूमि उपयोग, बाजार, यातायात, उपभोक्ता परिवार इत्यादि से सम्बन्धित सर्वेक्षण करने के लिए सहायता करता है। आधार मानचित्र अन्य विषय विशिष्ट मानचित्र, चित्र और चार्ट बनाने में मदद करते हैं। यह उस इलाके और लोगों का, जिनके लिये नियोजन करना है, मार्गदर्शक होता है।

योजना के मानचित्र का प्रारूप क्षेत्रीय कार्यों के आधार पर बनाया जाता है। आवश्यकता आधारित प्रस्ताव, उनके स्थल, डिजाइन, लागत का ब्यौरा आदि बड़े पैमाने के मानचित्र पर दिखाए जाते हैं। मानचित्र प्रारूप परिचर्चा आयोजित करने और विशेषज्ञों तथा स्थानीय लोगों से सुझाव आमंत्रित करने में मदद करता है। परिचर्चा और सुझाव अन्ततः नियोजन के लिए खाका तैयार करने में मदद करते हैं।

मानचित्र स्थानीय क्षेत्र की मांगों, जैसे कि सार्वजनिक उपयोग की इमारतें जैसे स्कूल, अस्पताल आदि, कोष, सुविधाएं, भिन्न तरह के माप और संभावित व्यय या लागत, जानने के आधार के रूप में काम करते हैं। क्योंकि मानचित्र विस्तृत जानकारी समेटे रहते हैं और स्वः व्याख्याकारी भी होते हैं, अतः वो वित्त प्रदान करने वाली एजेन्सियों की अनुमति के लिए सीधे अपील बन जाते हैं। विषय–विशिष्ट मानचित्र स्थानीय क्षेत्र योजना के प्रस्तुतिकरण, तर्कपूर्ण वाद–विवाद और उसके चरणबद्ध क्रियान्वयन में मदद करते हैं।

मानचित्र बनाने में आधुनिक प्रौद्योगिकी जैसे कम्प्यूटर कार्टोग्राफी, जी.आइ.एस., इमेज प्रौससिंग के उपयोग ने विभिन्न पैमानों पर विभिन्न प्रकार के मानचित्र बनाना सम्भव बना दिया है। इसी तरह, सम्प्रेषण तकनीक जैसे इन्टरनेट, ऑनलाइन, वैबसाइट इत्यादि जानकारी को अन्य लोगों व स्थानों तक हस्तान्तरित करने के लिए संभावनाएँ प्रस्तुत करती हैं। अतः मानचित्रण और सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी स्थानीय क्षेत्र नियोजन से सीधे जुड़ी हुई हैं।

30.12 स्थानीय क्षेत्र नियोजन का एक वृत्त अध्ययन : गांव-अकबरपुर (बांदा, उत्तर प्रदेश)

गांव अकबरपुर, जिला बांदा, उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। भौगोलिक रूप से, गांव लगभग 25^0 12' उत्तर अक्षांश और 80^0 47' पूर्व देशान्तर पर स्थित है। गांव मध्य भारतीय पठार की उत्तरी सीमा में स्थित है और बुन्देलखण्ड क्षेत्र का हिस्सा है।

विन्ध्यन पहाड़ियाँ और बदौस वन रेंज गांव की दक्षिणी और दक्षिण पश्चिमी सीमा बनाते हैं। उत्तर की ओर, गांव की, छाटन और पहारा गांवों के साथ संयुक्त सीमा रेखा है। जबकि दक्षिण की ओर इसकी गौण्डा, कुरारी और भरतकूप के साथ संयुक्त सीमा–रेखा है। भूमि की सामान्य ढलान दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर है। संरचनात्मक बनावट के रूप में, विन्ध्यन बलुआ पत्थर ऊपरी सतह बनाता है जिस पर यमुना पार की जलोढ़ मृदा सर्वोच्च परत बनाती है। गांव में सिर्फ तीन प्रकार की मिट्टियां हैं। वन और

टिप्पणी

पहाड़ी मृदा जो पहाड़ की तलहटी के सहारे पाई जाती है और पतली मिट्टी की परत में मिश्रित बजरी के टुकड़े इसकी विशेषता है। काली और पीली मिश्रित मिट्टी आमतौर पर मध्यम अँचल में पाई जाती हैं, जबकि काली जलोढ़ मृदा गांव के उत्तरी भाग में प्रमुखता से पाई जाती है।

अकबरपुर में उत्तर पूर्व की गर्म आर्द्र जलवायु और थार रेगिस्तान की गर्म शुष्क जलवायु के बीच परिवर्ती जलवायु होती है। यहां गर्मियों के दौरान 40^0 - 45^0 से. उच्च तापमान दर्ज किया जाता है, और सर्दियों में 5^0 - 10^0 से. निम्न तापमान दर्ज किया गया है। अधिकांश वर्षा ग्रीष्म के मानसून महीनों में होती है। वार्षिक औसत वर्षा की मात्रा 50 से 80 से.मी. होती है।

गांव में पश्चिम की ओर मस्जिद और दक्षिण पूर्व की ओर मन्दिर है। जबकि गांव की बहुसंख्यक जनसंख्या हिन्दू समुदाय की है, जनसंख्या का लगभग पांचवा भाग मुस्लिम समुदाय का भी है। यह बहु–पेशेवर गांव है जिसमें किसान, चरवाहे, शिल्पी, परिवाहक, व्यापारी और अन्य सेवा प्रदाता है। अतः गांव में लोगों का सुसंगत समूह है।

i) सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था

अकबरपुर मध्यम आकार का गांव है। वर्ष 2005 में इसका क्षेत्रफल 1582 एकड़ और जनसंख्या 3952 थी। गांव में लगभग 382 परिवार हैं। करीब आधे परिवार (197) खेतिहर समुदायों से हैं, इसके बाद खेतिहर मजदूरों के परिवार (106) हैं। अतः लगभग 76.7 प्रतिशत परिवार सीधे कृषि सम्बन्धी गतिविधियों में लगे हुए हैं। करीब 15 प्रतिशत परिवार जुलाहा समुदाय से है और बाकी लगभग 8 प्रतिशत परिवार शिल्पियों और अन्य सेवा प्रदाताओं के वर्ग से हैं। भूमि जोतों के अनुसार 1 प्रतिशत से कम (0.94%) बड़े किसान हैं, करीब 9 प्रतिशत (8.91%) मध्यम किसान और बाकी बहुसंख्यक छोटे और सीमान्त किसान हैं। भूमिहीन खेतीहर मजदूरों के परिवारों की संख्या लगभग 37 प्रतिशत है।

कुल जनसंख्या का लगभग 37 प्रतिशत साक्षर है। कुल जनसंख्या का करीब 39.52 प्रतिशत कर्मी (अर्जक) का है जिनमें से 36 प्रतिशत मुख्य कर्मी हैं और लगभग 3 प्रतिशत सीमान्त या अल्पकालिक कर्मी हैं। मुख्य या दीर्घकालिक कर्मी वो हैं जो वर्षभर विशिष्ट कार्य में लगे रहते हैं। जबकि सीमान्त/अल्पकालिक कर्मी वर्ष में कुछ समय में पूरक आधार पर रोजगार में लगे रहते हैं। सामान्य भूमि उपयोग के रूप में, लगभग 113 एकड़ भूमि कृषि के लिए उपलब्ध नहीं है। कृषि योग्य ऊसर भूमि और बंजर भूमि 119 एकड़ है। गांव का वन क्षेत्र लगभग 20.54 एकड़ का है जबकि कुल कृषि योग्य भूमि 646 एकड़ है। कृषि के अंतर्गत वास्तविक क्षेत्र 379 एकड़ है, जिसका करीब तीन–चौथाई (287 एकड़) सिंचित बताया गया है।

जहां तक अन्य स्थानों से सम्बन्ध का प्रश्न है, गांव झांसी–इलाहाबाद राजमार्ग और मध्य रेलवे के झांसी-मानिकपुर भाग से अच्छी तरह जुड़ा है। पूर्व की ओर इलाहाबाद का शहर लगभग 135 कि.मी. की दूरी पर स्थित है और करवी नगर लगभग 15 कि.

टिप्पणी

मी. पर है। जबकि पश्चिम की ओर बांदा 55 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गांव में बस स्टैण्ड है और निकटतम रेलवे स्टेशन $1^{1}/_{2}$ कि.मी. पर है।

ii) कृषि सम्बन्धी भूमि उपयोग

कृषि भूमि उपयोग ऋतु अनुसार बदलता है। शुद्ध बोए गए क्षेत्र का लगभग 63 प्रतिशत खरीफ फसलों के अन्तर्गत है, जबकि करीब 36 प्रतिशत रबी की फसलों के अन्तर्गत आता है। बाकी लगभग 1 प्रतिशत क्षेत्र जैद की फसलों के लिए अलग रखा गया है। खरीफ की फसलों का विवरण यहां प्रस्तुत किया गया है। खरीफ के मौसम में, कुल कृषि क्षेत्र के 32 प्रतिशत भाग पर धान की खेती होती है, ज्वार की करीब 25 प्रतिशत और बाजरे की लगभग 24 प्रतिशत पर खेती होती है। अतः कृषि क्षेत्र का 82 प्रतिशत सिर्फ इन तीन फसलों को अन्तर्गत रहता है। खरीफ की अन्य फसलों में, कपास लगभग 8.00 प्रतिशत, दालें लगभग 4.68 प्रतिशत और तिलहन लगभग 2.78 प्रतिशत पर होती है। फल बागान और रेशे की फसलें 1-1 प्रतिशत पर होती है।

iii) सुख साधन और सामाजिक सुविधाएं

सुख–साधनों और सामाजिक सुविधाओं का वर्णन इलाके के सामाजिक आधारिक ढ़ांचे के स्तर को प्रतिबिम्बित करता है। यह सभी प्रकार के विकास की मूलभूत आवश्यकताएं हैं। गांव में एक सार्वजनिक फोन आफिस के अलावा पांच व्यक्तिगत फोन हैं। सड़क के किनारे स्थित होने की वजह से, गांव में बस स्टैण्ड है। इसी तरह, भरतकूप निकटतम रेलवे स्टेशन है जो डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर है। शैक्षणिक सुविधाओं के सम्बन्ध में, गांव में एक प्राथमिक और एक जूनियर हाई स्कूल है। यहां दो चिकित्सा कर्मी हैं और एक सरकारी दवाखाना है। सड़क के किनारे एक छोटा ग्रामीण बाजार भी विकसित हो गया है। नौ छोटी दुकानें हैं जो मिठाई, नाश्ता, चाय, पान, सामान्य सौदे की वस्तुएं, पत्थर के टुकड़े, ईंधन की लकड़ी, मरम्मत का शैड, चिकित्सा कर्मी इत्यादि से सम्बधित हैं। गांव में सुरक्षा चैक पोस्ट है। पेयजल सुविधा के सम्बन्ध में, गांव में पांच कुएं, 17 निजी पम्प हैं और तीन हैण्ड पम्प सरकार द्वारा लगवाए गए हैं।

iv) संयुक्त सम्पत्ति संसाधन

समुदाय के कल्याण के लिए संयुक्त सम्पत्ति संसाधनों की पहचान और उपयोग इलाके को विकसित करने के महत्वपूर्ण आधार है। अकबरपुर गांव में संयुक्त भूमि, जल, घास और वृक्ष का बड़ा भंडार है जिसे स्थानीय समुदाय के दीर्घकालिक कल्याण के लिए संचालित और बनाए रखने की आवश्यकता है। भूमि संसाधनों के रूप में, विन्ध्यन पहाड़ियों के दक्षिण में पत्थर के टुकड़े और पत्थरों के खण्ड मिलते हैं। काली, पीली और पथरीली मिट्टी सभी प्राथमिक गतिविधियों के आधार के रूप में कार्य करने के अलावा निर्माण सामग्री प्रदान करती है। जल के सम्बन्ध में, गांव में एक बड़ा और एक छोटा तालाब है। बड़ा तालाब जबकि पहाड़ियों के समीप स्थित है, छोटा तालाब उत्तर–पूर्वी दिशा की ओर है। यह तालाब पठारी क्षेत्रों में बहुत आम स्थल होते हैं और

टिप्पणी

पशुओं और वन्य जीवों को जल की आपूर्ति के लिये आधार के रूप में कार्य करते हैं। यह तालाब स्थानीय उपभोग के लिए मछली पालन और जलीय, गिरीदार फल, कमल जैसी फसलें उगाने के लिये भी आधार के रूप में कार्य करते हैं। चारागाह गांव में संयुक्त सम्पत्ति संसाधन है। वो रेलवे और राजमार्ग के साथ–साथ नदियों, झरनों के बगल में और दक्षिण में पहाड़ी रास्ते के साथ भूमि के टुकड़ों के रूप में पाये जाते हैं। गांव के पालतू पशु जैसे भेड़ें, बकरियां, गाय, भैंसे, बैल, टट्टू इत्यादि इन चारागाहों में चरते हैं। वृक्ष एक और महत्वपूर्ण संयुक्त सम्पत्ति संसाधन है। यह वृक्ष मूल्यवान फल, फूल, फर्नीचर की लकड़ी, ईंधन की लकड़ी प्रदान करते हैं और परिवेश को हरा–भरा बनाते हैं। आम और महुआ बड़े वृक्ष हैं और फलों, फूलों, फर्नीचर की लकड़ी के सम्बन्ध में अपने व्यापारिक मूल्य के लिए प्रसिद्ध हैं। यूकेलिप्टस, बबूल, नीम इत्यादि अन्य वृक्ष हैं जो फर्नीचर और ईंधन के लिए स्थानीय निवासियों द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं। कदम, कनेर झाड़ियां इत्यादि बौने वृक्ष हैं और भेड़ों व बकरियों द्वारा चरने के लिय उपयोग होते है और पहाड़ी ढ़लानों में फूलदार पौधों के रूप में भी प्रयोग किए जाते हैं।

v) नियोजन प्रस्ताव

उपरोक्त विवरण के आधार पर कुछ नियोजन प्रस्ताव तैयार किए जा सकते हैं। इन प्रस्तावों को नियोजन के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक समूहों में विभाजित किया जा सकता हैं।

(क) पारिस्थितिक नियोजन

पारिस्थितिक नियोजन का लक्ष्य इलाके की सामान्य पर्यावरणीय स्थितियों को सुधारने का है। इसके लिए गांव में भूमि, जल और हरित आवरण को सुधारने के सम्बन्ध में योजना बनाई जा सकती है। मृदा अपरदन को रोकने के लिए संरक्षण विधियाँ और पहाड़ी ढ़लानों के किनारे की भू–आकृतियों और खेतों में जैविक खाद की संरक्षण परिपाटियों को भूमि की गुणवत्ता सुधारने के लिए क्रियाशील किया जा सकता है। इसी तरह से, घरेलू, चारागाहों और कृषि के लिए जल की आवश्यकता की पूर्ति के लिए जल संसाधनों की गुणवत्ता और मात्रा सुधारने के लिए तालाबों को ज्यादा गहरा करने, गाद साफ करने और जल संभरण और बरसाती जल के पुनः संग्रहण के लिए ज्यादा स्थलों की खुदाई करने के लिये उचित योजना बनाई जा सकती है। जल की उपलब्धता खेतों में सिंचाई और जल–भरण का स्तर बढ़ा देगी, जो फिर नए बागानों को जल उपलब्ध कराने के अलावा भूमि की उत्पादकता में भी वृद्धि करेगी।

स्वस्थ व सही पर्यावरणीय व्यवस्था के लिए हरित आवरण के स्तर और जैवसमूह में वृद्धि अनिवार्य है। हरित आवरण में वृद्धि करने के तरीकों में मध्यम और बड़े वृक्षों को राजमार्गों, नदियों, रेलमार्ग के किनारे और तालाबों के किनारों पर और पंचायत की भूमि पर रोपण को समाविष्ट कर सकते हैं। छोटे और बौने वृक्षों को फूल वाले पौधों के साथ पहाड़ी ढ़लान के सहारे रोपा जा सकता है। इस नियोजन प्रस्ताव के

टिप्पणी

लिए वित्तीय और प्रौद्योगिक सहायता वन विभाग, राजस्व जिला नियोजन कार्यालय से उपलब्ध की जा सकती है। एक बार यह नियोजन प्रस्ताव क्रियान्वित हो जाता है तो इन पारिस्थितिक आगत की सुरक्षा और रख–रखाव में स्थानीय लोगों का सहयोग और सहभागिता द्वारा मदद मिलती है।

(ख) सामाजिक नियोजन

पारिस्थितिक और आर्थिक नियोजन के हितों की रक्षा करने के लिए सामाजिक नियोजन आवश्यक है। एक स्वस्थ और सही सामाजिक व्यवस्था संतुलित विकास के लिये परिसम्पत्ति होती है। अकबरपुर गांव में सामाजिक नियोजन के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार सृजन के क्षेत्रों में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। स्त्रियों, बच्चों और वृद्ध लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति दयनीय है। यहॉ एक छोटा स्वास्थ्य केन्द्र और कम से कम एक प्रसूति एवं बाल स्वास्थ्य केन्द्र खोलने के लिये अति शीघ्र नियोजन की आवश्यकता है। प्रशिक्षित महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता और स्वास्थ्य देखरेख सेवा द्वारा स्वास्थ्य सुधारने और जनसंख्या वृद्धि नियन्त्रित करने में मदद कर सकती हैं। इसी तरह, गांव की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए आंगनबाड़ी और उच्च–प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल होने चाहिए। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भी गांव की अनिवार्य आवश्यकता है, क्योंकि कपड़ा बुनाई, बढईगिरी, सुनार का कार्य अभी भी गांव में पारिवारिक व्यवसाय के रूप में किया जाता है। ग्रामीण युवाओं के उत्प्रवास की समस्या को हल करने के लिए, स्व रोजगार को गांव में जरूर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। लोगों की ऋण, बचत और विनियोग की समस्या को हल करने के लिए ग्रामीण बैंक शाखा भी स्थापित की जा सकती है।

(ग) आर्थिक नियोजन

स्थानीय क्षेत्र के विकास के लिए ठोस आर्थिक आधार अनिवार्य है। अकबरपुर गांव में तालाब है जो मछली पालन और जलीय गिरीदार फलों के लिए विकसित किए जा सकते हैं। क्षेत्र में पत्थर के टुकड़ों का अच्छा आधार है। अतः खनन केन्द्र और उत्खनन, आर्थिक गतिविधि के रूप में शुरू किया जा सकता है। इसी तरह से, बालू और मिट्टी निर्माण कार्यो के लिए बड़ी मात्रा में उपलब्ध है। दुधारू पशु जैसे गाय और भैंसों के लाने से गांव में डेयरी उद्योग सुधारा जा सकता है। इसी तरह, संकर जाति की बकरियां और भेड़े गांव में चरवाहों की आय में वृद्धि कर सकती हैं। इन पशुओं को माँस उद्योग में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। क्योंकि यह गांव राजमार्ग के साथ स्थित है, तो यह समीप के नगरों चित्रकूट (करवी) और अटारा के बाजारों में अपने उत्पादों की बिक्री से फायदा उठा सकता है। ग्रामीण सड़कों का निर्माण करने के अलावा बैंक और पंचायत घर स्थापित करने से ग्रामीण समुदाय की अपने शहरी प्रतिपक्षों के साथ अंतःक्रिया को आगे और सुधारा जा सकता है। शहर में ग्रामीण उत्पाद नियमित आधार पर बेचे जा सकते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 30.5

1. मानचित्र बनाते समय किन कारकों का ध्यान रखना होता है?

2. अकबरपुर गांव की भौगोलिक स्थिति क्या है? पाठ में दिए विवरण का उपयोग करते हुए एक रेखाचित्र बनाइए।

3. अकबरपुर गांव का कृषि भूमि उपयोग क्या है?

4. अकबरपुर गांव की नियोजन सम्बन्धी आवश्यकताएँ क्या हैं?

5. अकबरपुर गांव में नियोजन की मुख्य आर्थिक व सामाजिक योजनाओं की चर्चा कीजिए।

आपने क्या सीखा

स्थानीय क्षेत्र नियोजन योजना बनाने की प्रक्रिया है जो स्थानीय स्तर की समस्याओं और मुद्दों के समाधान से सम्बधित है। स्थानीय क्षेत्र की भौतिक और सांस्कृतिक दोनों विशेषतायें होती है, जैसे, क्षेत्र का भू–दृश्य, स्थानीय उत्पाद या लोक नृत्य, हस्तशिल्प आदि। स्थान और लोगों की समस्याएं हल करने के तरीके और साधनों की युक्ति निकालने का प्रयत्न नियोजन है। नियोजन विभिन्न स्तरों पर किया जाता है, छोटे स्थानीय क्षेत्र से लेकर इतने बड़े जितना कि विश्व तक नियोजन किया जाता है। तथापि, यह स्थानीय लोगों के सच्चे प्रयत्न होते हैं जो स्वच्छ, हरित और समृद्धशाली स्थानीय क्षेत्र सुनिश्चित करते हैं। स्थानीय क्षेत्र नियोजन के लिए मूलभूत आवश्यकताएं, उद्देश्यों का निरूपण करना जो लक्ष्य और प्राथमिकताएं प्राप्त करने हैं उन्हें नियत करना, योजना का निष्पादन करने के लिए स्थानीय और अन्य संसाधनों को जुटाना, योजना के क्रियान्वयन और प्रगति की मॉनीटरिंग करने के लिए सामाजिक समूह सृजित करना है। स्थानीय क्षेत्र नियोजन की सफलता मोटे तौर पर इलाके के पारिस्थितिक और सामाजिक–आर्थिक आधार पर निर्भर करती है। इस कारण, स्थानीय क्षेत्र योजनाएं स्थान–स्थान पर काफी भिन्न होती है। स्थानीय क्षेत्र

टिप्पणी

नियोजन के आयाम अनिवार्य रूप से लोगों की मूलभूत और उच्चत्तर आवश्यकताएँ पूरा करने और स्थानीय लोगों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर और आय उत्पन्न करना है। अतः स्थानीय संसाधनों का आवश्यकता–आधारित उपयोग इस नियोजन की पूर्व–शर्त है। स्थानीय संसाधनों का अर्थ भूमि संसाधनों जैसे चट्टानें और मृदा, जल संसाधन, बागान और वन संसाधन से है। स्थानीय संसाधनों का मूल्यांकन आंकड़े इकट्ठे करने, योजना तैयार करने और उसके क्रियान्वयन में मदद करता है। अतः नियोजन एक सतत प्रक्रिया है। भारत लोगों के कल्याण के लिए अपनी अर्थव्यवस्था और क्षेत्रों को विकसित करने के लिए नियोजित प्रयत्न कर रहा है। भारत ने अब तक अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर 10 पंच वर्षीय योजनाएँ बनाई हैं। प्राथमिकताएं भिन्न योजना अवधियों के दौरान बदलती रहीं हैं। तथापि, इन सब योजनाओं ने जबकि लोगों के सामान्य कल्याण का मुख्य उद्देश्य रखते हुए आर्थिक वृद्धि की उच्चतर दरें प्राप्त करने का लक्ष्य रखा। भिन्न क्षेत्रों की अपनी सुव्यक्त समस्याएं और सामर्थ्य होती है और इसलिए वो नियोजन के लिए अपनी–अपनी अलग आवश्यकताएँ प्रस्तुत करते हैं। जल संग्रहण और प्रबंधन, वनों का संरक्षण और प्रौन्नति, जनजातीय कल्याण और वन्य जीवन की सुरक्षा, स्थानीय पर्यावरण का प्रबंधन, स्थानीय पर्यावरण के प्रबंधन के लिए सत्ता लोगों के हाथ में इत्यादि भिन्न क्षेत्रों की उनकी अपनी निराली आवश्यकताओं पर आधारित कुछ नियोजन सम्बन्धी प्राथमिकताएं है। स्थानीय पर्यावरण की गुणवत्ता सुधारने के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग और स्थानीय लोगों की पहल महत्वपूर्ण है। संसाधनों के अवक्षय के प्रकाश में अनुकूलतम संसाधन उपयोग और उनकी नवीकरणीयता की आवश्यकता है। स्थानीय क्षेत्र के विकास और नियोजन के लिए मानचित्र मूलभूत उपकरण हैं। नक्शों, रेखाचित्रों और फोटोग्राफों का इस्तेमाल स्थानीय मुद्दों की पहचान करने में, आंकड़े/जानकारी इकट्ठा करने और स्थानीय क्षेत्र नियोजन के प्रारूप को अन्तिम रूप देने में मदद करता है। क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था, भूमि उपयोग प्रारूप, सुख–साधन तथा सामाजिक सुविधाओं और संयुक्त सम्पत्ति संसाधनों का विश्लेषण करने के लिए वृत्त अध्ययन तैयार करनी चाहिए। वृत्त अध्ययन के परिणामों के आधार पर, नियोजन प्रस्ताव तैयार करने चाहिए। इन प्रस्तावों में क्षेत्र के पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक नियोजन के लिए मुद्दों और विशिष्ट योजनाओं का समावेश जरूर करना चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. स्थानीय क्षेत्र नियोजन के किन्हीं दो आयामों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. स्थानीय क्षेत्र की योजना तैयार करने की मूलभूत विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
3. किस प्रकार स्थानीय लोग स्थानीय स्व प्रयास द्वारा अपने स्थानीय क्षेत्र को सुधारने में मदद कर सकते हैं?
4. स्थानीय क्षेत्र नियोजन के प्रबंधन में मानचित्रों की क्या उपयोगिता है?

टिप्पणी

5. जनजातीय क्षेत्रों की अपनी अलग विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1

1. **स्थानीय क्षेत्र** अवस्थिति, स्थल विशिष्ट मुद्दा, वस्तु या समुदाय है। यह दोनों भौतिक और साथ ही सांस्कृतिक भू–दृश्य, स्थानीय उत्पाद प्रस्तुत करता है जैसे, हस्तशिल्प और इलाके की विशिष्टताएं जैसे कि लोक नृत्य, कलात्मक वस्तुएं इत्यादि। स्थानीय क्षेत्र स्थिति और लोगों के साथ शक्तिशाली बन्धन प्रतिबिम्बित करता है।

   नियोजन, लोगों और स्थान को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उन्हें सुलझाने के तरीके और साधनों की युक्ति निकालने का प्रयत्न है। इसका स्थानीय वातावरण और मानव जीवन की गुणवत्ता सुधारने का भी लक्ष्य होता है।

2. भारत में नियोजन के विभिन्न स्तर हैं:

   स्थानीय क्षेत्र नियोजन, खण्ड या लघु स्तरीय नियोजन, जिला स्तरीय नियोजन, राज्य स्तरीय नियोजन और राष्ट्रीय स्तर का नियोजन।

3. किसी क्षेत्र के नियोजन के लिए तीन चुनौतियां हैं:

   क. पर्यावरणीय गुणवत्ता में कमी

   ख. निर्धनता और कुपोषण

   ग. बेरोजगारी

4. नियोजन से लोगों की मूलभूत अपेक्षाएं–

   क. मूलभूत सेवाओं तथा सुख साधनों की व्यवस्था

   ख. कृषि और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के लिए विकासात्मक परियोजनाएं जैसे सिंचाई, उद्योग

   ग. रोजगार उत्पन्न करना और उनके उत्पाद बिक्री करने के लिए बाजार

5. नियोजन की मूलभूल आवश्यकताएं हैं:

   क. उद्देश्यों का निर्धारण

   ख. लक्ष्य और प्राथमिकताएं निर्धारित करना

टिप्पणी

ग. संसाधनों को जुटाना

घ. सामाजिक समूह बनाना

ङ. प्रगति का मूल्यांकन और मॉनिटॉरिंग

30.2

1. पारिस्थितिक अनुकूलतम नियोजन के दो उदाहरण हैं:

   क. सिंचाई और बाढ़ नियन्त्रण के लिये नदियों को नियंत्रित करना।

   ख. बागान

2. संसाधनों की उपलब्धता और मानवीय आवश्यकता के बीच सन्तुलन बनाए रखने की सुव्यक्त जरूरत है क्योंकि नवीकरणीयता और निम्नीकरण के मामले में संसाधनों की सीमाएं होती हैं। अतः मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग होना चाहिए।

3. स्थानीय क्षेत्र में वृक्षारोपण निम्नलिखित पर आधारित होना चाहिये:

   क. भू–आकृति

   ख. जलवायु सम्बंधित स्थितियां

   ग. भू–तत्व सम्बन्धी स्थितियां

   घ. प्राकृतिक वनस्पति

4. मूलभूत और उच्चतर आवश्यकताओं के दो–दो उदाहरण:

   क. मूलभूत आवश्यकताएं (i) सुरक्षित पेय जल

   (ii) मूलभूत शिक्षा और स्वास्थ्य

   ख. उच्चतर आवश्यकताएं (i) तकनीकी शिक्षा

   (ii) उन्नत परिवहन प्रणाली

5. प्रौद्योगिकीय नवीनीकरण और संस्थागत सहायता के दो प्रभाव:

   क. प्रौद्योगिकीय नवीनीकरण (i) कृषि सम्बन्धी विकास

   (ii) सूचना क्रान्ति

   ख. संस्थागत सहायता (i) सबके लिए शिक्षा

   (ii) सार्वजनिक परिवहन प्रणाली

टिप्पणी

30.3

1. स्थानीय लोग विकास की योजनाएँ बनाने के अपने अनुभव, नियोजन योजनाओं के क्रियान्वयन और निष्पादन में और नियोजित परियोजनाओं के रख–रखाव में अपनी सहभागिता के जरिये क्षेत्रीय नियोजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

2. विकास के दौरान निम्न पर विशेष बलः

   क. प्रथम पंचवर्षीय योजना का सिचाई तन्त्रों के विकास पर।

   ख. द्वितीय पंचवर्षीय योजना का औद्योगिक विकास में आत्म–निर्भरता पर।

3. दसवीं पंचवर्षीय योजना के उद्देश्य मुख्य नदियों की सफाई, बरसात के पानी का संग्रहण, नदियों का आपस में जुड़ाव, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, साक्षरता अभियान, सबके लिए स्वास्थ्य हैं।

4. कालम I का कालम II से मिलान करें।

   क. 2, ख. 1, ग. 5, घ. 3, ङ. 4

30.4

1. स्थानीय आवश्यकताएं प्रत्येक क्षेत्र में, क्षेत्र–विशिष्ट मुद्दों और समस्याओं और विकास के लिए उपलब्ध संभावित क्षमता के आधार पर भिन्न–भिन्न होती हैं।

2. स्थानीय संसाधन स्थानीय क्षेत्र नियोजन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि विकास की गतिविधियां अधिकांशतः संसाधनों पर आधारित होती हैं। स्थानीय संसाधनों का उपयोग नियोजन की लागत को कम करता है और स्थानीय लोगों के लाभों को अधिकतम करता है।

3. संसाधन अवक्षय संसाधनों के उपलब्ध भंडार में ह्रास होना है। कुछ संसाधनों का काफी हद तक अवक्षय हो गया है, जबकि दूसरों का अवक्षय कम हुआ है।

4. संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग का अर्थ मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने में संसाधनों को सतत् धारणीय बनाए रखने के लिए उनके विवेकपूर्ण उपयोग से है।

30.5

1. मानचित्र बनाते समय कई कारकों को जैसे मानचित्र का आकार, ब्यौरा जो दर्शाना है, पैमाने का विकल्प इत्यादि ध्यान में रखना चाहिए।

2. अकबरपुर गांव की भौगोलिक अवस्थिति $25^{o}12'$ उत्तर अक्षांश पर और $80^{o}47'$ पूर्वी देशान्तर पर है।

टिप्पणी

3. अकबरपुर गांव का कृषि सम्बन्धी भूमि उपयोग प्रमुखतया खरीफ के मौसम में धान, ज्वार और बाजरा और रबी के मौसम में गेहूं, चना, दालें और तिलहन की फसलों का होता है। खरीफ की फसलें करीब 63 प्रतिशत क्षेत्र पर होती है, जबकि रबी की फसलें 36 प्रतिशत क्षेत्र घेरती हैं और बाकी लगभग 1 प्रतिशत जैद फसलों के लिए होता है।

4. अकबरपुर गांव की नियोजन सम्बन्धी आवश्यकताएं मूलभूत सुविधाओं, सिंचाई की सुविधाओं और विकास के लिए कृषि–उद्योगों की व्यवस्था से जुड़ी हैं।

5. अकबरपुर गांव के नियोजन प्रस्ताव पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक नियोजन के शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. अनुच्छेद 30.3 देखिए
2. अनुच्छेद 30.5 देखिए
3. अनुच्छेद 30.7 देखिए
4. अनुच्छेद 30.9 देखिए
5. अनुच्छेद 30.7 देखिए

टिप्पणी

31

आंकड़े एकत्रीकरण, प्रक्रिया और विश्लेषण

पिछले पाठ में हमने स्थानीय क्षेत्र नियोजन की अवधारणा और उपागमों के बारे में जाना जिसके लिए आवश्यक शर्त आंकड़े का होना है। इस अध्याय में, हम उन विधियों के बारे में चर्चा करेंगे जिनका आंकड़ों के एकत्र करने, प्रक्रिया तथा विश्लेषण में अनुपालन किया जाता है। हमारे दैनिक जीवन में हम मुद्रण, श्रव्य व दृश्य माध्यम सामाजिक समूहों और परिचर्चाओं के जरिए बहुत सी जानकारी पाते हैं। परन्तु क्या आपने कभी सोचा है कि किस प्रकार इस जानकारी के लिए आंकड़े एकत्रित किए जाते है, उनकी प्रक्रिया और विश्लेषण किया जाता है? आंकड़ों के एकत्रीकरण का अर्थ क्षेत्र स्थितियों से आंकड़े/जानकारी इकट्ठा करने की योजना है। भूगोल में क्षेत्र कार्य से इच्छित आंकड़े/जानकारी प्राप्त करने, तथ्यों की तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक ढ़ंग से प्रक्रिया और विश्लेषण करने की विधियों के समूह का अनुपालन किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- आंकड़े एकत्रीकरण से जुड़े चरणों और समस्याओं की पहचान कर सकेंगे;
- आंकड़े एकत्रीकरण के विभिन्न साधनों और प्रक्रियाओं का विवरण दे सकेंगे;
- प्रश्नावली, अनुसूची, मापक्रम आदि तैयार कर सकेंगे;
- सर्वेक्षण किए जाने वाले क्षेत्र का रेखाचित्र बना सकेंगे;
- प्राथमिक आंकड़े इकट्ठा कर सकेंगे और इसके लिए नमूने भी ले सकेंगे;
- अप्रत्यक्ष आंकड़े इकट्ठे कर सकेंगे;

टिप्पणी

- एकत्रित आंकड़ों से सरल तालिकाएं और आरेख चित्र बना सकेंगे;
- तालिकाओं, नक्शों, आरेखों, फोटोग्राफों और चार्टों का विश्लेषण कर सकेंगे, और परिणामों का सामान्यीकरण करते हुए सुझाव दे सकेंगे।

31.1 आंकड़े एकत्रीकरण के सोपान

मोटे तौर पर, आंकड़ों के एकत्रीकरण के तीन मुख्य सोपान है—

1. आप लोगों से छानबीन की जाने वाली समस्या के सम्बन्ध में प्रश्न पूछ सकते हैं।
2. आप स्थानों, लोगों, संगठनों और उनके उत्पादों या परिणामों के सम्बन्ध में अवलोकन कर सकते हैं।
3. अपने उद्देश्य हेतु विद्यमान रिकार्ड या दूसरों के द्वारा इकट्ठे किए गए आंकड़ों का उपयोग कर सकते हैं।

पहले दो सोपान प्राथमिक आंकड़ों के एकत्रीकरण से सम्बंधित है जबकि तीसरा सोपान द्वितीयक आंकड़ों के एकत्रीकरण से सम्बन्ध रखता है। व्यक्ति विशेष द्वारा प्रत्यक्षतः इकट्ठी की गई जानकारी/आंकड़े प्राथमिक आंकड़े के रूप में जाने जाते हैं जबकि कार्यालयों/संस्थाओं से इकट्ठे किए रिकार्ड या आंकड़ा द्वितीयक आंकड़े के रूप में जाना जाता है।

क. प्राथमिक आंकड़ा एकत्रीकरण के सोपान

प्राथमिक आंकड़ों के एकत्रीकरण में निम्नलिखित सोपान हैं:

1. क्षेत्र से प्राथमिक आंकड़े इकट्ठा करने के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से अपने को तैयार करना।
2. अपने पास क्षेत्र पुस्तिका/रिकार्ड पुस्तिका या डायरी रखना जिसमें प्रसांगिक जानकारी लिख सकें, क्षेत्र का रेखाचित्र बना सकें या विशिष्ट समय अन्तराल पर किसी भी घटना का विवरण लिख सकें।
3. चुने गए भिन्न स्थलों से क्षेत्र के लोगों तक प्रश्नावली अनुसूची पहुँचाना।
4. उत्तरों में निहित तथ्यों का सत्यापन वास्तविकता के साथ करना।
5. अवलोकन द्वारा पाए गए तथ्यों, अभिक्रियाओं और अंकित तथ्यों को व्यवस्थित तथा तार्किक ढांचे में एकीकृत करना।

ख. द्वितीयक आंकड़े एकत्रीकरण के सोपान

द्वितीयक आंकड़ों के एकत्रीकरण में निम्नलिखित सोपान हैं :

1. द्वितीयक आंकड़े/जानकारी प्राप्त करने में कार्यालयों/संस्थाओं इत्यादि के बारे

टिप्पणी

में जानकारी होना आवश्यक है, जो प्रांसगिक आंकड़ों का रिकार्ड रखते हैं।

2. अपने प्रधानाध्यापक/संस्था के प्रधान से आधिकारिक पत्र लें जिसमें आपकी आंकड़ों की जरूरत और आंकड़े एकत्रीकरण का उद्देश्य दिया हो। आपका पहचान पत्र भी कार्यालयों में प्रवेश पाने के लिए अनिवार्य है।

3. आपके उद्देश्य से संबंधित आंकड़ों को लिखने के लिए नोट बुक/आलेख पुस्तिका रखें। इसकी फोटोकॉपी भी कराई जा सकती है।

4. अतः इस प्रकार से एकत्रित द्वितीयक आंकड़ें प्रोसेसिंग और सारिणीकरण के लिए आधार बनते हैं।

ग. मुद्दों की पहचान

जिन मुद्दों का मूल्यांकन करना है उनकी स्पष्ट रूप से पहचान करना बहुत आवश्यक है।

जिन मुद्दों का अध्ययन करना है उन मुद्दों का ढांचा समय की उपलब्धता, लागत, श्रमशक्ति और उपकरणों के आधार पर तैयार करना चाहिए। स्थानीय क्षेत्र नियोजन के मामले में निम्नलिखित मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए।

1. पर्यावरण स्थितियां जैसे पर्यावरणीय निम्नीकरण, मानवीय जीवन की गुणवत्ता इत्यादि से सम्बन्धित मुद्दे।

2. सामाजिक मुद्दे जैसे लोगों की बोध क्षमता, साक्षरता का स्तर, स्वास्थ्य सम्बन्धी खतरे, अपराध का घटित होना इत्यादि।

3. आर्थिक मुद्दे जैसे रोजगार, व्यय का प्रतिरूप, माल और वस्तुओं का परिवहन।

4. कृषि, उद्योग आदि के लिए जनसंख्या अध्ययन।

5. कृषि, उद्योग इत्यादि के लिए भूमि उपयोग सम्बन्धी अध्ययन।

6. सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए उपलब्ध सुविधाएं तथा सुख–साधन।

7. अर्थव्यवस्था की वृद्धि से सम्बन्धित समस्याएं जैसे सिंचाई, परिवहन के साधन, ऊर्जा की उपलब्धता आदि।

8. नियोजन के प्रमुख मुद्दे जैसे झुग्गी झोपड़ी क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था, प्रदूषण नियंत्रण, औद्योगिक क्षेत्र में स्वच्छ वातावरण।

31.2 आंकड़ा एकत्रीकरण के उपकरण और तकनीक

आंकड़े एकत्रित करने के लिए हम कुछ उपकरणों का उपयोग करते हैं और विशिष्ट तकनीकों का अनुपालन करते हैं। आंकड़े एकत्रित करने में निम्नलिखित उपकरण सहायता करते हैं।

टिप्पणी

1. घटना को ध्यान से देखना और विवरण को लिखना।
2. प्रश्नावलियों/अनुसूचियों के जरिये तथ्यों के बारे में पूछताछ करना।
3. क्षेत्र में मापन करना।
4. परीक्षण करना।
5. घटनाओं को दर्ज करना।

आइए अब आंकड़े एकत्रित करने के कुछ उपकरणों और तकनीकों का अध्ययन करें।

क. प्रश्नावली

प्रश्नावलियां या साक्षात्कार अनुसूचियां विशिष्ट उद्देश्यों के लिए निर्मित किए गए नियत प्रश्नों के समूह है जिससे क्षेत्र कार्य के जरिये आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। प्रश्नावली दो उद्देश्यों को पूरा करती है। पहला, यह क्षेत्र कार्य के उद्देश्यों को विशिष्ट प्रश्नों में बदल देती है जिससे आवश्यक आंकड़े इकट्ठा करने में मदद मिलती हैं। प्रश्नों के उत्तरों के रूप में एकत्रित आंकड़े समस्या को समझने के आधार हैं। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रत्येक प्रश्न उत्तरदाता को स्पष्ट होना चाहिए। प्रश्न भी उद्देश्य को परिलक्षित करना चाहिए। इन उत्तरों का विश्लेषण कर सही निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। अतः प्रश्न सीधे एवं सटीक होने चाहिए। उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछने के साथ हम मान लेते हैं कि उनके पास पर्याप्त ज्ञान, राय या अपना दृष्टिकोण है। अतः, प्रत्येक प्रश्न इस तरह बनाना चाहिए ताकि उत्तरदाता का दृष्टिकोण या विचार परिलक्षित हो सके।

प्रश्नावली का दूसरा उद्देश्य साक्षात्कार की सहायता करना है। इसके द्वारा बगैर भूले सभी प्रश्नों को सिलसिलेवार ढ़ंग से पूछा जा सकता है। साक्षात्कार में रत रहने की उत्तरदाता की इच्छा कई कारकों पर निर्भर करती हैं। प्रश्नावली स्वयं ही साक्षात्कारकर्त्ता –उत्तरदाता के सम्बन्धों को निर्धारित करती है। अतः, एकत्रित आंकड़ों की मात्रा और गुणवत्ता मुख्य तौर पर प्रश्नावली की प्रकृति पर निर्भर करती है।

(i) प्रश्नावली के अंश

निम्नलिखित दो प्रकार की जानकारी प्रश्नावली का अंश होना चाहिए :

पहला पहचान या स्थिति विशिष्ट अंश तथा दूसरा उत्तरदाता केन्द्रित अंश।

(ii) प्रश्नावली का रूप

प्रश्नावली का रूप कुछ कारकों पर निर्भर करता है जैसे कि उत्तरदाताओं की सहयोगशीलता, जानकारी की उपयोगिता और उसका स्तर, भाषा, प्रश्नों का अनुक्रम, एकक विचार इत्यादि।

टिप्पणी

(iii) साक्षात्कार

प्रश्नावली के तैयार होने के बाद साक्षात्कार लेने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। अन्वेषक के पास परिचय पत्र होना चाहिए ताकि वह क्षेत्र में अपने बारे में बता सके। परिचय पत्र में यह लिखा हुआ होना चाहिए कि इस तरह एकत्रित जानकारी का उपयोग मात्र प्रस्तुतिकरण और शैक्षणिक उपयोग के लिए ही किया जाएगा। दी हुई जानकारी पूर्णतया गोपनीय रहेगी। साक्षात्कार करने के दौरान, हमें उत्तरदाताओं को बिना कोई उत्तर का संकेत दिए उनकी कठिनाइयों को दूर करने में मदद करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो सके उत्तर के बारे में किसी भी तरह की मदद नहीं की जानी चाहिए। अंत में उत्तरदाता को धन्यवाद ज्ञापन एवं आभार व्यक्त किया जाना चाहिए।

ख. अनुसूचियां

अनुसूचियां सर्वेक्षण के लिए समय की योजना होती है। यह समयबद्ध विशिष्ट घटनाओं का विवरण है जैसे यातायात सर्वेक्षण, उपभोक्ता व्यवहार सर्वेक्षण, वर्षण का प्रतिरूप आदि। अन्वेषक को विशिष्ट समय अंतराल पर घटनाओं का विवरण अवश्य लिया जाना चाहिए। समय विश्लेषण का महत्वपूर्ण सन्दर्भ होता है। यह घटित होने की बारम्बारता के आधार पर घन्टों, मिनटों या सैकेण्डों के इकाइयों में हो सकता है। इसी तरह से एक घटना सामान्यतया कई तत्वों से सम्बन्धित होती है। अतः, लेखन पुस्तिका में दोनों अक्षों, X और Y को उपविभाजित करते हुए जानकारियों को अंकित करने की आवश्यकता है।

1. आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए किस घटना को चुना जाए और अंकित किया जाए?

2. किन स्थितियों में अवलोकन द्वारा बातें अंकित किया जाय? किस प्रकार अवलोकनीय स्थिति गठित की जाए?

3. क्या अवलोकन को अंक दिया जा सकता है और उन अंकों की क्या विशेषताएं हैं?

4. अवलोकन कितने स्थायी है? क्या समान स्थितियों में समान परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं?

5. क्या अवलोकित घटना के साथ क्रियात्मक एकता उसी प्रक्रिया के साथ है?

ग. वर्गक्रम पैमाने

वर्गक्रम पैमाने से हमारा अभिप्राय बिन्दुओं के सामूहिक पैमाने, से है जो अवलोकित आयामों के भिन्न–भिन्न श्रेणियों का विवरण देता है। वर्गक्रम पैमाने अधिकांशतः इन दो तरीकों में से किसी एक के अनुसार उपयोग किए जाते हैं, (1) आवर्ती अन्तरालों पर प्रतिरूप को अंकित करना, या (2) पूरी घटना के पश्चात वर्गक्रमित करना। अतः, वर्गक्रम पैमाना, जो पैमाने के प्रत्येक बिन्दु पर विभिन्न प्रकार की मदें लिए रहता हैं। यह

टिप्पणी

ज्यादा कुशल होता हैं क्योंकि वो प्रति प्रेक्षक ज्यादा आंकड़े प्रदान कर सकता हैं। क्षेत्र और समय की प्रति इकाई ज्यादा आयाम प्रदान कर सकता हैं। पूरी स्थिति के दौरान, अन्वेषक कई क्रियाओं का अवलोकन करता है। अपने दिमाग में उनका एकीकरण करता है। इस प्रकार वह निर्णय करता है कि पैमाने पर कौन सा बिन्दु, विविध व्यवहार का सर्वोत्तम वर्णन करता है। निम्नलिखित उदाहरण वर्गक्रम पैमाने की जानकारी देता हैं।

तापमान की स्थितियां

बहुत ठंडा	ठंडा	शीतल	औसत रूप से गर्म	उच्च गर्म	बहुत उच्च गर्म
0	1	2	3	4	5

विकास स्तर

अविकसित	बहुत निम्न स्तर	निम्न स्तर	मध्यम स्तर	उच्च स्तर	बहुत उच्च स्तर
0	1	2	3	4	5

घ. क्षेत्र रेखाचित्र

भूगोल में तत्स्थान पर ही क्षेत्र का रेखाचित्र बनाना, सर्वेक्षण का अनिवार्य घटक है। यह सरल, कामचलाऊ रेखांकन या डिजाइन होता है जो कागज के टुकड़े पर धरातलीय सच्चाई प्रस्तुत करने के लिए बनाया जाता है। भौगोलिक तथ्य जैसे संरचना या भौतिक भू–दृश्य, स्थान–स्थिति गतिशीलता, अंतःक्रियाओं की तीव्रता, भूमि प्रयोग के प्रतिरूप, किसी प्राकृतिक या सांस्कृतिक वस्तुओं की दूरी और दिशा और अंतःनिर्भरता को प्रतीकात्मक रूप से क्षेत्र रेखाचित्र के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

ङ फोटोग्राफ

क्षेत्र कार्य और आंकड़ा एकत्रीकरण के लिए कैमरा एक महत्वपूर्ण उपकरण है विशिष्ट आकृतियों के फोटो लेने के लिए कैमरे की जरूरत होती है। फोटोग्राफ भू–दृश्य का नजारा उसकी सम्पूर्णता में दर्शाता है, गतिविधियों और घटनाओं को प्रस्तुत करता है। फोटोग्राफ विश्लेषण और व्याख्या के लिए आंकड़े का आधार विस्तृत प्रदान करता है। कुछ पहलुओं को अंकित करने में ज्यादा समय लगता है जैसे स्थितियां, भिन्न प्रकार के भू–दृश्य, पौधों की किस्में, कार्यालय व फैक्टरी प्रणालियों की फोटो ली जा सकती है। उन्हें स्पष्टीकरण और विश्लेषण के लिए प्रयोग किया जा सकता है। परिणामों को अनुपूरित करने के लिए फोटोग्राफ का उपयोग किया जाता है।

- प्रश्नावलियाँ दो उद्देश्यों को पूरा करती हैं : (i) पहला, क्षेत्र कार्य के उद्देश्यों को यह विशिष्ट प्रश्नों में बदल देती हैं जिससे आवश्यक आंकड़े इकट्ठा करने में मदद मिलती है। (ii) दूसरा उद्देश्य साक्षात्कार की मदद करती हैं, उत्तरदाताओं को आवश्यक जानकारी संप्रेषित करने में उत्साहित करती है। इस तरह समुचित जानकारी साक्षात्कारक को प्राप्त हो जाती है।

टिप्पणी

- प्रश्नावलियों के रूप को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक हैं : (i) उत्तरदाता की उत्सुकता (ii) सन्दर्भ की रूपरेखा, (iii) जानकारी की उपयोगिता, (iv) गलतफहमी की संभावना, (v) प्रश्नों के प्रकार, (vi) जानकारी का स्तर, (vii) सामाजिक स्वीकृति, (viii) पृथक विचार, (ix) प्रश्न का अनुक्रम।
- प्रश्नावली से प्रश्न पूछते समय बहुत सी सावधानियां बरतने की जरूरत होती है। यह सावधानियां हैं : (i) अनुमति सूचकता के माहौल में जानकारी इकट्ठा करना चाहिए, (ii) उद्देश्य के बारे में उत्तरदाता को अंधेरे में नहीं रखना चाहिए, (iii) साक्षात्कार की गोपनीयता समझा देना चाहिए, (iv) सामाजिक रूप से अस्वीकार्य प्रश्नों से बचना चाहिए, (v) साक्षात्कार का प्रयोजन विश्वसनीय स्पष्टीकरण के द्वारा बता देना चाहिए।

च. प्रश्नावली और सर्वेक्षण अनुसूची से प्रश्न पूछने की विधियां

क्षेत्र कार्य के विशिष्ट उद्देश्य के लिए रची गई प्रश्नावलियां प्रश्नों का समूह हैं। प्रश्नों के रूप देने से पहले विशिष्ट समस्या के उद्देश्य को विभिन्न क्रम और चरणों में विभाजित किया जाता है। इसके बाद प्रश्नों का तर्कपूर्ण अनुक्रम तैयार करना होता है ताकि इच्छित प्रतिक्रिया प्राप्त हो सके। प्रश्नों का संख्यात्मक संकेतन एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है। यह आंकड़े को कम्प्यूटर में हस्तांतरित करने के लिए जरूरी होता है। तमाम प्रश्नावलियां अनुसूची समूहों में विभाजित होती हैं जैसे परिवार अनुसूची, सुख–साधन और सुविधाएं अनुसूची, कार्य या गतिविधि अनुसूची। अतः प्रश्नावलियां अनुसूचियों का समूह होती हैं जिसमें उद्देश्य–विशिष्ट प्रश्न होते हैं। समय का ब्यौरा अन्य आयाम है जो क्षेत्र कार्य को निश्चित अवधि में पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है।

सामान्यतया, प्रश्नावली से प्रश्न पूछने के लिए निम्नलिखित अनुक्रम का पालन किया जाता है:

1. **घनिष्टता बनाना** यह उत्तरदाता और साक्षात्कारकर्त्ता के बीच पूरे सम्बन्ध को बताता है। प्रश्नकर्त्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह उत्तरदाता के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करे।

2. **प्रश्नों का पूछना :** प्रश्नावली से प्रश्न पूछने का काम साक्षात्कारकर्त्ता सावधानी से चुने शब्दों से बने प्रश्नों के प्रयोग के जरिये करता है। ये प्रश्न उत्तरदाता को मौखिक रूप से प्रेषित किये जाते हैं। सभी प्रश्न जिस तरह से प्रश्नावली में लिखे होते हैं उनको ज्यों का त्यों पूछा जाता है। इससे उपयुक्त एवं सही उत्तर उत्तरदाता से प्राप्त हो पाता है। विभिन्न उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछने के मुख्य उद्देश्य, खोजबीन के केंद्रीय बिन्दु के बारे में पूरी और स्पष्ट प्रतिक्रिया प्राप्त करना है।

टिप्पणी

3. क्षेत्र रेखाचित्र और मानचित्र का प्रयोग

प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करते समय प्रश्नावली के साथ क्षेत्र रेखाचित्र अतिरिक्त सहायता करती है। भौतिक और सांस्कृतिक भू–दृश्यों की सामान्य आकृति बनाने में क्षेत्र रेखाचित्र बहुत मदद करता हैं। यह क्षेत्र पुस्तिका पर पेन्सिल या कलम द्वारा हाथ से खींची आकृतियां होती हैं। यह क्षेत्र रेखाचित्र स्थितियों या सम्बन्धों को याद करने में मदद करते हैं। वे दृष्टिगत प्रस्तुतीकरणों के रूप में तथ्यों की पुष्टि करते हैं।

छ. जानकारी एकत्रीकरण

लेखबद्ध और रिकार्डिंग दोनों ही उपकरण प्राथमिक आंकड़े इकट्ठा करने में मदद करते हैं। इन उपकरणों की मदद से, हम क्षेत्र के तथ्यों को आंकड़े या सारिणी में प्रस्तुत करते हैं। एकत्रीकरण की इस प्रक्रिया में कुछ जानकारी का ह्रास होता है। फिर भी, संतोषजनक जानकारी पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी कर ली जाती है। यह जानकारी विश्लेषण के उद्देश्य के लिए उपयोग की जाती है। प्रश्नावलियों के समूह के आधार पर, उत्तरदाता से अनुसूची में से प्रश्न पूछे जाते हैं। इस तरह इच्छित आंकड़े इकट्ठा किए जाते हैं। जानकारी का एकत्रीकरण नियत कार्य का हिस्सा हो सकता है या विशिष्ट उद्देश्य का कार्य हो सकता है। नियत का काम दैनिक बिक्री, जनसंख्या स्थानांतरण, वस्तुओं का व्यापार इत्यादि है। इसी तरह मौसमी तत्वों जैसे तापमान, वायु दाब, वर्षण, पवन की दिशा, मेघ आवरण, समुद्र की स्थिति इत्यादि नित्य आंकड़ा एकत्रीकरण है। नित्य आंकड़ा एकत्रीकरण के और भी बहुत से उदाहरण हैं। दैनिक जानकारी या तथ्यों के आधार पर, मौसमी प्रवृतियां और वार्षिक औसत निकाले जाते हैं। उद्देश्य–विशिष्ट आंकड़ा सिर्फ एक समय पर एकत्रित किया जाता है।

ज़. जानकारी एकत्रीकरण में सावधानियां

जरुरत की उचित जानकारी इकट्ठा करना कठिन काम है। कार्यालय या संगठनात्मक स्थानों की तुलना में क्षेत्र से आंकड़ा एकत्रीकरण जटिल कार्य है। क्षेत्र से असन्दिग्ध, पक्षपातरहित और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ विशेष सर्तकता बरतने की जरूरत पड़ती है। ये असहयोग, गलत जानकारी एवं मानसिक तनाव से संबन्धित है। इन कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए निम्नलिखित सावधानियां बरतनी चाहिए :

(i) जानकारी का एकत्रीकरण मित्रतापूर्ण ढंग से करना चाहिए। साक्षात्कारकर्त्ता को विनम्र एवं शिष्ट होना चाहिए और उत्तरदाता के साथ अच्छी घनिष्टता स्थापित करनी चाहिए।

(ii) शब्दों और वाक्यों का प्रयोग अपरिचित नहीं होना चाहिए और उत्तरदाता की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाया जाना चाहिए। ऐसे शब्दों व वाक्यों को ज्यादा उपयुक्त शब्दों द्वारा बदल देना चाहिए।

(iii) सामाजिक रूप से अस्वीकार्य प्रश्नों को छोड़ देना चाहिए। यदि आवश्यकता हो

तो इस उद्देश्य के लिए अप्रत्यक्ष तरीके से जानकारी प्राप्त करना चाहिए।

(iv) उत्तरदाता को क्षेत्र कार्य के उद्देश्य के बारे में अंधकार में नहीं रखना चाहिए। उत्तरदाता प्रश्नों के उत्तर शायद नहीं देना चाहेगा यदि, उसे क्षेत्र कार्य के उद्देश्य के बारे में स्पष्टतया नहीं बताया जाता है। यदि आंकड़ा एकत्रीकरण के लिए नमूना विधि के रूप में उसका चयन हुआ है तो इसके बारे में भी उत्तरदाता को बताया जाना चाहिए।

(v) उत्तरदाता को उसकी पहचान व प्रतिक्रिया गोपनीय रखने का आश्वासन दिया जाना चाहिए और उसके सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया जाना चाहिए।

(vi) साक्षात्कार के प्रयोजन का स्पष्टीकरण उत्तरदाता को दिया जाना चाहिए। एकत्रित जानकारी उत्तरदाता पर किसी भी तरह से प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालोगी, तथा उसकी गतिविधियों पर किसी भी तरह का नियंत्रण नहीं लगाएगी, ऐसा विश्वास दिलाया जाना चाहिए।

झ. नमूना और नमूने के आकार का चयन

नमूना ज्यादा बड़े समूह या क्षेत्र का एक भाग होता है। यह सम्पूर्ण समूह या क्षेत्र समग्र कहलाता है। इसके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए नमूना चुना जाता है। सम्पूर्ण का यह नमूना भाग समस्त क्षेत्र की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है। नमूने का चयन करते समय, समग्र को व्यक्तिगत क्षेत्रीय इकाइयों या समूहों से बना मान लिया जाता है। समग्र की कुछ इकाइयां या सदस्य, जिनको विस्तृत अध्ययन के लिए चुना जाता है, नमूने कहलाते हैं। जब समस्त क्षेत्र को अध्ययन के लिये लिया जाता है तो यह जनगणना सर्वेक्षण कहलाता है। इसके उदाहरण जनसंख्या गणना, कृषि सम्बन्धी संगणना आदि है।

1. **नमूने की पहचान :** क्षेत्र सर्वेक्षण करते समय नमूनों की पहचान करना पहला कार्य होता है। नमूना का चयन ऐसा होना चाहिए जो समस्त क्षेत्र की विशेषताएं प्रतिबिम्बित करे। नमूना समरूप नहीं होने चाहिए अन्यथा यह त्रुटियों की ओर अग्रसर कर सकता है।

2. **नमूना चुनने की तकनीक :** अध्ययन के समस्त क्षेत्र की सारी इकाइयों के पूर्ण सर्वेक्षण पर होने वाले संभावित अनावश्यक बड़े व्यय से बचने के लिए नमूने का चयन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, नमूने का अध्ययन समस्त क्षेत्र या जनसंख्या के अध्ययन की तुलना में कम समय में पूरा किया जा सकता है। इसमें जब हम ज्यादा छोटी क्षेत्रीय इकाइयों का अध्ययन करते हैं तो यथार्थता का स्तर भी बढ़ जाता है और समस्त क्षेत्र के मामले में इसके विपरीत होता है। मूल्यांकन, अनुमान और प्रक्षेपण के मापन नियोजन, क्रियान्वयन और प्रसारण अध्ययनों के उद्देश्य के लिए बेहतर उपयोगी हो सकते हैं। कुछ प्रचलित प्रतिचयन तकनीकों की यहां चर्चा की गई है:

टिप्पणी

अ. क्रमबद्ध प्रतिचयन

सम्पूर्ण से चयनित मदें नियमित तरीके से चुनी जाती है। यह विधि क्रमबद्ध प्रतिचयन की विधि कहलाती है। उदाहरणतया, किसी संख्या के गुणज में नमूनों का चयन जैसे – 8 (8वां, 16वां, 24वां आदि) या 10 (10वां, 20वां, 30वां आदि)।

ब. यादृच्छिक प्रतिचयन

यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक में नमूनों का चयन अवसर पर निर्भर करता है क्योंकि समग्र में एकरूपता की स्थिति विद्यमान होती हैं। यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक दो प्रकार की है–

(i) **सरल यादृच्छिक प्रतिचयन :** नमूने की वह विधि जिसमें समग्र के प्रत्येक इकाई का नमूने में शामिल होने का समान अवसर होता है, सरल यादृच्छिक प्रतिचयन के नाम से जानी जाती है। उदाहरण के लिए उपभोक्ता व्यवहार पर सर्वेक्षण में प्रत्येक उपभोक्ता का नमूने के रूप में चुने जाने का समान अवसर होता है।

(ii) **स्तरीय यादृच्छिक प्रतिचयन** जब समग्र में काफी विषमता मौजूद होती है तो इस प्रकार की प्रतिचयन विधि का उपयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में, समस्त अध्ययन क्षेत्र को समरूपीय समूहों या क्षेत्रों में उपविभाजित कर नमूनों का चयन किया जाता है। अध्ययन के कुछ पहलू स्तरीय विशेषता पेश करते हैं जैसे सामाजिक संरचना (सामान्य जनसंख्या, अनुसूचित जाति की जनसंख्या और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या); आर्थिक ढांचा (प्राथमिक, द्वितीयक तृतीयक क्षेत्र इत्यादि)। प्रत्येक उपसमूह से नमूने यादृच्छिक विधि से चुने जाते हैं। इस चयन का आधार समग्र में उनका तुलनात्मक महत्व होता है।

1. **प्रतिचयन का आकार :** नमूने के लिए दो मूलभूत आधार होता है। नमूना पर्याप्त एवं सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए। प्रतिनिधि नमूना तब कहा जाता है जब अध्ययन के समस्त क्षेत्र के विभिन्न भागों और उप–भागों को प्रतिबिम्बित करता है। इसी तरह, नमूना तब पर्याप्त होता है जब अन्वेषक को बहुत सही–सही परिणाम प्रदान करता है। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि जितना बड़ा नमूने का आकार होता है उतनी ज्यादा यथार्थता होती है।

सामान्यतः, छोटा नमूना पर्याप्त होता है यदि अध्ययन किए जाने वाला सम्पूर्ण समरूप है। परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। सामान्य रूप से, क्षेत्र सर्वेक्षण के लिए चयनित नमूने का आकार समग्र की कुल इकाइयों का लगभग 5 से 10 प्रतिशत होता है।

- कुल योग या सम्पूर्ण जिससे नमूना लिया जाता तथा निष्कर्ष निकाला जाता है समग्र या जनसंख्या कहलाता है।
- नमूना उस समूह का एक भाग है जो समस्त क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से चयन किया जाता है।

- सम्पूर्ण के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए समस्त क्षेत्र या समष्टि से नमूना चुनने की कला या विधि को प्रतिचयन विधि कहा जाता है।
- सम्पूर्ण से उपयुक्त सैम्पल प्राप्त करने की योजना प्रतिचयन की रूपरेखा कहलाती है। यह निहित लागत और परिणाम की शुद्धता को देखते हुए इस्तेमाल किए जाने वाले नमूने का आकार भी निर्धारित करता है।
- नमूना चयन करने की विधि जिसमें इकाइयां एक समान अंतराल पर चुनी जाती है, सरल यादृच्छिक प्रतिचयन कहलाता है।
- स्तरीय यादृच्छिक प्रतिचयन नमूना चुनने की वह विधि है जिसमें अध्ययन के समस्त क्षेत्र को समजातीय उपसमहों में विभाजित कर देते हैं और सरल यादृच्छिक नमूना प्रत्येक उप–समूह से चुन लिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 31.1

1. निम्नलिखित कथनों के लिए एक शब्द बताइए:

   (क) लोगों से प्रश्न पूछकर या अन्वेषण की समस्या से संबंधित अवलोकन करके संकलित आंकड़ों को _____ कहा जाता है।

   (ख) अभिलेख में अंकित आंकड़े या पहले से ही दूसरों के द्वारा एकत्रित आंकड़े को _____ कहा जाता है–

   (ग) पदार्थ माध्यम जो आकड़ा एकत्रित करने में मदद करता है उसे _____ कहते हैं।

   (घ) जिन तरीकों या विधियों द्वारा आंकड़ा एकत्रित किया जाता है उन्हें _____ कहते हैं।

   (ङ) क्षेत्र कार्य द्वारा आंकड़े एकत्रीकरण के उद्देश्य से गढ़े प्रश्नों के समूह को _____कहते हैं।

2. प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़े एकत्रीकरण के तीन–तीन विशेषताएं बताएं–

   (क) प्राथमिक आंकड़े एकत्रीकरण (i) _____

   (ii) _____

   (iii) _____

   (ख) द्वितीयक आंकड़े एकत्रीकरण (i) _____

   (ii) _____

   (iii) _____

टिप्पणी

3. दो स्तम्भों का मिलान करें–

स्तम्भ अ		**स्तम्भ ब**
(क) साक्षात्कार	(1)	बिन्दुओं के समूह वाला एक प्रकार का पैमाना जो आयामों को भिन्न श्रेणी या डिग्री का वर्णन करता है।
(ख) अनुसूची	(2)	मद को प्रस्तुत करने के लिए टेढ़ा–मेढ़ा चित्रांकन या रेखाचित्र।
(ग) श्रेणीबद्ध पैमाना	(3)	परियोजना या क्षेत्र कार्य को अन्तिम रूप देने के लिए समयबद्ध योजना
(घ) रेखाचित्र	(4)	लक्ष्य वर्ग के साथ प्रश्नों के रूप में अंतःक्रिया करने की प्रक्रिया

4. प्रश्नावली की मूलभूत दो प्रकार की जानकारी बताएं।

(क) _____ (ख) _____

5. नमूने की पहचान के लिए आवश्यक दो मानदण्ड बताएं।

(क) _____ (ख) _____

31.3 आंकड़ों की प्रोसेसिंग (प्रक्रिया)

क्षेत्र रिपोर्ट लिखने के लिए आंकड़े/जानकारी की प्रोसेसिंग करना अनिवार्य आयाम है। प्रोसेसिंग का पृथक विवरण यहां दिया गया है।

(क) प्राथमिक आंकड़े की प्रोसेसिंग : क्षेत्र से संकलित/एकत्रित आंकड़े, कथन, अंक और गुण–विषयक जानकारियाँ अपरिष्कृत होते हैं। इस स्तर पर आंकड़े में त्रुटि, लुप्तियां और असंगताएं होती है। भरी गई प्रश्नावलियों का सतर्कता पूर्ण सूक्ष्म विश्लेषण करने के बाद उसे सही करने की जरूरत होती है। प्राथमिक आंकड़े की प्रोसेसिंग में निम्नलिखित क्रम जुड़े हैं :

(I) आंकड़ों का सम्पादन : आंकड़ों का सम्पादन दो अवस्थाओं पर किया जा सकता है ; क्षेत्र और क्षेत्र पश्चात सम्पादन। क्षेत्र सम्पादन अन्वेषक द्वारा दिए प्रतिवेदन का पुनरावलोकन होता है ताकि उत्तरदाता का साक्षात्कार करते समय जो कुछ संक्षिप्त या कटे–छंटे रूप में लिखा गया है उसे पूरा कर लिया जाए।

क्षेत्र पश्चात सम्पादन उस समय किया जाता है जब क्षेत्र सर्वेक्षण पूरा कर लिया गया है और अनुसूची के सब फॉर्म इकट्ठे कर लिए गए हैं। इस प्रकार के सम्पादन के लिए सब फॉर्मों का पूरा–पूरा पुनरावलोकन करने का जरूरत होती है।

(II) आंकड़ों की कोडिंग : उत्तरदाता की प्रतिक्रिया को सीमित विकल्पों में रखने के लिए हमें उत्तरों को कई वर्णानुक्रमिक या संख्यात्मक चिन्ह देने की आवश्यकता होती है। विकल्प पारस्परिक रूप से अलग होना चाहिए अर्थात् सिर्फ एक अवधारणा या शब्द में परिभाषित होने चाहिए। प्रोसेसिंग का यह रूप कोडिंग कहलाता है। उदाहरणतया शैक्षणिक योग्यताओं के प्रश्न में वैकल्पिक चुनाव अशिक्षित, मैट्रिक से नीचे; मैट्रिक से ऊपर परन्तु स्नातक से नीचे; स्नातक और इससे ऊपर; तकनीकी डिप्लोमा; तकनीकी डिग्री आदि हैं।

इन विकल्पों को निर्दिष्ट वर्णानुक्रमिक कोड क, ख, ग, घ, ङ, और च हो सकते हैं। इसी तरह से, इन विकल्पों के संख्यात्मक कोड, क्रमशः 1, 2, 3, 4 और 5 हो सकते हैं। यह कुशल विश्लेषण के लिए जरुरी है। यद्यपि कोड नियत करना प्रश्नावली बनाने का एक हिस्सा है परन्तु फिर भी प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों का कोड नियत करना चाहिए और प्रोसेसिंग अवस्था पर इसे अंतिम रूप देना चाहिए। यह प्रश्नावली से जानकारी/आंकड़े को मास्टर चार्ट में हस्तान्तरित करना आसान कर देता है। यह दो आयामी चार्ट होता है जिसमें एक अक्ष (X) पर व्यक्तियों की संख्या और दूसरे अक्ष (Y) पर उनके उत्तर दिया जाता है। यदि विवरणों को कोड दिया गया है और मास्टर चार्ट में प्रविष्ट कर दिया है या कम्प्यूटर में भर दिया है तो गणना आसान और द्रुत हो जाती है।

(III) आंकड़ों को संगठित करना : भिन्न स्त्रोतों से एकत्रित की गई जानकारी/आंकड़ों को संगठित करना चाहिये। इस सम्बन्ध में पहला कार्य मास्टर चार्ट तैयार करना होता है। उदाहरण के लिए स्थानीय क्षेत्र सर्वेक्षण में, हम व्यक्तिगत परिवारों को पंक्ति में दर्ज करते हैं और जनसंख्या, प्रकार्य, सुविधाओं तथा सुख–साधनों के विवरण आदि को कॉलम में दर्ज करते हैं। अतः एक बड़ा चार्ट तैयार हो जाता है, जिसमें लगभग सभी प्रासंगिक जानकारी/आंकड़ा दिया हुआ होता है। अन्ततः, पंक्तियों और कॉलमों के कुल जोड़ को जांच लिया जाता है। बदले क्रम में व्यवस्थित आंकड़े को क्रम विन्यास/श्रृंखला कहते हैं। एक विशिष्ट विद्यमान वस्तु से सम्बधित जानकारी का समूह क्षेत्र कहलाता है। निम्नलिखित उदाहरण आंकड़ा प्रदर्शित करने का तरीका प्रदर्शित करता है–

परिवार/विवरण	जनसंख्या			प्रकार्य				सुविधाएं		
	कु.	पु.	म.	कृषि	उद्योग	व्यापार	सेवा	टी.वी.	फोन	वाहन
01	20	12	08	5	-	1	12	1	1	1 स्कूटर
02	17	09	08	6	-	1	1	1	1	1 स्कूटर
03	09	04	05	-	-	2	1	1	1	1कार तथा 1 स्कूटर
04	12	06	06	-	1	-	2	1	1	1 स्कूटर
05	13	07	06	2	-	-	2	1	1	1 स्कूटर

टिप्पणी

(iv) आंकड़ें का वर्गीकरण: क्षेत्र सर्वेक्षण के जरिये बड़ी मात्रा में संकलित व अपरिष्कृत आंकड़ों की व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के विवरण का समूह न बनाने की जरूरत होती है। कुछ विशेषताओं के आधार पर आंकड़े को समूहों और वर्गों में संगठित करना आंकड़े का वर्गीकरण कहलाता है। वर्गीकृत कथनों के वर्गों के बीच यह तुलना करने में मदद करता है। यह संख्यात्मक विशेषताओं या गुणात्मक विशेषताओं के अनुसार हो सकता है। संख्यात्मक विशेषताएं वर्ग अंतरालों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता हैं। उदाहरण के लिए 2000 रुपये तक मासिक आय तक का समूह बन सकता है और इस आय में आने वाले उत्तरदाता उसकी बारम्बारता बन सकती है। इसी तरह से आगे और भी समूह बनाया जा सकता है जैसे आय समूह 2000 रु. से 3000 रु. इत्यादि। प्रत्येक वर्ग के सामने प्रविष्ट की जाने वाली मदों की संख्या वर्ग की बारम्बारता कहलाती है। प्रत्येक वर्ग में निम्न सीमा और उच्च सीमा होती है। ऊपरी और निचली सीमा के बीच अन्तर को वर्ग का विस्तार या अंतराल कहते हैं। वर्गान्तरों को अधिकांश रूप से समान रखा जाता है। कभी–कभी जब आंकड़े का विस्तार बहुत बड़ा होता है तो वर्गान्तरों को समान नहीं रखा जाता है, बल्कि वे आंकड़े के क्रम विन्यास में सुस्पष्ट अपूरित स्थान पर आधारित होते हैं। उदाहरणतया, 2000 से कम जनसंख्या की बस्तियों के समूह इस तरह बनाए जा सकते हैं, 200 से कम जनसंख्या, 200 - 500 जनसंख्या, 500-1000 जनसंख्या इत्यादि। इस समूह में वर्गान्तर असमान हैं।

आंकड़े को निम्नलिखित आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. विवरणात्मक विशेषताएँ—उदाहरण : भूमि जोत, लिंग, जाति इत्यादि।
2. समय, स्थिति तथा क्षेत्र विशिष्ट विशेषताएं।
3. आंकड़े की प्रकृति : सतत् या असतत्/खण्डित

(ब) आंकड़ें का प्रस्तुतिकरण : आंकड़े का प्रस्तुतिकरण सारणीयन, सांख्यकीय, और मानचित्रांकनीय हो सकता है। सारणीयन प्रकार के प्रस्तुतिकरण की स्थिति में, भिन्न चरों से सम्बंधित आंकड़ों का वर्गीकरण और तुलना होनी चाहिए। सही–सही और यथार्थ परिणाम निकालने के लिए विभिन्न सांख्यकीय तकनीकें उपलब्ध हैं। तकनीकों का विस्तार बड़ा है और साथ ही उनकी अपनी सीमाएं हैं, इसलिए अपने उद्देश्य के लिए उपयुक्त तकनीक का चयन करने की जरूरत होती है। ग्राफ, चार्ट, आरेख और मानचित्र मानचित्रांकनीय प्रस्तुतिकरण के विभिन्न रूप है। आंकड़ा मानचित्रकलात्मक प्रणाली में रुपान्तरित कर दिया जाता है जो दृष्टिगत प्रस्तुतिकरण के लिए इस्तेमाल होता है। आंकड़े के सारणीयन, सांख्यकीय और मानचित्रांकनीय प्रस्तुतिकरण का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:

(i) सारणीयन प्रस्तुतिकरण : यह आंकड़े का उसके लघु रूप में संक्षेपण के लिए उपयोग होता है। यह निश्चित आंकड़े की प्रवृतियां, सम्बन्ध और अन्य विशेषताओं के विश्लेषण में मदद करता है। सरल सारणीयन आंकड़ों की एक विशेषता से सम्बंधित प्रश्न का उत्तर देने के लिए इस्तेमाल होता है। जबकि जटिल सारणीयन कई अंतः

टिप्पणी

संबंधित विशेषताओं को प्रस्तुत करने के लिए उपयोग किया जाता है। जटिल सारणीयन के परिणामस्वरूप दो–दिशायी, तीन दिशायी सारणी/तालिका बनती है जो आंकड़ों के दो या तीन अंतर्संबंधित विशेषताओं के बारे में जानकारी देती है। सारणी बनाते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाता है :

1. लिखित विवरण के बिना ऐसी सारिणी बनाना चाहिए जो आसानी से समझ में आ जाए। सारिणी के गठन के ठीक ऊपर, स्पष्ट और संक्षिप्त शीर्षक देना चाहिए।

2. आसानी से उल्लेख करने के लिए प्रत्येक सारणी को नम्बर देना चाहिए।

3. सारिणी के कॉलम और पंक्तियों दोनों का छोटा व स्पष्ट शीर्षक होना चाहिए। उसे क्रमांक भी दिया जा सकता है ताकि उल्लेख करना सरल हो।

4. मापन की इकाइयां (उत्पादन इकाइयां)—के.जी., क्विंटल, टन, या क्षेत्र इकाइयां—हैक्टेयर, किलोमीटर में इंगित करनी चाहिए। यदि सारणी का सम्बन्ध किसी विशिष्ट समय से है, तो उसे बताना चाहिए। सारणियां युक्तियुक्त, स्पष्ट और जहां तक सम्भव हो, सरल होनी चाहिए।

5. आंकड़े का स्रोत सारणी के गठन के ठीक नीचे इंगित किया जाना चाहिए।

6. संक्षेपाक्षर और व्याख्यात्मक पाद टिप्पणी (फुटनोट) यदि कोई है तो वह सारिणी के नीचे दिया जाना चाहिए। तथापि, जहां तक सम्भव हो यह कम से कम इस्तेमाल करने चाहिए।

7. सारणी में आंकड़े के वर्गों की श्रृंखला प्रस्तुत मद के विस्तार के अनुसार वर्णानुक्रमिक, कालानुक्रमिक, भौगोलिक क्रम का अनुपालन कर सकती है।

(ii) आंकड़े का सांख्यकीय प्रस्तुतिकरण : भिन्न स्रोतों से एकत्रित आंकड़ों की यथार्थ व्याख्या के लिए प्रोसेसिंग करने की जरुरत होती है। बहुधा सम्पूर्ण आंकड़े के लिए एक अकेला प्रतिनिधि मूल्य प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। सम्पूर्ण आंकड़ा वितरण के लिए एक अकेली प्रतिनिधि संख्या निकालने वाला सांख्यकीय तरीका केन्द्रीय प्रवृत्ति कहलाता हैं। केन्द्रीय प्रवृति का मापन प्रत्येक वितरण का प्रतिनिधि होने के अलावा, भिन्न वितरणों की तुलना करने में हमारी मदद करता हैं। यह मापन सामान्यतया वितरण में मूल्यों के केन्द्रीय बिन्दु, अन्तराल और घटना को बताते हैं। केन्द्रीय प्रवृति के आम प्रयोग किए जाने वाले मापन हैं :

(क) अंकगणितीय माध्य या औसत

(ख) माध्यिका

(ग) बहुलक

(क) अंकगणितीय माध्य या औसत

यह अक्सर उपयोग किया जाता है। इसकी गणना दिए गये वितरण में सभी पृथक

टिप्पणी

(मदों) मूल्यों के योग को उनकी कुल संख्या से विभाजित करने से होती है। उदाहरण के लिए पांच जिलों में प्रति एकड़ धान का उत्पादन 10, 8, 12, 9 और 6 क्विंटल है। इन जिलों के लिए धान का औसत उत्पादन है :

$$\frac{10+8+12+9+6}{5} = \frac{45}{5} = 9 \text{ क्विंटल प्रति एकड़}$$

अंकगणितीय माध्य समीकरण के रूप में नीचे अभिव्यक्त किया गया है :

जहाँ $\overline{X}$ = औसत मूल्य

X = सभी X मूल्यों का योग

N = मदों/व्यक्तियों की संख्या

अंकगणितीय माध्य आसानी से छोटे अवर्गित आंकड़े के लिए निकाला जा सकता है। तथापि, यदि मदों की संख्या ज्यादा है और आंकड़ा समूहों या वर्गों के आवृति वितरण के रूप में दिया गया हैं तो अंकगणितीय माध्य निम्नलिखित समीकरण की सहायता से निकाला जायेगा।

जहां = अंकगणितीय माध्य है,

f = आवृति है,

m = वर्गों का मध्य मूल्य है।

उदाहरण

निम्नलिखित सारिणी में दिए तापमान आंकड़े से औसत की गणना करें।

वर्ग (तापमान डिग्री C में)	**दिनों की संख्या**	**मध्य मूल्य**	
X	**f**	**m**	**fm**
1 - 05	20	3	60
06 - 10	24	8	192
11 - 15	44	13	572
16 - 20	72	18	1296
21 - 25	76	23	1748

26 - 30	60	28	1680
31 - 35	52	33	1716
36 - 40	4	38	152
41 - 45	8	43	344
	f = 360 दिन	f x = 7760	

उपरोक्त से

fm = 7760

f = 360

तापमान

माध्य के फायदे

1. इसके द्वारा पूर्ण वितरण को समझना आसान है और इसे निकालना सरल है।
2. यह वितरण में मूल्यों का औसत है। अतः नमूना सर्वेक्षणों की स्थिति में इसका संतुलनात्मक व्यवहार होता है।
3. सामान्य वितरण की स्थिति में यह काफी इस्तेमाल होता है।

$\bar{X} = \frac{\Sigma N\ 7760}{2360} = 21.50°C$

अंकगणितीय माध्य की कुछ परिसीमाएं हैं। अतिशय या चरम मूल्यों का इस पर असर पड़ता है, विशेष रूप से, जब मूल्य या मान बड़े होते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय लोगों की आय में भिन्नताएं बहुत व्यापक है।

(ख) माध्यिका

यह सर्वाधिक मध्य में स्थिति संबंधी औसत है। यह आंकड़े को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करके निकाला जाता है। उदाहरण के लिए, माध्यिका का मूल्य प्रेक्षणों की कुल संख्या में एक जोड़कर और उसके योग को दो से भाग देकर निकाला जाता है। यह निम्न रूप में व्यक्त किया जाता है :

माध्यिका

उदाहरण के लिए यदि हमें देश के लिए माध्यिका अक्षांश और देशांतर निकालने में रुचि है, तो हमें इन वितरणों को सारणी रूप में क्रमबद्ध करना होगा।

टिप्पणी

भारत के प्रधान भूभाग की अक्षांश सीमा ($8^0$4'N से $37^0$6'N)

9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30	31	32	33	34	35	36	37	

भारत का माध्यिका या सर्वाधिक मध्य अक्षांश 23^0N है जो कर्क रेखा ($23^0$30'N) के समीप है। क्योंकि भारत का प्रधान भूभाग $8^0$4' से प्रारम्भ होता है जो कि 9वें अक्षांश का भाग है और $37^0$6'N तक विस्तारित होता है जो कि 37^0 अक्षांश को पूर्णतया सम्मिलित करता है। अतः भारत के देशांतर का विस्तार लगभग 29^0 अक्षांश हैं। अतः माध्यिका अक्षांश 23^0N है अर्थात्

$$\text{माध्यिका} = \frac{N+1}{2} = \frac{29+1}{2} = \frac{30}{2} = 15$$

$8^0 + 15^0 = 23^0$ N (भारत का दक्षिणी छोर) + 15^0 (माध्यिका मूल्य) = 23^0 (भारत का मध्य पूर्वी अक्षांश)। इसी तरह से, हम भारत की देशांतरीय सीमा का माध्यिका मूल्य भी निकाल सकते हैं। भारत की देशांतरीय सीमा 68^0 7'E से 97^0 25'E तक होती है।

देश के लिए माध्यिका या सर्वाधिक मध्य देशान्तर 83^0E है।

69	70	71	72	73	74	75	76	77	78
79	80	81	82	83	84	85	86	87	88
89	90	91	92	93	94	95	96	97	

स्थानीय समय देश के मानक समय और अंतर्राष्ट्रीय समय की (ग्रीनविच मीन टाईम (जीएमटी) से जुड़ा होता है) गणना करने के लिए देशांतर का इस्तेमाल किया जाता है। भारतीय मानक समय की गणना 80^0 30' E देशांतर को आधार के रूप में रखते हुए की जाती है। देश के लिए माध्यिका देशांतर 83^0 E है जो मानक मध्यान्ह देशांतर के समीप है। इसका प्रयोग भारतीय मानक समय की गणना करने के लिए किया जाता है।

माध्यिका के गुण :

1. सर्वाधिक मध्य स्थिति होने की वजह से माध्यिका वितरण में चरम मूल्यों से अप्रभावित रहती है जैसे कि औसत की स्थिति में होता है।

2. यह विभाजन स्थिति है जो पंक्तियों को लगभग दो समान भागों में विभाजित करता है और गुरुत्व का केन्द्र बना रहता है।

3. तथापि, यह आंकड़े को बढ़ते या घटते क्रम में क्रमबद्ध किए बिना नहीं निकाला

जा सकता है। यदि आंकड़ा बड़ा है तो यह लम्बा और नीरस कर देने वाला कार्य हो सकता है। यदि एक या दो मदें पक्ति में जोड़ या घटा दी जाती है तो माध्यिका का मूल्य अनियमित हो जाता है।

(ग) बहुलक

यह केन्द्रीय प्रवृति का महत्वपूर्ण मापन तरीका है। वितरण में मदों का अधिकतम संकेन्द्रण बहुलक को निश्चित करता है। सामान्यतया अवर्गीकृत आंकड़ों में सर्वाधिक बारम्बारता वाला मूल्य बहुलक होता है। इसी तरह, वर्गबद्ध आंकड़े के लिए अधिकतम आवृति वाला वर्ग पता लगाकर बहुलक की गणना की जाती है। बहुलक वितरण में मद के अधिकतम बारम्बारता का केन्द्रीयता इंगित करता है। उत्तर प्रदेश में ग्रामीण बस्तियों का वितरण नीचे दिया गया है। आंकड़े से बहुलक निकालिए।

उत्तर प्रदेश में ग्रामीण बस्तियों का वितरण, 2001

ग्रामीण बस्तियों का आकार	बहुत छोटा 500 जनसंख्या से कम	छोटा 500-999	मध्यम 1500-1999	बड़ा 2000-4999	बहुत बड़ा 5000 और इससे ज्यादा
वितरण का अनुपात	16.69	23.46	47.97	10.59	1.29

हल : बस्तियों को उनकी जनसंख्या के आकार के आधार पर घटते क्रम या बढ़ते क्रम में लगाइये। प्रत्येक के सामने बारम्बारता लिखिए। अब बारम्बारता की तुलना कीजिए। अधिकतम बारम्बारता दर्ज करने वाला बहुलक है।

बहुलक के गुण :

1. यह वितरण का सर्वाधिक प्रतीकात्मक मूल्य होता है। बहुलक की स्थिति निरीक्षण द्वारा आसानी से पता लगाई जा सकती है। यह साधारण व्यक्ति द्वारा भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

2. कुछ चरम मूल्यों के होने से बहुलक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तथापि, यह केन्द्रीय प्रवृति का महत्वपूर्ण मापन नहीं है जब तक कि प्रेक्षणों की संख्या अधिक न हों। सामान्य और विषम, दोनों वितरणों में बहुलक केन्द्रीय प्रवृति का प्रभावकारी माप नहीं रहता है।

शतमक

यह एक मापन है जो वितरण को 100 समान हिस्सों में विभाजित करता है। वितरण में यह विभिन्न वर्गों या श्रेणियों को समझने में मदद करता है। इसे निम्न रूप से व्यक्त करते हैं :

टिप्पणी

$P = \frac{P \times 100}{N}$ अक्रमबद्ध शृंखला के लिए और

$$P_j = L_1 + \left[\frac{PjN/100 - C}{f}\right] xh$$ क्रमबद्ध शृंखला के लिए

जहां P = शतमक है और N= मदों की संख्या है।

99 शतमक होते हैं, $P_1, P_2 \ldots\ldots P_{99}$

L_1 = j वें शतमक वर्ग की निचली सीमा, यह इस वर्ग की बारम्बारता है,

C = शतमक वर्ग से पहले वर्ग की संचयी बारम्बारता है, और

h = jवें शतमक वर्ग का विस्तार या वर्ग अंतराल

f = शतमक वर्ग की बारम्बारता

एक क्षेत्र में परिवारों की मासिक आय का विवरण

	वास्तविक संख्या	प्रतिशत विवरण
आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (500 रु. से नीचे)	112	56.0
निम्न आय समूह (500 - 999)	41	20.5
मध्यम आय समूह (1000 - 4999)	29	14.5
उच्च आय समूह (5000 व अधिक)	18	9.0
कुल	200	100.0

हलः

एक क्षेत्र में परिवारों की प्रति व्यक्ति मासिक आय का विवरण

आय समूह (रुपये में)	परिवारों की संख्या (बारम्बारता)	संचयी बारम्बारता
500 से कम	112	112
500 - 999	41	153
1000 - 4999	29	182
5000 व अधिक	18	200
कुल	200	

आइये 60वें शतमक की गणना करें

अब $P_{60} = 60 \times 200 \div 100 = 120$

120 बारम्बारता आय समूह 500 - 999 में स्थित है, अतः

$L_i = 500$, $f = 41$, $C = 112$ और $h = 500$

$$P_{60} = 500 + \left[\frac{120 - 112}{41}\right] \times 500$$

$$= 500 + \left[\frac{8}{41}\right] \times 500$$

$$= 500 + 97.56$$

उत्तर = 597.56

इसका अर्थ हुआ कि मासिक आयों का 60 प्रतिशत 597.56 रुपये से नीचे है और बाकी 40 प्रतिशत इससे ऊपर है।

(iii) आंकड़े का मानचित्रांकनीय प्रस्तुतिकरण : क्षेत्र सर्वेक्षण से एकत्रित प्राथमिक आंकड़ा मानचित्रांकनीय रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। सामयिक, स्थानीय या दोनों आंकड़े का दृष्टिगत प्रस्तुतिकरण होता है। मानचित्रांकनीय प्रस्तुतिकरण का सम्बन्ध आंकड़े का ग्राफ, चित्र और मानचित्र बना करके प्रकट करने से है। आंकड़े को एक प्रकार की संख्या में रूपान्तरित कर दिया जाता है जिसे चित्रण के लिये इस्तेमाल होता है। ये चित्रण ग्राफ़ीय, ज्यामितीय या विषय प्रसंग विशिष्ट मानचित्र हो सकते हैं। यहाँ मानचित्रांकनीय प्रस्तुतिकरण के भिन्न रूपों की संक्षिप्त चर्चा दी गई है।

(क) आंकड़े का ग्राफीय प्रस्तुतिकरण : ग्राफ क्षैतिज तथा लम्बवत रेखाओं की क्रमबद्धता से सम्बंध रखता है। इसका उपविभाजन इंच या सेंटीमीटरों में होता है। यह विभाजन गणितीय तरीके से होता हैं। ग्राफ के दो अक्षों पर दोनों चरों (आंकड़ों) को दर्शाते हुए उनकी स्थिति स्पष्ट की जाती है। X अक्ष पर स्वतंत्र चर तथा Y अक्ष पर आश्रित चर प्रदर्शित किया जाता है । ग्राफ के निर्वचन और निर्माण के लिए उचित सावधानी की जरूरत होती है। सैद्धान्तिक रूप से, दृष्टिगत घटना समय के साथ बढ़ती है या घटती हुई या परिवर्तन की स्थायी प्रवृति रखती है। तथापि, अवलोकित तथ्य मिश्रित ढंग से परिवर्तन बता सकते हैं। उदाहरण के लिए, सरल रेखा ग्राफ का प्रयोग करते हुए पिछले 10 दशकों (1901 से 2001) में भारतीय जनसंख्या का दिखा सकते हैं। यद्यपि हम आंकड़े में परिवर्तन देख सकते हैं, परन्तु उनका रेखा ग्राफ पर प्रस्तुतिकरण बेहतर समझ प्रदान करता है।

तालिका 31.1: भारत में जनसंख्या की वृद्धि, 1901 - 2001

(जनसंख्या, मिलियन व्यक्तियों में)

वर्ष	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991	2001
जनसंख्या	1238.3	1252.0	251.3	278.9	318.6	361.0	439.2	548.1	685.1	846.3	1028.73

टिप्पणी

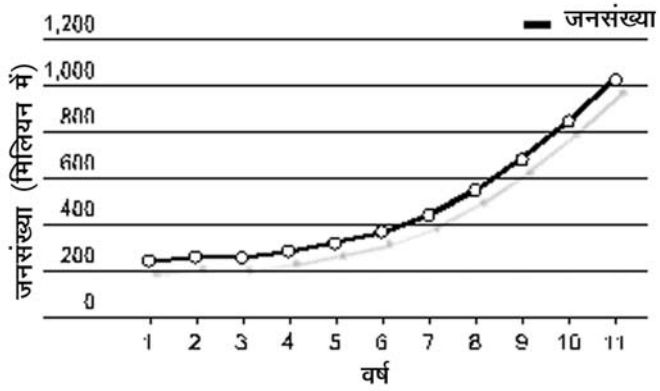

चित्र 31.1 भारत में जनसंख्या में वृद्धि (1901 - 2001)

(ख) मिश्रित ग्राफ : इन ग्राफों का प्रयोग एक ही समय पर दो या ज्यादा आश्रित मात्राओं को दर्शाने के लिए किया जाताऽहै। वक्र द्वारा भिन्न मात्राएं एक दूसरे के ऊपर संचयी ढंग से क्रमबद्ध अधिरोपित की जाती हैं। उदाहरण के लिए पुरुष और महिला जनसंख्या या ग्रामीण और शहरी जनसंख्या को मिश्रित ग्राफ द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसी तरह तीन या चार खण्डों वाले चरों को भी मिश्रित ग्राफ द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, ऊर्जा उत्पादन (उष्मा, जलीय और नाभिकीय/आणविक), प्रवास धाराएं (ग्रामीण–ग्रामीण, ग्रामीण–शहरी, शहरी–ग्रामीण और शहरी) तथा जनसंख्या की धार्मिक संरचना (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जैन, बौद्ध इत्यादि) चर के भिन्न खण्ड प्रतिरुपित करते हैं।

तालिका 31.2 भरत की जनसंख्या का लिंग अनुपात

(जनसंख्या मिलियन में)

वर्ष	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991	2001
पुरुष	120.9	128.3	128.5	142.9	163.7	185.5	226.2	284.2	354.3	439.2	532.1
महिला	117.4	123.7	122.7	135.9	154.9	175.5	212.9	264.1	307.0	407.1	496.4

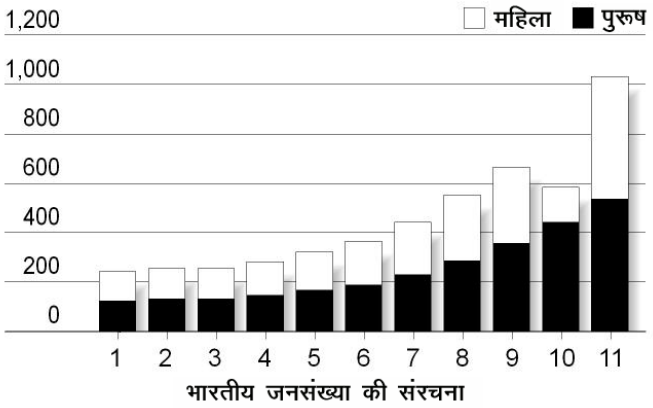

टिप्पणी

(ग) आरेखी प्रस्तुतिकरण : आरेख ग्राफी और ज्यामितीय दोनों प्रकार के हो सकते हैं। प्रक्रिया के बाद आंकड़े को दृष्टिगत प्रस्तुतिकरण के लिए भिन्न चित्रों के द्वारा दर्शाया जाता है। चित्रों को दृष्टिगत प्रस्तुतिकरण के गुणों के आधार पर प्रयोग करना महत्वपूर्ण है। चित्र अधिकांशतः किसी स्थानिक स्थिति या समय या दोनों विशेषताओं से संबंध रखते हैं। प्राथमिक आंकड़े के प्रस्तुतिकरण के लिए प्रयोग किए जाने वाले कुछ चित्रों की चर्चा नीचे की गई है :

(i) दण्ड आरेख : विभिन्न इकाइयों की तुलनात्मक जानकारी और इकाई की वृद्धि को बताने के लिए दण्ड आरेख बहुत प्रचलित है। दण्डे की लम्बाई, उत्पादन के आकार या परिवर्तन की मात्रा के आनुपातिक रखी जाती है। अतः दण्ड आरेख एक निश्चित समय पर बहुत से तत्वों और समयोपरि एक तत्व में परिवर्तन बताने के लिए प्रयोग किया जाता है। मिश्रित दण्ड आरेख एक तत्व के उप–वर्गों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

(ii) पाई आरेख : पाई आरेख को विभाजित वृत भी कहते हैं। यह सम्पूर्ण की उप–इकाइयों का अनुपात प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। वृत के भिन्न खंडांश, कुल योग की तुलना में उसका मान प्रतिशत में बतलाता है पाई आरेख खींचने के लिए वृत का व्यास निकालते हैं। तत्पश्चात मदों की संख्या एवं उनकी मात्रा के अनुसार वृत को विभाजित कर देते हैं। अर्थात् 360 डिग्री का कोण 100 प्रतिशत दर्शाता है। पाई आरेख सामान्यतया गांव के सामान्य भूमि उपयोग, शहरी क्षेत्रों की प्राकार्यात्मक रूपरेखा में दुकानों की बनावट, सर्वेक्षित गांव की सामाजिक बनावट, कुल जनसंख्या की बनावट बताने के लिए किया जाता है।

(घ) मानचित्रों द्वारा आंकड़े का प्रस्तुतिकरण : प्राथमिक आंकड़ों की मदद से विभिन्न प्रकार के मानचित्र बनाये जा सकते हैं। विभिन्न विषय प्रसंग, जैसे वातावरण, व्यापार, भूमि उपयोग, उत्पादन, सामुदायिक जनसंख्या इत्यादि से सम्बन्धित मानचित्र प्रस्तुतिकरण के लिए खींचे जा सकते हैं। पृथ्वी के कुछ भाग या सम्पूर्ण का, समतल सतह या कागज के टुकड़े पर, आनुपातिक प्रस्तुतिकरण मानचित्र कहलाता है। अतः, खाका मानचित्र क्षेत्र पर दिशा, दूरी और क्षेत्र का आकार प्रदर्शित होता है, जबकि मानचित्रों पर आंकड़ों के प्रस्तुतिकरण की तकनीक वितरण सम्बन्धी विशेषताएं स्पष्ट करती है। बिन्दु मानचित्र बनाने की विधि, उदाहरण के तौर पर, नीचे दी गई है–

बिन्दु मानचित्र : यह मानचित्र किसी घटना के फैलाव और संकेन्द्रण प्रवृतियां (वितरण की विशेषताएं) दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है। बिन्दु मानचित्र वितरण के बिन्दु विशिष्ट से सम्बन्ध रखते हैं। सममान मानचित्र पर समान मूल्य रखने वाले सभी स्थानों को जोड़ने से सम्बन्धित है। वर्णमात्री मानचित्र स्थान विशिष्ट वितरणों के बजाय क्षेत्र विशिष्ट वितरणों से संबंधित है।

यह मानचित्र स्थान विशिष्ट आंकड़े का वितरण दर्शाता हैं। बिन्दु का आकार तथा संख्या मानचित्र पर स्थान की क्षमता को ध्यान में रखते हुए बनाए जाते हैं। बिन्दु का

टिप्पणी

परिमाणात्मक रूप से एक बिन्दु का मूल्य निर्धारित किया जाता है। एक बार बिन्दु का मूल्य निर्धारित हो जाता है, तो प्रत्येक स्थान पर बिन्दुओं की संख्या का हिसाब लगाया जा सकता है। मानचित्र पर बिन्दुओं को प्रदर्शित किया जाता है। इसके लिए विभिन्न चरों के वितरण मानचित्र का भी सहारा लिया जाता है। मानचित्र पर बिन्दु बनाते समय उपयुक्त ध्यान रखने की जरूरत होती है।

परिवहन रेखाएं, नदियां और नहरें, पर्वत शिखर और ऐसे अन्य ऋणात्मक क्षेत्रों पर बिन्दु डालने से बचना चाहिये। अंततः मानचित्र वितरण का संकेन्द्रण और छितराव स्पष्ट रूप से बताता है। जनसंख्या, कृषि उत्पादन, दुकान अनुसार दैनिक बिक्री या उपभोक्ता प्रतिरूप, इकाई अनुसार औद्योगिक उत्पादन या खेत के अनुसार फसल का वितरण बिन्दु मानचित्रों द्वारा बेहतर बताया जा सकता है।

ज्यादा विवरण के लिए आप भूगोल की प्रायोगिक–पुस्तिका पढ़ सकते हैं।

- आंकड़े को बढ़ते हुए (नीचे से ऊपर) या घटते हुए (ऊपर से नीचे) व्यवस्थित करना आंकड़े का क्रम विन्यास कहलाता है।
- दो समूहों के आंकड़े को स्तम्भ और पंक्ति में डालकर उनके योग जांचने की प्रक्रिया आंकड़ों की आंतरिक समानता कहलाती है।
- एक जैसा आंकड़ा दिखाने वाला विवरण का समूह आंकड़े का प्रवाह कहलाता है।
- एक विशेष वस्तु या एक समूह से सम्बन्धित आंकड़े का सेट क्षेत्र कहलाता है।
- सभी मूलभूत आंकड़ा दिखाने वाली जानकारी का पूर्ण सेट मास्टर चार्ट कहलाता है।

पाठगत प्रश्न 31.2

1. निम्नलिखित कथनों के लिए एक शब्द दीजिए।

   (क) कुछ विशेषताओं के आधार पर आंकड़े को समूहों या वर्गों में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया।

   (ख) दो या ज्यादा चरों को, अधिरोपित करते हुए या संचयी तरीके से ग्राफ बनाने की विधि।

   (ग) किसी आधार पर आंकड़े का समूहीकरण।

   (घ) श्रृंखला को समान 100 भागों में विभाजित करने वाला मापन।

   (ङ) वितरण के बिन्दु विशिष्ट प्रतिरूप से सम्बधित मानचित्र।

2. निम्नलिखित शब्दों का कथनों से मिलान करें

शब्द		**कथन**
(क) आंकड़े का क्रम	(1)	व्यक्ति जिससे प्रश्नावली में से प्रश्न पूछे जाते हैं।
(ख) आंकड़े की आंतरिक समानता	(2)	जिसमें सभी मूलभूत आंकड़े वाला पूर्ण सेट।
(ग) चार्ट	(3)	आंकड़े को बढ़ते हुए (नीचे से ऊपर) या घटते हुए (ऊपर से नीचे) व्यवस्थित करना
(घ) उत्तरदाता	(4)	दो समूहों का योग जानने के लिए जानकारी को कॉलम और पंक्तियों में रखना।

3. आंकड़ा प्रस्तुतिकरण के तीन रूप बताइए।

(क)_____ (ख)_____ (ग)_____

4. मानचित्रांकनीय प्रस्तुतिकरण के तीन रूप लिखिए।

(क)_____ (ख)_____ (ग)_____

5. निम्नलिखित शब्दों को परिभाषित करें

(क) पाई आरेख

(ख) माध्यिका

(ग) आंकड़े की कोडिंग

(घ) मास्टर चार्ट

31.4 जानकारी की व्याख्या करना

लिखित सम्प्रेषण के लिए जानकारी/आंकड़े की व्याख्या करना अहम है। यह निश्चित तथ्यों का युक्तियुक्त स्पष्टीकरण प्रदान करने के लिए निश्चित आंकड़े/जानकारी को लिखित या मौखिक रूप में अभिव्यक्त करने की कला है। जानकारी की व्याख्या करने के समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(i) व्याख्या की स्पष्टता और सुव्यक्तता,

(ii) सामान्य और विशिष्ट विशेषताओं का पृथक्कीकरण,

(iii) प्रारम्भ में ही केन्द्र बिन्दु को स्पष्ट कर देना चाहिए,

टिप्पणी

(iv) तथ्यों को क्रमानुसार संगठित करना चाहिए,

(v) तथ्यों की यथार्थता की जाँच करनी चाहिए।

(I) सारिणी की व्याख्या : सारिणी तथ्यों की सुसम्बद्धित क्रमबद्ध व्यवस्था है। यह प्रक्रियात्मक ढंग से आंकड़े का संक्षिप्त रूप है। सारिणी की व्याख्या आंकड़ों में न्यूनतम और अधिकतम मूल्य अर्थात् आंकड़ों में प्रसार को जानने के साथ प्रारम्भ होना चाहिए। इन दो मूल्यों में अन्तर तुलनात्मक रूप से छोटा या बड़ा स्पष्ट करता है। प्रसार जितना छोटा होगा विचलन उतना छोटा और वितरण संकेन्द्रित रूप में होगा। इसके विपरीत, यदि प्रसार बड़ा है, तो व्याख्या बदल जाएगी क्योंकि वितरण में बिखराव ज्यादा होगा। सारिणी के व्याख्या में दूसरा सोपान विभिन्न वर्गों और उनकी आवृत्तियों के विश्लेषण से सम्बन्ध रखता है। सारिणी के विश्लेषण में तीसरा सोपान निष्कर्ष से सम्बद्धित होता है। यह स्पष्ट रूप से दिखाना चाहिए कि सारिणी से क्या सामान्यीकरण उभर कर आते हैं।

(II) ग्राफ की व्याख्या : ग्राफ भिन्न प्रकार के होते हैं और उनकी व्याख्या एक दूसरे से काफी भिन्न होती है। व्याख्या बहुत सावधानी से करनी चाहिए। मोटे तौर पर, ग्राफ सम्बन्धी व्याख्या दो प्रकार के होते हैं। पहले प्रकार की व्याख्या समय या क्षेत्रीय या दोनों के सम्बन्ध में परिवर्तन की मात्रा से है। ग्राफ सम्बन्धी व्याख्या का दूसरा आयाम प्रवृति है। यह कुल प्रवृति और बिन्दु विशिष्ट प्रवृति में विभाजित किया जाता है।

(III) आरेख की व्याख्या : प्रत्येक आरेख के प्रस्तुतिकरण का उसका अपना फायदा है। इसकी व्याख्या दर्शाए गए चरों के सम्बंध में की जानी चाहिए। आरेख चरों के भिन्न स्तरों की व्याख्या करता है, यथा उच्च, मध्यम, निम्न, बहुत निम्न इत्यादि। प्रत्येक घटक की व्याख्या स्पष्ट रूप से की जानी चाहिए। विभिन्न समय या स्थानों में चर के बदलाव को समझाया जाना चाहिए।

(IV) मानचित्रों की व्याख्या : मानचित्रों की व्याख्या किसी घटना के क्षेत्र विशिष्ट विशेषताओं से संबंध रखती है। यह समय, तीव्रता और समुदाय के सम्बन्ध में हो सकता है। चर के वितरणीय विशेषताओं की व्याख्या की जानी चाहिए। यह वितरण की मात्रा और क्षेत्र दोनों को प्रदर्शित करता है। ऐसे वितरण के लिए जिम्मेदार कारक का युक्तियुक्त स्पष्टीकरण देना चाहिए।

- जानकारी की व्याख्या करते समय कुछ बातें ध्यान रखनी चाहिए। ये बातें हैं—स्पष्टता, सुव्यक्तता, सामान्य और विशिष्ट विशेषताओं का पृथक्करण केन्द्र बिन्दु, तथ्यों का संगठन और उनकी यथार्थता।
- आंकड़े की प्रक्रिया के बाद उसकी व्याख्या माध्यम के अनुसार भिन्न–भिन्न होता है। उदाहरण के लिए सारिणी की व्याख्या, आरेख, ग्राफ और मानचित्रों की व्याख्या से भिन्न होती है।

टिप्पणी

31.5 क्षेत्र रिपोर्ट और उसका स्वरूप तैयार करना

क्षेत्र से एकत्रित किए गए तथ्यों और आंकड़े की सामान्यीकरण और मूलभूत निष्कर्षों की लिखित व्याख्या क्षेत्र रिपोर्ट होती है। यह रिर्पोटें व्यापक तथा प्रयोजन मूलक ज्ञान के लिए इस्तेमाल की जाती है। विभिन्न विकासी योजनाओं का क्रियान्वयन रिपोर्ट में दिए निष्कर्षों, सुझावों और सिफारिशों के आधार पर किया जाता है। चूंकि रिपोर्ट निर्णय लेने का आधार होती हैं, अतः उसे व्यापक और धरातलीय सच्चाई को प्रतिबिम्बित करने में सक्षम होना चाहिए। क्षेत्र रिपोर्ट निम्नलिखित घटकों के आधार पर तैयार करना चाहिए :

(क) परिचय : क्षेत्र रिपोर्ट लिखने में पहला सोपान उसका परिचय है। परिचय में क्षेत्र सर्वेक्षण की समस्या और उसके उद्देश्यों का विवरण समाविष्ट रहता है। क्षेत्र कार्य फील्ड वर्क की कार्यविधि और फील्ड सर्वे के क्षेत्र की सामान्य पृष्ठभूमि की योजना बतानी होती है। प्रतिदर्शों/सैम्पलों और चरों का चयन, परिकल्पना, प्राथमिक आंकड़े की प्रक्रिया और प्रस्तुतिकरण कार्यविधि के ही भाग हैं। परिचय का अंतिम भाग रिपोर्ट का विषय क्षेत्र और योजना की चर्चा करना है।

(ख) विश्लेषण : वैज्ञानिक तथा तर्कपूर्ण प्रायोजना (प्रोजेक्ट) बनाने में जो अंतर्दृष्टि और श्रम लगा होता है उसके आधार पर रिपोर्ट का महत्व होता है। रिपोर्ट का विश्लेषण कई अध्यायों में उप–विभाजित कर दिया जाता है। तथापि, इन अध्यायों का क्रम सुनियोजित पद्धति का अनुपालन करता है जैसे (1) अनुसन्धान के विषय प्रसंग, (2) अनुसंधान के प्रसंग से सम्बन्धित प्रवृतियां और प्रतिरूप (दोनों कालसूचक और स्थानिक), (3) अध्ययन की जाने वाली समस्या पर असर डालने वाले कारक का सहसम्बन्ध, (4) रुकावटें और सम्बंधित समस्याएं, और (5) निष्कर्ष और सुझाव। प्रत्येक अध्याय में आंकड़ों की प्रक्रिया से निकले तथ्यों का तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक विश्लेषण होता है। आंकड़ों की प्रक्रिया में सारणीय और मानचित्रांकनीय प्रस्तुतीकरण दिया जाता है। साथ ही अनुसंधानकर्ता की व्यक्तिगत धारणाएं भी दी जाती है, जिसे क्षेत्र कार्य के दौरान संग्रहण करता है।

(स) परिणाम और सिफारिशें : क्षेत्र रिपोर्ट का तीसरा और सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग परिणाम निकालने और सिफारिशों से सम्बधित है। प्रत्येक अध्याय में जो सामान्य निष्कर्ष दिए गए, उन्हें इकट्ठा करके विशिष्ट निष्कर्षों में डाला जाता है। सुझावों को ज्यादा अर्थपूर्ण बनाने के लिए रुकावटों और सम्भावित समस्याओं को सुलझाना चाहिए। सर्वेक्षण के पूरे विषय प्रसंग का व्यक्तिगत तौर पर (चरों के स्तर पर) और सामहिक तौर पर (ग्रुप के स्तर पर) विश्लेषण कर लेने के बाद विशिष्ट निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। सिफारिशें इन्हीं निष्कर्षों (परिणामों) पर आधारित होना चाहिए। समस्याओं के दोनों पहलुओं, मूलभूत और प्रकार्यात्मक को सिफारिशों में समाविष्ट करना चाहिए। सिफारिशें तैयार करने से पहले उनकी अर्थक्षमता और सम्भाव्यता का मूल्यांकन करना अपेक्षित है। समस्या का जितना ज्यादा छोटा और विशिष्ट आयाम

टिप्पणी

होता है, सिफारिश उतनी ज्यादा कार्यक्षम और अर्थक्षम होती है। इसी तरह से सिफारिशों की व्यवहारिकता का मूल्यांकन उपलब्ध प्रौद्योगिकीय, वित्तीय और सामाजिक फलितार्थों के प्रकाश में करना चाहिए। रिपोर्ट में अस्पष्ट और गोलमोल सिफारिशों से बचना चाहिए। अतः, परिणाम और सिफारिशें विद्यमान समस्याओं के हल खोजने और विकास की गति को त्वरित करने से जुड़ी होनी चाहिए।

क्षेत्र रिपोर्ट का स्वरूप

यहाँ ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सभी क्षेत्र रिपोर्टें बहुत सी बातों में विशेष होती है। तथापि, कुछ स्वरूप सभी रिपोर्ट के लिए सामान्य होते हैं। सामान्य विशेषताओं के आधार पर, यह खुलासा किया जा सकता है कि क्षेत्र रिपोर्ट में मुख्यतः तीन भाग होते हैं, यथा (क) पूर्व प्रारंभिक भाग परीक्षा, (ख) मूलवस्तु का पूरा भाग, (ग) प्रलेखन।

(अ) **प्रारंभिक भाग :** इनमें शीर्षक पृष्ठ, प्राक्कथन, प्रकरणों की सारिणी, सारिणीयों की सूची, मानचित्रों और चित्रों की सूची और परिशिष्टों की सूची होती है।

उदाहरण :

[क्षेत्र रिपोर्ट व शीर्षक]

[क्षेत्र रिपोर्ट की मूल वस्तु और सर्वेक्षण की अवधि]

[अनुसंधानकर्ता का नाम/पता]

[परियोजना के पर्यवेक्षक का नाम]

[संस्था या संगठन का नाम]

[प्रस्तुति की तिथि]

(ब) **मूल वस्तु का पूरा भाग :** इसमें परिचय से निष्कर्षों और सिफारिशों तक का भाग शामिल है।

अध्याय योजनाः

(1) परिचय

(क) समस्या का विवरण

(ख) क्षेत्र कार्य के उद्देश्य

(ग) प्रयुक्त कार्यविधि

टिप्पणी

(i) अध्ययन का समग्र

(ii) प्रतिदर्शों (नमूनों) का चयन

(iii) प्रस्तावित परिकल्पना

(iv) आंकड़ों की प्रक्रिया विधियां

(घ) अध्ययन का कार्यक्षेत्र एवं योजना

(2) अनुसन्धान के विषय प्रसंग की सरंचना या प्रकृति

(3) अध्ययन की समस्या के स्थानिक और समयानुसार प्रवृतियां। यह अध्याय क्षेत्र विशिष्ट प्रतिरूपों और काल सम्बन्धी प्रवृतियों की समझ से सम्बंध रखता है।

(4) अनुसंधान की समस्या के सहसम्बंध—यह प्रवृतियों और प्रतिरूपों के लिए जिम्मेदार कारकों के विश्लेषण से सम्बंध रखता है।

(5) अनुसंधान के विषय प्रसंग की रूकावटें—प्रत्येक क्षेत्र से जुड़ी कुछ मूलभूत और प्रकार्यात्मक समस्याएं होती हैं। इस अध्याय में इन समस्याओं का अध्ययन समाविष्ट है।

(6) निष्कर्ष, सुझाव और सिफारिशें—इस अध्याय में जाँच परिणामों को संक्षिप्त किया जाता है, सुझाव दिए जाते हैं और विकास के लिए सिफारिशें प्रस्तुत की जाती हैं।

(स) **प्रलेखन :** इसमें/संदर्भ—पुस्तक, चयनित पुस्तकतालिका, परिशिष्ट, शब्दावली इत्यादि शामिल रहता है।

पाठगत प्रश्न 31.3

(1) क्षेत्र रिपोर्ट में समाहत होने वाले तीन मुख्य बिन्दु बताइये।

(क)_____(ख)_____(ग)_____

(2) क्षेत्र रिपोर्ट की अध्याय योजना की सात बातें बताएं

_____

आपने क्या सीखा

क्षेत्र से एकत्रित किया गया आंकड़ा बहुत विशाल और अपरिष्कृत होता है। क्षेत्र में सर्वेक्षण करते समय कुछ चीजों का सर्वेक्षण छूट जाता है। इसलिए आंकड़ा असमान

टिप्पणी

हो जाता है। अतः, आंकड़ों का उचित प्रक्रिया करना आवश्यक हो जाता है। आंकड़े की प्रक्रिया से जुड़े भिन्न सोपान हैं—सम्पादन करना, कोडिंग करना, संगठित और वर्गीकरण करना, तभी आंकड़े प्रस्तुत करने लायक बन पाते हैं। आंकड़े का प्रस्तुतिकरण सारणीयन, सांख्यकीय और मानचित्रांकनीय रूप में हो सकता है। सारणीयन, प्रस्तुतिकरण इस्तेमाल किए चरों के आधार पर सरल या जटिल हो सकता है। सांख्यकीय प्रस्तुतिकरण में केन्द्रीय मूल्य ज्ञात करने के लिए माध्य, माध्यिका और बहुलक का इस्तेमाल किया जाता है। शतमकों का प्रयोग घटना के वितरण का विवरण देने लिए किया जाता है। आंकड़े का मानचित्रांकनीय तकनीक द्वारा प्रस्तुतिकरण भिन्न तरीके से किया जाता है जैसे ग्राफ, चार्ट, आरेख, मानचित्र इत्यादि।

दो चरों को रेखा ग्राफ द्वारा आसानी से प्रतिरूपित किया जा सकता है। दण्ड आरेख को भिन्न इकाइयों की तुलना करने के लिए प्रयोग किया जाता है। मिश्रित दण्ड आरेख किसी तत्व को आनुपातिक रूप से प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। प्राथमिक आंकड़े की मदद से भिन्न प्रकार के मानचित्र खींचे जाते हैं। बिन्दु मानचित्र सर्वाधिक प्रचलित मानचित्र है। बिन्दु मानचित्र तत्व का वितरण दर्शाता है। यह तत्व का संकेन्द्रण और बिखराव दर्शाता है। मानचित्र पर सममान रेखा द्वारा घटना का वितरण दशार्या जाता है। इस मानचित्र पर समान मानों के बिन्दुओं को वक्र रेखा द्वारा संयुक्त किया जाता हैं। मानचित्र शेडिंग विधि द्वारा भी वितरण प्रदर्शित किए जाते हैं।

जानकारी की व्याख्या करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाता है। स्पष्टता और सुव्यक्तता, सामान्य और विशेष विशेषताओं का पृथक्करण, केन्द्र बिन्दु को उल्लेखित करना, सामग्री को छोटे पैराग्राफों में संगठित करना और तथ्य पूरे और ठीक व सटिक होने चाहिए।

रिपोर्ट क्षेत्र कार्य का सर्वाधिक महत्वपूण घटक है। कार्य और एकत्रित आंकड़ों से निकले निष्कर्ष को उल्लेखित करता हुआ लिखित प्रलेख रिपोर्ट होता है। रिपोर्ट विस्तृत तथा धरातलीय सच्चाई को प्रस्तुत करना चाहिए। यह, परिचय, विश्लेषण, परिणाम और सिफारिशों के अनुपूर्व क्रम में लिखी जानी चाहिए।

पाठांत प्रश्न

1. आंकड़े एकत्रीकरण क्या है? कोई तीन मुद्दो का वर्णन करें जो कि स्थानीय क्षेत्र नियोजन के लिए जरूरी हो।

2. आंकड़े एकत्रीकरण के उपकरण और तकनींकें कौन सी हैं?

3. क्षेत्रीय आंकडे को संगठित करने में आंकड़े का क्रम विन्यास और आंकड़ों की आंतरिक समानता करना क्यों आवश्यक है? अपने उत्तर की पुष्टि में कोई तीन कारण दीजिए।

टिप्पणी

4. प्राथमिक आंकड़े की प्रक्रिया में कोई तीन सोपानों को स्पष्ट कीजिए।

5. जानकारी की व्याख्या करते समय कौन–सी बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

6. क्षेत्र रिपोर्ट तैयार करने से सम्बंधित अवयवों का संक्षिप्त विवरण दें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

1. (क) प्राथमिक आंकड़े

   (ख) द्वितीयक आंकड़े

   (ग) आंकड़ा एकत्रीकरण के उपकरण

   (घ) आंकड़ा एकत्रीकरण की तकनीकें

   (ङ) प्रश्नावली

2. (क)

   (i) क्षेत्र से आंकड़े एकत्रित करने के लिए अपने को तैयार करना।

   (ii) क्षेत्र पुस्तिका/रिकार्ड पुस्तिका/डायरी रखना।

   (iii) लक्ष्य वर्ग से प्रश्नावली/अनुसूची में से प्रश्न पूछना।

   (ख) (i) आंकड़े का रिकार्ड रखने वाले कार्यालयों/संस्थाओं इत्यादि के बारे में जानकारी अर्जित करना।

   (ii) कार्यालय में प्रवेश पाने के लिए कार्यालय से पत्र लेना और परिचय पत्र रखना।

   (iii) आंकड़े को हस्तान्तरित करने के लिए नोट बुक/रिकार्डों की फाइल रखना।

3. (क) – (4), (ख) – (3), (ग) – (1) और (घ) – (2)

4. (क) विशिष्ट विषय वस्तु की पहचान करना

   (ख) उत्तरदाता विशिष्ट विषय वस्तु

5. (क) नमूना/प्रतिदर्श ऐसा होना चाहिए जो समग्र की विशेषाएं प्रतिबिम्बित करें।

   (ख) प्रतिदर्श बिल्कुल एक समान नहीं होना चाहिए अन्यथा यह त्रुटि की ओर ले जाता है।

टिप्पणी

31.2

1. (क) आंकड़े का वर्गीकरण
   (ख) मिश्रित ग्राफ
   (ग) आंकड़े का वर्गीकरण
   (घ) शतमक
   (ङ) बिन्दु मानचित्र
2. (क) – (3), (ख) – (4), (ग) – (2), (घ) – (1)
3. (क) सारणीयन, (ख) सांख्यकीय और (ग) मानचित्रांकनीय
4. (क) ग्राफी, (ख) चित्रमय और (ग) मानचित्र
5. (क) वृत्त के अन्दर किसी तत्व के उप–समूहों के हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाला आरेख।
   (ख) बंटन में सर्वाधिक मध्य स्थान
   (ग) चिन्हों के रूप में कोई वर्णानुक्रम या संख्या या दोनों निर्दिष्ट करना
   (घ) सारे मूलभूत आंकड़े दर्शाता हुआ जानकारी का पूर्ण समूह।

31.3

1. (क) प्रारंभिक भाग
   (ख) मूलवस्तु का पूरा भाग
   (ग) प्रलेखन
2. (i) परिचय
   (ii) अनुसंधान के विषय प्रसंग की संरचना या प्रकृति
   (iii) अध्ययन की समस्या के स्थानिक और समयानुसार प्रवृतियां
   (iv) आंकड़े का स्रोत और कार्यविधियां
   (v) अनुसंधान की समस्या के सह–सम्बन्ध
   (vi) अनुसंधान के विषय प्रसंग की रुकावटें
   (vii) निष्कर्ष, सुझाव और सिफारिशें

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

(1) अनुच्छेद 31.1 देखिए
(2) अनुच्छेद 31.2 देखिए
(3) अनुच्छेद 31.3 देखिए
(4) अनुच्छेद 31.3 देखिए
(5) अनुच्छेद 31.4 देखिए
(6) अनुच्छेद 31.5 देखिए

टिप्पणी

31

पर्यटन के बुनियादी ढांचे का विकास और पर्यटन की वृद्धि

भारत ने, विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बना लिया है। क्योंकि देश में सर्वत्र फैले पर्यटक स्थलों की विविधता के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने की उनमें अपार सामर्थ्य है। फिर भी हम अपने पड़ोसी देशों जैसे चीन, सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैण्ड से अब भी पीछे हैं।

इस पाठ में हम परिवहन तंत्र जैसी सुविधाओं के विकास और होटलों में आवास स्थान और पर्यटन के बीच सम्बन्ध की चर्चा करेंगे।

पर्यटन के संचालन में हम प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं जैसे पर्यटक गाइड और टुअर के स्थान के सम्बन्ध में विभिन्न स्तर पर, कर्तव्यों का भी अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- परिवहन जाल की व्यवस्था करने की अधिकाधिक आवश्यकता पर पर्यटन के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे;
- पर्यटकों के लिए आवश्यक सुख–सुविधाओं का आयोजन करने के लिए होटलों, रेस्तरां और आथित्य सत्कार सेवाओं के आधारिक ढांचे की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- स्थानीय व लम्बी दूरी के परिवहन के रूप और पर्यटन के बीच सम्बन्ध स्थापित कर उसके महत्व को स्पष्ट कर पाएंगे;

टिप्पणी

- पर्यटक गतिविधि को बढ़ाने के लिए टुअर गाइडों और टुअर परिचालकों की उपयोगिता का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- ट्रैवल एजेन्सी के कार्यकर्ताओं के रूप में टुअर गाइडों और टुअर परिचालकों की व्यक्तिगत स्तर और समूह स्तर पर भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे;
- टुअर परिचालन की मौसम विशिष्टता और गंतव्य विशिष्टता के बीच अन्तर कर सकेंगे।

31.1 परिवहन और पर्यटन

परिवहन, पर्यटक उद्गम और गंतव्य के स्थानों के बीच पुल का काम करता है। यह, अपने पर्यटक स्थानों तक पहुंच प्रदान करके, क्षेत्र को बाहर के लिए खोल देता है। इसके बिना पर्यटन के संसाधन चाहे जितने भी आकर्षक और सुख–सुविधाओं से युक्त हों, किसी लाभ के नहीं हो सकते हैं। हम किसी एक क्षेत्र में परिवहन प्रणाली को संगठित किये बिना, पर्यटन के नियोजन की बात नहीं कर सकते हैं। इस प्रणाली के अंतर्गत, मार्गों का जाल या परिवहन के साधनों और परिवहन का तन्त्र आता है। पहले वर्ग में हवाई तथा समुद्री मार्ग आते हैं। अंतर्देशी मार्गों में सड़कें और रेल मार्ग आता है। परिवहन के रूप वायुयान, जहाज, स्टीमर, कारें, टैक्सी, आरामदायक गाड़ियां, बसें, और रेलगाड़ियां आती हैं। टैक्सी, कारें, ऑटोरिक्शा, तांगा, मोपेड, साइकिल और ट्रामें विशेष रूप से स्थानीय परिवहन के रूप में महत्वपूर्ण हैं। यह शहर में यात्रीयों को हवाई अड्डों, बसस्टैंडों, या रेलवे स्टेशनों से होटलों और पर्यटक स्थलों तक लाने के लिये होते हैं। अधिक ऊंचाइयों पर पर्यटक क्षेत्रों में, शायद आप को रस्सी मार्ग और बिजली चालित ट्रॉलियां, टहू या तांगा सवारी और पाल नावें मिल जाएंगी।

यदि देश में, उसके बड़े और छोटे तंत्रों दोनों में वैकल्पिक परिवहन सुविधाओं के सभी संभावित प्रकार मौजूद हैं तो, पर्यटन सर्वाधिक आकर्षक हो जाता है। राष्ट्रीय महामार्ग और राज्य महामार्ग राष्ट्रीय नेटवर्क बनाते हैं। ये भारत के मुख्य परिवहन गतिविधि केन्द्रों के बीच कड़ी प्रदान करते हैं। पर्यटक क्षेत्र के अन्दर मुख्य मार्गों और नोडल नगरों के बीच परिवहन व्यवस्था का परिसंचरना क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण करता है। यह क्षेत्रीय स्तर पर छोटा तन्त्र है। सर्वाधिक छोटे तन्त्र के अंदर पर्यटकों की परिवहन सम्बन्धी जरूरतों की देखभाल करने के लिये निजी यात्रा संगठनों की निचले स्तर पर बड़ी भूमिका होती है। पर्यटक को केवल पर्यटक क्षेत्र तक पहुंच ही आवश्यकता नहीं अपितु उसकी पहुँच कम खर्चे पर, कम समय में और आरामदेय होनी चाहिए। उदाहरण के लिये, जब कभी पर्वतीय क्षेत्रों या खराब मौसम के कारण परिवहन व्यवस्था ठप्प हो जाती है, तो पर्यटकों के लिये परिवहन की वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए।

यदि परिवहन के विभिन्न साधनों को विभिन्न मार्गों तथा छोटे बड़े पर्यटक स्थलों के बीच अच्छा तालमेल है तो ये पर्यटन की अनुकूल दशाओं में शामिल है। आजकल, परिवहन प्रणाली की क्षमता ही पर्यटक आवागमन का आकार और आने–जाने वाले पर्यटकों की

टिप्पणी

संख्या निर्धारित करती है। परिवहन प्रणाली की क्षमता में वृद्धि के अलावा, आरामदेय सीटें, अपेक्षित तीव्र गति और रेल, रोड और हवाई किरायों में रियायतें प्रोत्साहन बनते जा रहे हैं। ये पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करते हैं और बदले में अधिक आय प्राप्त होती हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि पर्यटक, अपने कुल व्यय का लगभग 40% मात्र भ्रमण पर खर्च करके अपनी आय हमें हस्तांतरित करते हैं।

क. वायु परिवहन

वायुयान पर्यटकों को लम्बी दूरियों तक ले जाते हैं। आज भारत में लगभग 97% अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक हवाईमार्ग द्वारा आते हैं। देश के अन्दर, उनमें से 82% वायुयान द्वारा यात्रा करते हैं, जबकि समुद्री मार्ग से 11% और स्थल मार्गों से 7% यात्रा करते हैं। लदंन और न्युयार्क के बीच, सन् 1920 में समुद्री सफर में 120 घण्टे लगते थे। आज आधुनिक जेट वायुयान सिर्फ 6 घण्टे लेते हैं। यह वायुयान सामान्यतः प्रतिघंटा लगभग 1000 कि.मी. की रफ्तार से उड़ते हैं। वे आवाज की अधिकतम रफ्तार प्रति घंटा 1194 कि.मी. पर उड़ान भरने में सक्षम हैं। यह भू–मंडलीय पर्यटन के लिये प्राथमिक महत्व के हो जाएंगे क्योंकि उनकी यात्री उठाने की क्षमता अत्यधिक विशाल है और बिना रुके उड़ानों के दौरान तेज रफ्तार होती है।

रियायतों या आसानी से संचालन योग्य पास के रूप में किराये में कटौती भिन्न आयु समूहों को दी जाती है। पर्यटन के दृष्टिकोण से मंद अवधि और चोटी की अवधि में भिन्न तरह से किराया लिया जाता है। यह सक्रिय पर्यटन को बढ़ाने में काफी मदद करता है।

धनी देशों से उच्च वर्ग के यात्री, जो ज्यादातर व्यापारिक पर्यटकों के रूप में आते हैं, भारत के अन्दर आनेजाने के दौरान भी महंगे वायुयान के सफर के लिये भुगतान करना पसंद करते हैं। कारण यह है कि वे अपने पास उपलब्ध सीमित समय के अन्दर ही अपने व्यापार सौदे खत्म करना चाहते हैं और अधिक पर्यटक स्थलों को देखने जाना चाहते हैं। वे एयर ट्रेवल कम्पनियों द्वारा दी जा रही रियायतों की फिक्र नहीं करते हैं, क्योंकि उनकी मुख्य चिन्ता किसी भी कीमत पर समय बचाने की होती है। फिर भी, निम्न बजट में आराम पसन्द पर्यटक आकर्षित करने के लिये, हमारे प्राइवेट और सार्वजनिक हवाई सेवाएं रियायती टिकट पेश करती हैं क्योंकि वे हवाई यात्रियों के सबसे बड़े अनुपात हैं।

हमारे हवाई मार्ग जाल को बेहतर संचालित करने की शुरूआत हो गई है। यह हमारे 12 अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों को आदर्श अड्डों में तब्दील कर देगी और महत्वपूर्ण पर्यटक स्थानों में दूसरे अड्डों के स्तर में सुधार करेगी। ऐसा करते हुए, यह अंततः उत्तर में अमृतसर–श्रीनगर, दक्षिण में हैदराबाद–बंगलुरू–कोची, पश्चिम में अहमदाबाद–गोआ और उत्तर पूर्व में गौहाटी को समाविष्ट कर लेगी। हमारे महानगरों मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई में मुख्य अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहले ही सुधार सुविधाओं के विस्तार के लिये कोर में शामिल कर लिये गये हैं। वाराणसी, भुवनेश्वर और जयपुर, शहरों में पर्यटक सर्वाधिक आते हैं। ये तीनों नगर विकास की दृष्टि से

टिप्पणी

ज्यादा देर तक वंचित नहीं रहेंगे। इसके बाद अगला नागपुर है जिसे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में तबदील करना है। इसके अरिरिक्त, हमारे यहां इस समय छोटे वायुयानों के लिये 85 देशी हवाई अड्डे और 28 विमान चालन के अंतिम अड्डे हैं। लोकप्रिय पर्यटक गंतव्यों के लिये वायुमार्गों का संयोजन इतनी प्रमुख जरूरत बन गई हैं कि यह कई राज्य सरकारों को नये विचारों के साथ आगे आने के लिये लुभा रही है।

राजस्थान सरकार ने पर्यटक आकर्षण रखने वाले नये स्थानो, जो कि अब तक पर्यटन द्वारा अछूते हैं, पर छोटे वायुयानों के लिये हवाई पट्टी का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा है। हिमाचल प्रदेश आने वाले वर्षों में पर्यटक राज्य के रूप में उभरने की उम्मीद करता है। उसने मण्डी जिले के सुन्दरनगर में अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा बनाने का प्रस्ताव रखा है। कुल्लू, कांगड़ा और शिमला हवाई अड्डों का बड़े वायुयानों के लिये विस्तार और पहले से ही विद्यमान 55 हैलीपेडों के साथ अपने आभ्यांतर क्षेत्र संयुक्त करने के लिये प्राइवेट रूप से संचालित हैलीपेड, टैक्सी सेवाओं का विस्तार उसके अन्य सुझाव है।

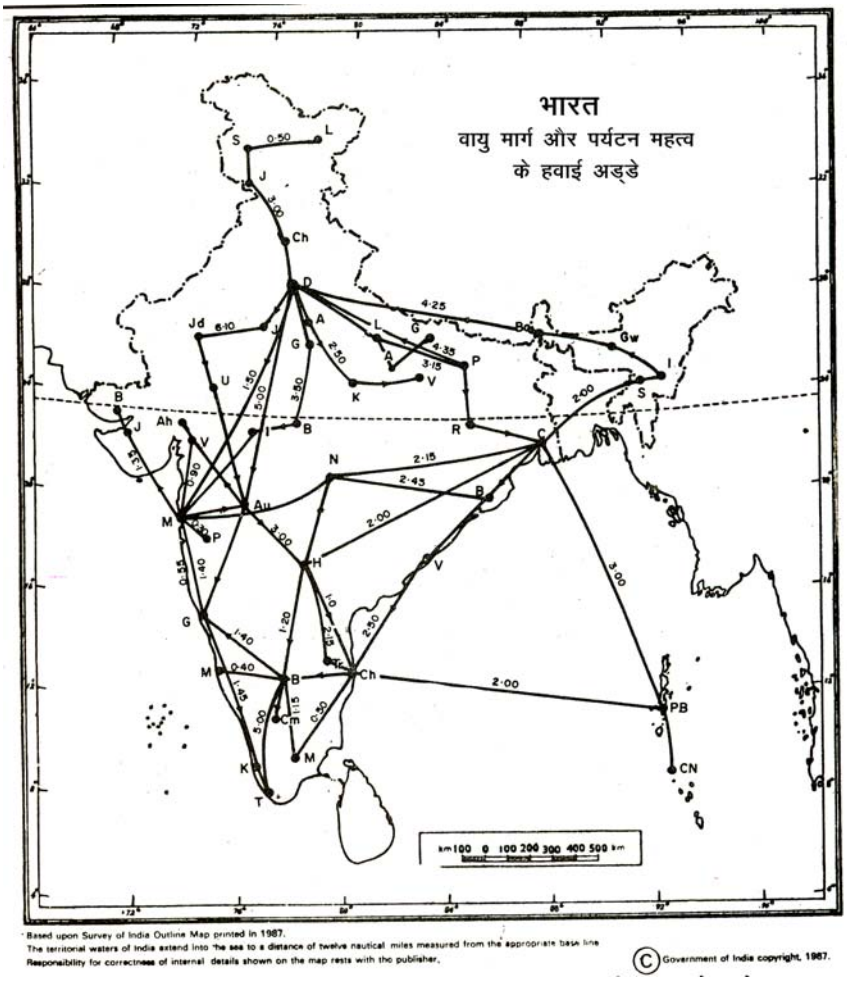

चित्र 31.1 पर्यटक महत्व के हवाई मार्ग और हवाई अड्डे

क्योंकि मुम्बई और दिल्ली 70% से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये प्रवेश द्वार हैं। ये दोनों नगर अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये देश के मुख्य निकासी घर का कार्य करते हैं। हवाई सीटों और इन स्थानों में होटलों में लगभग पूर्ण बुकिंग यह संकेत करता है

कि उनकी पूर्व–बुकिंग की जाय। अतः व्यस्त विदेशी पर्यटकों के लिये पूर्व–बुकिंग एवं जगह उपलब्धता की पुष्टि की जा रही है। अतः विश्व पर्यटन मानचित्र पर भारत के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। हमारा देश अब पर्यटकों के लिये पांचवां उच्चतम गंतव्य है। विश्व भ्रमण संगठन ने अनुमान लगाया है कि हवाई परिवहन के उच्च मानकों को कायम रखने को छोड़कर, हवाई टिकटों की लागत में मात्र 10% की कमी पर्यटक यात्रिओं की संख्या में 17 से 22% की वृद्धि कर देती है।

ख. समुद्री परिवहन

लम्बी दूरी या अधिक समय लगने वाले सफर के लिये यात्री समुद्री मार्ग की जगह हवाई मार्ग पसन्द करते हैं। परन्तु छोटी दूरियों के लिये आनन्द के लिये यात्रा करने, जैसे हमारे समुद्र तटीय जल में मुम्बई से गोआ, चिलका या वेम्बानाद जैसी झीलों में, मुख्य मार्ग से द्वीप या एक से दूसरे द्वीप में जाना पर्यटकों के लिये आकर्षण रखता है। कोची से लक्षद्वीप और चेन्नई या कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर और कार निकोबार बन्दरगाह जाने के लिये देशी और विदेशी पर्यटकों के लिये टुअर पैकेज लोकप्रिय बनते जा रहे हैं। ऐसा टुअर यात्रा, आवास और अन्य सुविधाएं प्रदान करने की कुल लागत को मिलाकर होता है।

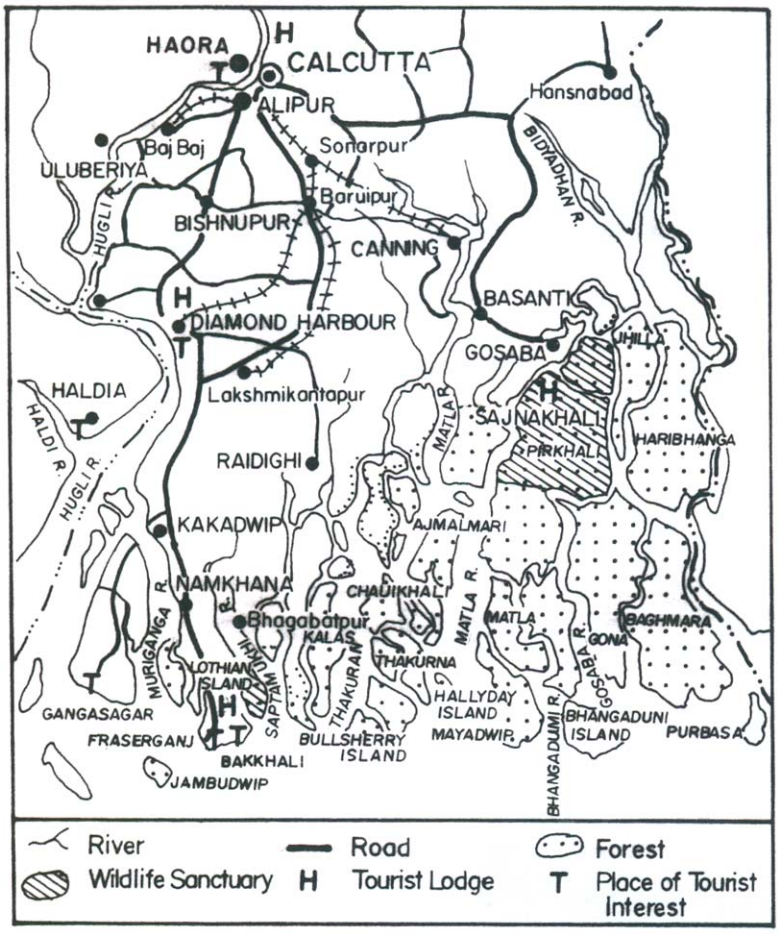

चित्र 31.2 सुन्दरवन के जल मार्ग

आगे चलकर, नदी के उपयुक्त भागों में नौपरिवहन के सुधार, जैसे आसाम में ब्रह्मपुत्र

टिप्पणी

पर्यटक यात्रियों के लिये नए मार्ग खोलने की असीम संभावनायें प्रदान कर सकती हैं।

ग. सड़क या मोटर मार्ग

1970 के दशक से, मात्र धनी व्यक्ति व उसके परिवार के लिये, प्राइवेट कारों, टैक्सी, आरामदेय गाड़ियां तथा 8 से 30 व्यक्तियों के निम्न बजट के समूह के लिये बसें लोकप्रिय बनती जा रही हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग और सुरम्य व व्यस्त सड़कों के किनारों मोटलों ने छुट्टी मनाने वालों द्वारा उनके इस्तेमाल में आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है। मोटर मार्ग मुख्य मार्गों के जाल के भीतर ज्यादा और आसान कड़ियां प्रदान करते हैं। मोटर मार्ग के रास्ते महत्वपूर्ण पर्यटक परिपथ आरामदेय सैर–सपाटे के लिये अत्यधिक सुविधाजनक हैं। सामान्यतया ये सभी समेकित टुअर पैकेज के जरिये किया जाता है। दिल्ली–आगरा–जयपुर को जोड़ता हुआ स्वर्णिम त्रिभुज ऐसे परिपथ का एक उदाहरण है। यहां चित्र संख्या 31.3 में आप देख सकते हैं कि कैसे ऐसे अनेकों परिपथ उभर आये हैं या यात्रा करने वाले पर्यटकों के नियमों के रूप में नये सरकिटों का प्रस्ताव किया जा रहा है।

मोटर परिवहन यात्रियों को भीड़–भाड़ वाले शहरी होटलों से दूर राजमार्गों के किनारे–किनारे कम महंगे सराय तक पहुंचाने का काम करता है। यह उपलब्ध सुविधा व्यस्त मौसम के दौरान बड़े शहरों के अन्दर आगन्तुकों की असंचालनीय भीड़ को कम कर देती है। यह निम्न बजट पर्यटकों और छुट्टी बिताने वाले विद्यार्थियों को बड़ी राहत भी प्रदान करती है। इसी कारण से, भारत नई अतिरिक्त सड़कें बनाने की ओर, और विद्यमान सड़कों के सुधार पर अधिक ध्यान दे रहा है। पर्यटक ट्रैफिक की अंतर्निहित मांग के जवाब में, राजमार्ग का निर्माण हमारे चार बड़े मेट्रो शहरों को जोड़ेगा। यह राजमार्ग 5952 कि.मी. से ज्यादा लम्बा होगा। उत्तर से दक्षिण तक श्रीनगर से कन्याकुमारी और पूर्व से पश्चिम तक सिलचर से पोरबंदर तक जोड़ने के लिये दो कोरीडोर की सड़क निर्माण करने का अन्य प्रस्ताव है। ये कोरीडोर क्रमशः 4000 कि.मी. और 3300 कि.मी. तक होंगे।

बस प्रणाली अब तेजी से उभरते बहु–पथ राजमार्गों पर चलने के लिये विस्तृत रूप से विकसित है। मनाली–लेह, दार्जिलिंग–गोंगटक और मदुराई–कोडाइकनाल को पर्यटकों द्वारा रोमांचकारी बस मार्ग के रूप में वर्णन किया जाता है। भारत के हिमालय क्षेत्र में, जहां मोटर मार्ग स्पष्टत्या परिवहन के प्रमुख साधन हैं, सड़क पर्यटन की अच्छी तरह देख–रेख की जा रही हैं।

चित्र 31.3 मुख्य पर्यटक परिपथ

घ. रेल परिवहन

रेलवे से संगठित पर्यटक यात्रा द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति से शुरू हुई। हमारे देश के बड़ा रेल तन्त्र उन दिनों के यात्रियों के लिये सस्ते में और शीघ्र क्रियाशील होता था। रेल परिवहन सिर्फ निम्न बजट आराम प्रदान करता था। रेल मार्ग 200 से 500 कि.मी. की दूरी के अन्दर मुख्य शहरों को जोड़ता था। बहुत लम्बी दूरी के उपमहाद्वीपीय सेवा को कई सौ कि.मी. तक विस्तृत किया। सर्वाधिक उल्लेखनीय मुख्य मार्ग, जो मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और वापस मुम्बई तक जोड़ती है, स्वर्णिम चतुर्भुज बनाते हैं। चतुर्भुज के भीतर त्रिभुज मार्ग एक तरफ मुम्बई और कोलकाता को जोड़ते है और दूसरी ओर दिल्ली और चेन्नई को।

टिप्पणी

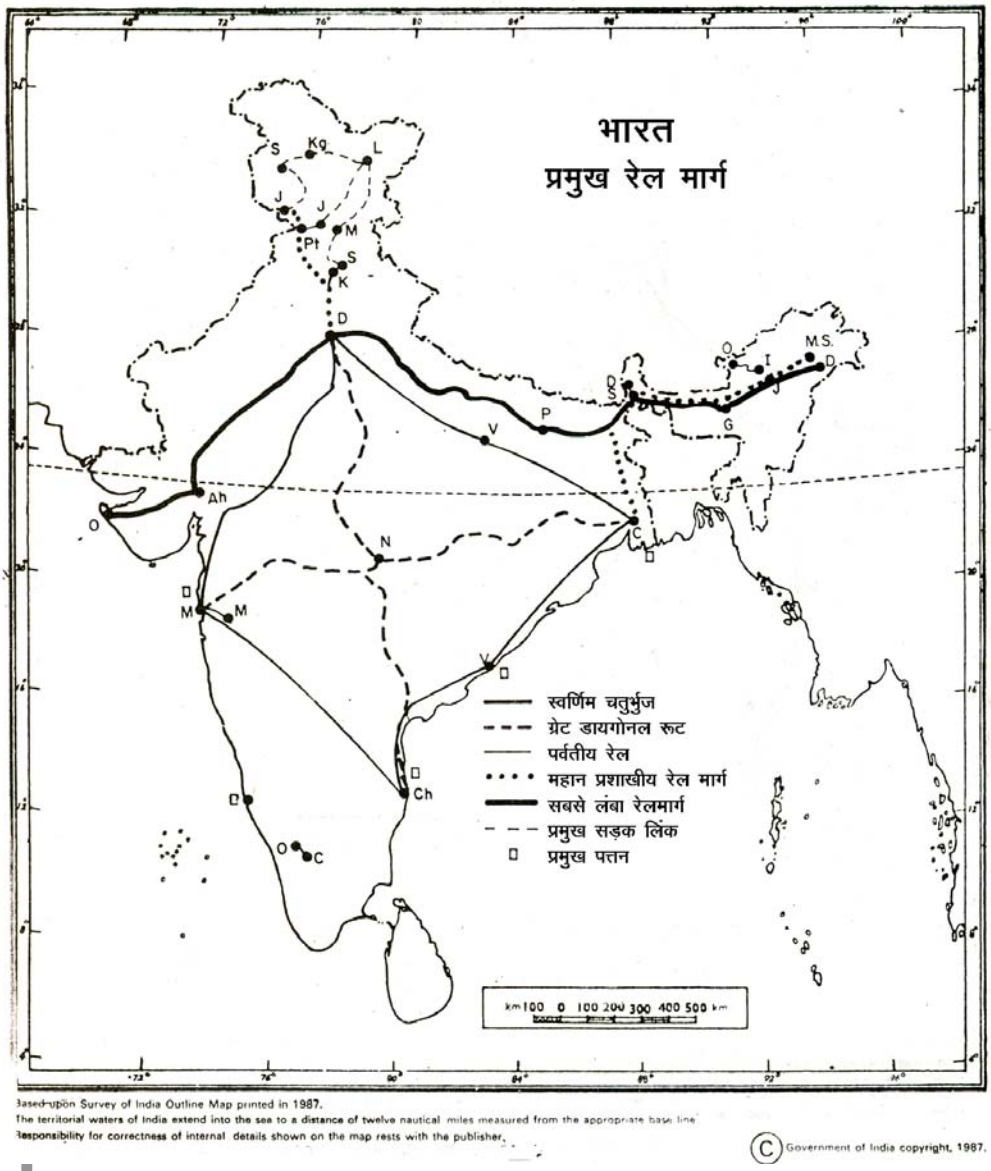

चित्रः 31.4 भारत के प्रमुख रेलमार्ग

उत्तर–दक्षिण उपशाखा रेलमार्ग अब जम्मू एवं कश्मीर राज्य में जम्मू–ऊधमपुर तक (अन्ततः श्रीनगर के रास्ते बारामुला तक विस्तारित करना है) और देश की भूमि के दक्षिणतम् छोर तमिलनाडु में कन्याकुमारी तक पहुंच गया है। पूर्व दिशा की ओर यह अरुणांचल प्रदेश में उत्तर–पूर्व फ्रंटियर रेलवे के रास्ते मुरकोंगसेलेक स्टेशन पर समाप्त होता है।

स्वच्छ और शीघ्र यात्रा सुनिश्चित करने के लिये लगभग सभी मुख्य रेलमार्गों का विद्युतीकरण हो गया है। मेट्रो रेल, अन्य पर्यटक आकर्षण के रूप में, भारत के व्यस्त महानगरों में तेजी से शुरू की जा रही है। कितना सही कहा गया है कि ट्रेन द्वारा भारत का भ्रमण स्टेशनों के दृश्य, आवाजें, गंध और साथ ही साथ विविध लोगों को पेश करता है। इसकी कुल लम्बाई 60,000 कि.मी. से ज्यादा है।

टिप्पणी

पांच छोटी पर्वत ट्रेन है जो सर्वाधिक सुरम्य हिल रिज़ोर्टों–शिमला, ऊटी (उदगमंडलम), महाराष्ट्र में माथेरन और कोलकाता के उत्तर में दार्जिलिंग को जोड़ती है। ये पर्यटकों को आनन्द प्रदान करती है। उचित रूप से उन्हें टॉय ट्रेन (खिलौना ट्रेन) कहा गया है। पर्वत में ऊंचाई के बढ़ने के साथ वे बदलते प्राकृतिक दृश्य पेश करती है। रास्ते में पटरियां कई पुलों को आड़े–तिरछे पार करती है, सौ से ज्यादा सुरंगें, और 'यू' मोड़ आते हैं। कुछ भाप इंजन पर्यटकों को उनकी ऐतिहासिक स्मृति को आकर्षित करने के लिये, अभी भी इस्तेमाल किये जा रहे हैं। इस लाइन पर चलने वाली एक महत्वपूर्ण ट्रेन का रोमाचंक नाम ही हिमालयी महारानी है।

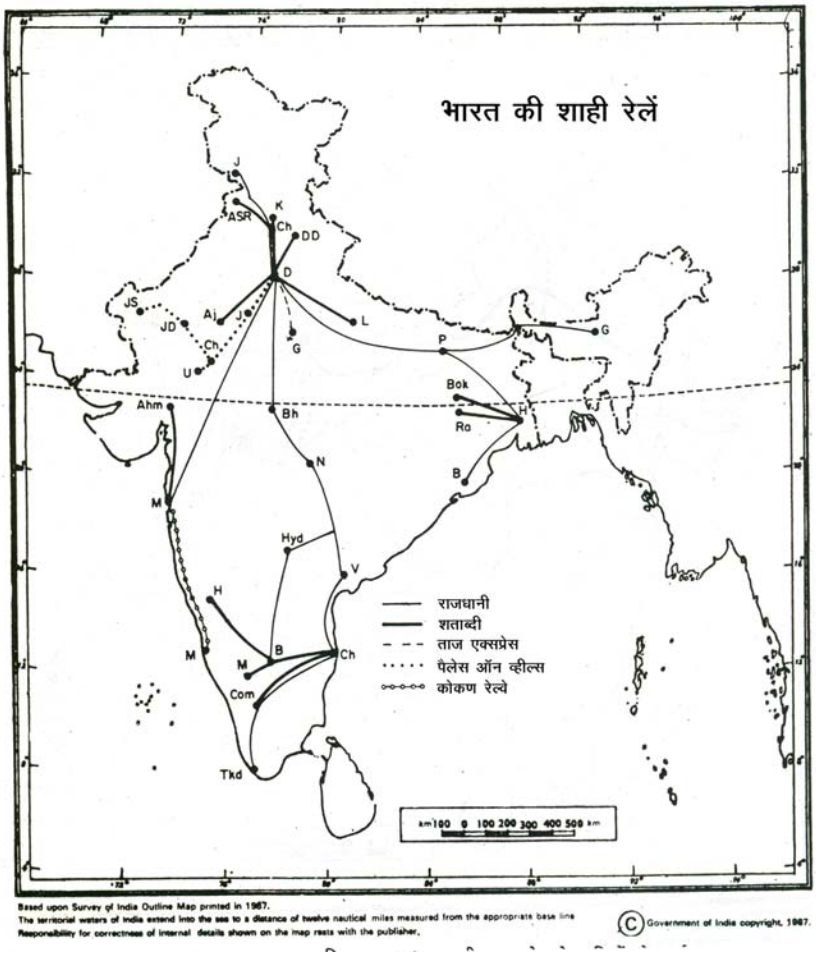

चित्रः 31.5 भारत की आरामदेय ट्रेनों के रेलमार्ग

सबसे पुराने भाप रेल इंजन द्वारा खिंचने वाली ट्रेन का दूसरा उदाहरण उस ट्रेन का है जो दिल्ली छावनी से राजस्थान में अलवर तक चलती है। अपनी 138 कि.मी. की यात्रा के दौरान यह ट्रेन फेयरी क्वीन कहलाती है। यह सरिस्का बाघ अभयारण्य के रास्ते गुजरती है। यह अधिकांशतः पर्यटकों की सतत बढ़ती मांगों को पूरा करती है।

छोटी लाइन ट्रेन, यूँ तो पर्वत के ऊपर नहीं चलती है परन्तु पहाड़ियों और विस्तृत घाटियों के रास्ते, पठानकोट से हिमाचल प्रदेश में जोगिन्दनगर तक रसीले हरित चाय

टिप्पणी

बागान और कांगड़ा घाटी के धान के खेतों के रास्ते जाती है।

कोंकण समुद्र तटीय रेलवे अभियान्त्रिकी का कमाल है, जो मुम्बई को गोआ के रास्ते मंगलौर से (कर्नाटक–केरल सीमा के किनारे–किनारे) जोड़ती है। इस 760 कि.मी. लम्बे सुरम्य पथ का 10% हिस्सा पुलों और सुरंगों से बना है।

संतोषप्रद शाही ट्रेन, जिसे 'पैलेस ऑन व्हील' कहते हैं, सात दिनों का सब समाविष्ट पैकेज टुअर प्रदान करती है। यह आगरा और दिल्ली के अलावा राजस्थान के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थानों का दर्शन कराती है। इसके आरामदेय डिब्बों में प्रदेश के मूल राज्यों के महाराजाओं द्वारा अपने महलों में पहले कभी उपयोग की जाने वाली सब सुखकर वस्तुएं और आतिथ्य–सत्कार उपलब्ध होता है। पर्यटक प्रदेश के सैर–सपाटे को इस प्रकार के स्वच्छ और विलासमय महल में खाने–पीने और यात्रा करने से मिलान करना चाहते हैं। इस ट्रेन में उसकी लोकप्रियता के अनुरूप ही श्रेष्ठ ध्यान पाने की उम्मीद कर सकते हैं।

इंड्रेल पास (भारतीय रेल पास) नाम की सुविधा पर्यटकों के लिए विद्यमान है। यह उन्हें 7 दिनों से 90 दिनों की वैध अवधि के अन्दर यात्रा करनी होती है। यह रास्ते की यात्रा सम्बन्धी किसी प्रतिबंधों के बिना, व्यापक प्रकार के आकर्षणों के लिए सरकिट रूट चुनने का विकल्प प्रदान करती है। मार्ग का विकल्प पूर्णतया उपयोगकर्त्ताओं पर छोड़ा हुआ है। स्वदेशी पर्यटकों के लिए, परिभ्रमण रेल टिकट की व्यवस्था उन्हें अपने रास्ते की कठिनाई को कम कर देती है। स्वयं यात्रियों द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार, एक जगह से दूसरे जगह जाने के लिए ट्रेवल कारों की व्यवस्था की जाती है।

यद्यपि 25% शयन सीटें विदेशी यात्रियों के लिए आरक्षित होती है, फिर भी शिकायतें आती है कि आखिरी क्षण तक आरक्षण की पुष्टि नहीं हुई। यह निश्चित रूप से इन पर्यटकों के लिए और पर्यटन के संवर्धन में रुकावट का काम कर सकती है। परन्तु आजकल यदि विश्वस्त टुअर परिचालकों को काम सौंपा जाता है, तो आरक्षण पक्का होता है। निस्संदेह, हमारी रेल खान–पान प्रबन्ध सेवाओं को आगे और सुधारने की जरूरत है ताकि वे अंतर्राष्ट्रीय मानक के स्तर की हो जाएं।

- परिवहन प्रणाली और विभिन्न प्रकार के परिवहन मार्ग पर्यटक गंतव्यों तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं।
- धनी देशों से वायुयानों द्वारा आने वाले, तेज रफ्तार पसन्द व्यस्त पर्यटकों के लए लागत कम महत्व की चीज है।
- निम्न बजट के विदेशी पर्यटकों को दी जाने वाले रियायती हवाई टिकटें प्रोत्साहन का काम करती हैं, ताकि हवाई यात्रा उनकी प्रथम पसन्द बनी रहे।
- समुद्री यात्रा ने अपना महत्व खो दिया है। फिर भी समुद्रतटीय क्षेत्रों में पोत–भ्रमण करने और सैर–सपाटे या पास के द्वीपों को देखने जाने के लिए समुद्री यात्रा की जाती है।

टिप्पणी

- पर्यटकों के लिए बहुत सी सुपर–फास्ट विलासपूर्ण ट्रेनों की व्यवस्था के बावजूद, आजकल के व्यस्त पर्यटकों के लिए, भारत के अन्दर भी पर्यटक स्थलों तक रेल का सफर दूसरी पसन्द है।
- 1970 से, राजमार्गों पर या पर्यटक परिधि सरकिट के भीतर मोटर परिवहन, प्राईवेट कारों और विलासपूर्ण गाड़ियों का उपयोग अपनी लोकप्रियता के कारण बढ़ रहा है।
- विदेशी पर्यटकों के लिए सभी प्रकार की यात्राओं या सफर को ज्यादा आरामदेय बनाने और ट्रैफिक टर्मिनलों पर आथित्य–सत्कार सेवाओं को ज्यादा आकर्षक बनाने के लिए बहुत कुछ करने की जरूरत है।

31.2 पर्यटन के आधारिक ढांचे में होटलों का स्थान

पर्यटकों की भिन्न–भिन्न जरूरतों के आधार पर भिन्न वर्गों के होटलों में ठहरने के स्थान की जरूरत पर्यटन आधारिक ढांचे का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मेज़बान देशों में ठहरने के स्थान की सुविधायें पर्यटक उद्योग का इतना महत्वपूर्ण हिस्सा है कि यह अब अपने आप में होटल उद्योग कहलाता है। सर्वश्रेष्ठ सम्भावित कमरा और रेस्तरां सेवायें पर्यटकों को लुभाने के लिए बड़ी मांग हैं। फास्ट फूड, स्थानीय रूप से मूल्यवान कला या शिल्पी वस्तुओं की आपूर्ति आदि की क्रमबद्ध व्यवस्था पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। ये या तो होटल कॉम्प्लेक्स के अंदर या बाहर आऊटलेट के रूप में हो सकते हैं। ऐसे होटल, भारत में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के ठहरने के दौरान हमें उनसे प्राप्त होने वाले विदेशी विनियम का 50% उपाजित करते हैं।

देशभर में पर्यटक केन्द्रों में ठहरने के स्थान की अत्यधिक कमी अभी भी महसूस की जा रही है क्योंकि सभी वर्गों के पर्यटकों का ट्रैफिक लगातार बढ़ रहा है। हमारे देश में उपलब्ध होटल कमरों की संख्या लगभग 98,000 है। पर्यटन की वृद्धि दर और विद्यमान होटलों के भीतर ही या कुछ नये होटलों के अन्दर निर्माणाधीन कमरों की संख्या को देखते हुए, हमारी जरूरतें अनुमानित उपलब्धता से कहीं अधिक है। ज्यादा होटलों के निर्माण के लिए भूमि उपयोग नियमों में परिवर्तन और मोटलों के निर्माण के लिए भूमि के विशेष आवंटन दो तत्कालिक उपाय प्रस्तावित किये गये हैं। मेट्रो शहरों में भूमि तेजी से ज्यादा महंगी हो रही है और लक्ष्य पूरा करने के लिए आवश्यक वार्षिक विनियोग की दर भी तेज गति से बढ़ रही है। ऐसे शहरों के नजदीक सड़क के किनारे होटलों का निर्माण, और उन शहरों से आसान पहुँच के स्थानों पर होटलों का मिर्नाण पिछले कुछ वर्षों के दौरान हुआ है। भूमि उपयोग नियम और भूमि का विशेष आवंटन ऐसी निर्माण गतिविधि को आगे और प्रोत्साहित करेगा।

तीन से पांच–सितारा होटलों के अतिरिक्त, सुखकर सुविधाएं प्रदान करने के आधार पर होटलों को भिन्न वर्गों में श्रेणीगत किया गया हैं। इन्हें मोटल, टूरिस्ट बंगला, टेन्ट या लॉज कहा जाता है और ये मौसमी, थोड़े दिनों या ज्यादा दिनों के ठहरने के लिए होते

टिप्पणी

हैं। ठहरने के स्थान की व्यवस्था गेस्ट हाऊस या पेइंगगेस्ट के रूप में लोगों के घरों में भी की जाती है। लॉज़ के लिए स्थलों को सावधानी से वनों में चुना जाता है, झरने के पास तम्बू डालने के लिए शिविर लगाए जाते है तथा नावों पर बहते घर के लिए जलाशय का चयन किया जाता है। ये सभी स्थल टूरिस्ट रिज़ोर्ट के रूप में पर्यटकों के लिए मनोहारी होते हैं। पर्यटक रुचि के बहुत से केन्द्रों पर छोटे होटल है जिनमें कम आरामदेय सुविधायें होती हैं परन्तु वे अपने आसपास एंव बाहर अनेकों मनोरंजन और खेल की सुविधायें प्रदान करते हैं। ये सब उपयुक्त आवास स्थान के संगठन और पर्यटक स्थान पर विशेष अवधि के लिये सम्भव विभिन्न पर्यटक गतिविधियों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध का उदाहरण है।

उच्च स्तर की सुविधाओं और आराम की सामान्य व्यवस्था के अलावा, बड़े अंतर्राष्ट्रीय होटलों के बड़े कान्फ्रेंस हाल, इंटरनेट सुविधाओं के साथ संचार संबंध खानपान और मनोरंजन के वातावरण और स्वास्थ्य क्लब भी होते हैं। उनमें सामान खरीदने के लिए बाजार और व्यापार केन्द्र होते हैं। होटलों के बड़े कॉम्पलेक्स के अन्दर होटल होते हैं जो अमेरिका या जापान जैसे धनी देशों से उनके व्यापार सहवासियों के उपयोग मात्र के लिए होते हैं। वे ऐसे पर्यटकों के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं क्योंकि, न्यूयार्क, पेरिस, लदंन या टोकियो में उसी स्वरूप के होटलों की तुलना में उनके किराये निम्न होते है। दूसरी ओर, बड़े हवाई अड्डों के समीप कुछ होटल हैं, और ये आने व जाने वाले पर्यटकों को अल्प काल के लिए ठहरने के स्थान प्रदान करते हैं।

मोटल होटल का वह प्रकार है जो विशेष रूप से मोटरकार पर्यटकों की जरूरतें पूरा करने के लिए होते हैं। हम इन मोटलों को शहरों के परिसीमा और व्यस्त राजमार्गों के किनारे–किनारे पाते हैं। हाल के दशक में कार यात्रियों का अत्यधिक उपयोग मोटलों और तैयार फास्ट फूड प्रदान करने वाले किआस्क (छतरीनुमा छोटा विक्रय स्थल) की संख्या में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। यह अमेरिका में बहुत पाये जाते हैं। आने जाने वाले वाहनों की संख्या और पर्यटक आवागमन की गति को देखते हुए हमारे देश में राजमार्ग के किनारे इन मोटलों आदि को खोलने का विचार तेजी से सुदृढ़ हो रहा है। मोटल, जो सुविधाएं प्रदान करते हैं उसकी तुलना में, कम मंहगे हैं। उदाहरण के लिए, वे स्वयं खाना पकाने के लिए गैस की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। हरियाणा राज्य, ने दिल्ली के आसपास, हिमाचल प्रदेश के साथ अपनी सीमा के समीप तथा उत्तर में पंचकुला तक व्यस्त ग्रैंड ट्रंक राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे, कई मोटलों का निर्माण करके अच्छा उदाहरण दिया है। राज्य मे हिमाचल और जम्मू–कश्मीर के पर्यटक क्षेत्रों को जाने वाले यात्रियों की अत्यधिक संख्या इसी सड़क के रास्ते जाती है। अतः हरियाणा ने इसका पूरा लाभ उठाया है। यद्यपि हरियाणा में पर्यटक आकर्षण कम हैं, तथापि स्थानीय पक्षियों के नाम पर मोटलों का नामकरण किया गया है। होटलों की कतार पर्यटकों को आराम करने के लिए ललचाती है। यात्रा के अगले पड़ाव के लिए रवाना होने से पहले यात्री इन होटलों के बाहर विश्राम करते हैं।

विभिन्न एजेन्सियों द्वारा संचालित विभिन्न स्थलों पर पर्यटक युवा होस्टल, सराय या विश्रामगृह और अवकाश गृह भिन्न बजट के राहगीरों के लिए कामचलाऊ ठहरने का स्थान प्रदान करते हैं।

टिप्पणी

- विभिन्न प्रकार और भिन्न वर्गों के होटलों को यात्रा सुविधाओं से ज्यादा पर्यटक यातायात की बढ़ती हुई मांग को पूरा करना होता है।
- होटलों की कमी और उनमें कमरों की संख्या की कमी को पूरा करने के लिए पूंजी के भारी विनियोग की जरूरत है।
- यात्रा संचालन के संगठन और होटलों की व्यवस्था को व्यापक रूप से, भिन्न–भिन्न जरूरतों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और बजट ध्यान में रखना पड़ता है।

31.3 टुअर परिचालन और प्रबन्धन

अपने भिन्न पहलुओं की देखभाल तथा पर्यटन के संचालन के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित सहायक कर्मचारी वर्ग की जरूरत होती है। इसमें प्रशिक्षित टुअर गाइड, ट्रेवल एजेन्ट या टुअर ऑपरेटर, परिचारक, खानसामा और उनके अन्य कई सहायक शामिल है। इनमें से, टुअर गाइड और टुअर ऑपरेटर संचालन कर्मचारी वर्ग के मुख्य कार्मिक होते हैं। पर्यटकों के यात्रा के पूर्व नियोजन से लेकर पर्यटकों के वापस रवाना होने तक टुअर गाईड उनके साथ है। जुड़ जाते हैं। उनकी सतत आपूर्ति पर्यटक उद्योग के विस्तार के साथ साथ बनाए रखनी होती है ताकि पर्यटकों के दीर्घकालिक व आरामदेय वास सुनिश्चित कर सकें। पर्यटन जैसे संवेदनशील सेवा उद्योग का चलना मुख्य रूप से उनके कौशल पर निर्भर करता है। पर्यटकों के साथ फलदायक अंतक्रिया उनके कौशल पर निर्भर करती है। यदि वे अनुपस्थित रहते हैं या सही–सही भूमिका अदा करने में असफल रहते हैं तो पर्यटकों का आना कम हो जाता है। उसे लोकप्रिय बनाने के बड़े विज्ञापन अभियान के बावजूद यह उद्योग नष्ट होने के कगार पर पहुँच सकता है। पर्यटक गंतव्यों पर उनका कार्य होटल के मालिकों और पेशेवर होटल प्रबन्धक के कार्य के समान होता है।

(क) टुअर गाइड

समयोपरि, टुअर गाइड आगन्तुकों को पर्यटक स्थान या क्षेत्र के आकर्षणों के प्रति प्रवृत करता है और उन्हें वास्तविक पर्यटक स्थलों के चारों ओर घुमाता है। निम्नतम स्थानीय स्तर पर, भ्रमण मार्गदर्शन पर्यटन के समस्त कार्यक्रम के उन्नयन के लिए मौलिक इकाई है।

एक प्रभावशील टुअर गाइड को क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, पर्यटक रूचि के ठिकानों की पृष्ठभूमि, पूर्व इतिहास जैसे मंदिरों, पूजास्थलों, स्मारकों, पुराने स्थलों के खंडहरों और किलों के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। एक अच्छे टुअर गाईड से, प्रासंगिक स्थानीय परम्पराओं, संस्कृति, लोक–कथाओं, निष्पादन कलाओं, उत्सवों और मेलों के बारे में बात करना अपेक्षित रहता है। इस तरह के वर्णन से पर्यटक ज़्यादा आकर्षित होते हैं और उनमें और ज्यादा जानने की उत्सुकता जागृत होती है। जो भाषा पर्यटक समझता है उसी भाषा में बताना बेहतर होता है। पर्यटकों के मूल देश की जानकारी के

टिप्पणी

साथ ही एक अनुभवी टुअर गाइड उनके रूझान जान जाता है। यह ज्ञान होने से उनकी प्रतिक्रियाओं को पर्यटक अच्छे से ग्रहण करते हैं और उनके सवाल से सन्तुष्ट होते हैं। टुअर गाईड का कौशल, स्थानीय घटनाओं के बारे में रोचक घटना वृत गढ़ने में और पर्यटक दृश्य स्थलों से सम्बधित व्यक्तियों द्वारा अदा की गई विख्यात भूमिकाओं की मुख्य–मुख्य बातें बताने में निहित है। पहला भ्रमण अगले भ्रमण की शुरूआत बन सकती है यदि टुअर गाईड अपने निष्पादन द्वारा पर्यटकों के बीच स्थायी रूचि उत्पन्न करने में सफल होता है। एक टुअर गाईड द्वारा किसी प्रकार की गलती न केवल सिर्फ अपने लिए परन्तु ऐसे कार्यकर्त्ताओं के पूरे समूह के लिए बदनामी लाता है।

यहां स्थानीय जनजाति के सदस्यों का जिक्र करना उचित होगा जो आंध्र प्रदेश के विशाखापतनम जिले में, चूने की बहुत गहरी सुन्दर गुफाओं और उनके सोपानी जलप्रपात को दिखाने के लिए गाइड का कार्य करते हैं। वर्ष 2001 तक, वे प्रतिमाह 7000/- रुपये कमा लेते थे। लोग रास्ते में मिट्टी के तेल का लोम्ब या टार्च का उपयोग करते हुए, पर्यटकों को गुफाओं में ले जाते थे। वर्ष 2002 में, सरकार ने गुफाओं के फर्श सीमेंट के बनवा दिये। अन्दर के हिस्से में बिजली लगवा दी और जनजातीय गाइडों को 3000/- रुपये की एक मुश्त मासिक आय निर्धारित कर दी। वे लोग पहले बहुत सी सेवायें प्रदान करते थे, सब खत्म करा दी गई। सरकार, स्थानीय लोगों की आय में कमी की लागत पर मुद्रा की बड़ी मात्रा उपार्जित करने लगी। गाइड की सेवाओं पर निर्भर स्थानीय लोगों का इस तरह का अलगाव इस काम के लिए निराशा प्रदर्शित करता है।

(ख) टुअर ऑपरेटर

पर्यटन का परिचालन अब विशिष्ट प्रकृति का काम बन गया है। दिन प्रति दिन, किसी भी एक कार्यकर्ता के लिए, पर्यटन के संचालन के सभी भागों की देखभाल करना कठिन बनता जा रहा है। इस कारण टुअर ऑपरेटर का कार्य टुअर गाइड के कार्य से बिल्कुल भिन्न होता है।

टुअर ऑपरेटर को परिवहन जरूरतों के संचालन, वीसा और परमिट की निकासी की औपचारिकताएं और पर्यटकों के लिए होटलों में ठहरने के स्थान की बुकिंग करने का कार्य करना हाता है। ऐसे व्यक्ति को सम्बधित नियमों और अधिनियमों में अक्सर किये जाने वाले नवीनतम परिवर्तनों के बारे में अपनी जानकारी बनाये रखनी होती है। टुअर ऑपरेटर को, उन अधिकारियों के साथ, जो यातायात बुकिंग और पर्यटक स्थलों पर या उनके समीप होटलों में आरक्षण की व्यवस्था करते हैं, सम्बन्ध बनाये रखने पड़ते हैं। उसे यह जानकारी भी होनी चाहिए कि शामियाने व जोखिमपूर्ण पर्यटन के लिए अन्य उपकरण कहां से किराये पर मिलते हैं।

आजकल, भ्रमण का कार्यक्रम जाने से बहुत पहले निश्चित करना पड़ता है। वे दिन चले गये जब व्यक्ति, जब चाहे व्यापार या आनन्द के लिए, यात्रा शुरू कर सकता था। पर्यटकों के एक समूह या एक अकेले पर्यटक के पास भ्रमण के लिए पूर्व–निर्धारित अनुसूची होती है। किसी माह विशेष में, उनके पास कुछ ही दिन खाली होते हैं जिसमें

टिप्पणी

वे इच्छित संख्या के पर्यटक स्थलों को देख लेना चाहते हैं। आधुनिक पर्यटन की तीव्र वृद्धि के कारण शिखर मौसम में गंतव्य पर्यटकों की बढ़ती मांग पूरा करने में असफल रहते हैं। टुअर ऑपरेटरों को समय से पहले ही कई औपचारिकताओं को पूरा कर लेना होता है। इनमें वायु मार्ग, रेलवे या सड़क मार्ग से जाने वालों के लिए सीटें या शायिका की पूर्व बुकिंग और होटलों में उपयुक्त आवास के लिए पूर्व बुकिंग शामिल हैं। यदि पर्यटक पर्यटन क्षेत्र में ही रहना चाहे तो भी उसके रहने की वैकल्पिक व्यवस्था करना टुअर ऑपरेटर का कार्य होता है।

टुअर ऑपरेटर पर्यटन का उचित मार्ग, भाड़े में कटौती, टिकट पर प्रतिबन्ध, (यदि कोई है) और यात्रा का प्रबन्ध करने योग्य अवधि के मामले में भी मार्गदर्शन कर सकता है। सस्ती उड़ानों के अलावा, विश्वसनीय भ्रमण एजेन्ट अपने ग्राहकों के उनके पसंद के हवाई अड्डों पर सुरक्षित उतराई का भी ध्यान रखता है। यदि पर्यटक की किसी प्रकार की कोई विशेष आवश्यकतायें हैं, जैसे खाने, भ्रमण बीमा, अपनी रूचि की फोटो खींचना और अपनी पसन्द की उड़ान से टिकटों का पुष्टिकरण, तो उन्हें समय से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(ग) टुअर गाइडों एवं टुअर ऑपरेटरों का प्रशिक्षण

टुअर गाइडों एवं टुअर ऑपरेटरों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा आवश्यक कौशल सीखना पहला महत्वपूर्ण कदम है। ये दोनों कार्यकर्ता फिर पहले से ही प्रशिक्षित कर्मियों की संगत में इस गतिविधि में सहभागिता द्वारा कौशलों को और ज्यादा विकसित करते हैं।

प्रशिक्षार्थी तब स्वतंत्र रूपसे कार्य करने के लिए अपने को सुसज्जित कर ट्रेवल एजेन्सी से जुड़ जाते हैं। इस दिशा में यह दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कदम है। अन्त में, उनमें से प्रत्येक को किसी क्षेत्र विशेष के लिए पर्यटन गतिविधि हेतु पर्यटन के परिचालन या मार्गदर्शन पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा जाता है। इस तीसरे कदम में, योग्य पेशेवर टुअर गाइड या टुअर ऑपरेटर बनने के लिए उनका परीक्षण किया जाता है। राजस्थान, हिमालयी क्षेत्र से उतना ही भिन्न है जितना समुद्र तटीय पुलिनों से मन्दिर और सांस्कृतिक स्थल। अतः ये कार्यकर्त्ता विशिष्ट आवश्यकता हेतु प्रशिक्षित किये जाते हैं।

(घ) ट्रेवल एजेन्सी

निम्न स्तर पर टुअर गाइड और टुअर ऑपरेटर या ट्रेवल एजेन्ट और ऊँचे स्तर पर टुअर प्रबन्धक ट्रेवल एजेन्सी के सदस्यों की टीम के रूप में कार्य करते हैं। दूसरे शब्दों में, कार्यकर्ताओं का पूरा समूह ट्रेवल एजेन्सी बनाता है। इनमें से प्रत्येक, पर्यटक को प्रारम्भिक अवस्था से ही प्रेरित करने से लेकर, ठहरने की अवधि और उसके अपने घर वापस जाने तक, अपनी–अपनी भूमिकायें अदा करता है।

एजेन्सी पर्यटकों की यात्रा और आवास को आरामदेय और सन्तोषप्रद बनाने के लिए,

टिप्पणी

यात्रा प्रारम्भ करने से पहले अपने कार्यकर्ताओं को पर्यटकों से पूछताछ करने का निर्देश देती है। यह एजेन्सी, पर्यटक गंतव्य के दूसरे क्षेत्र में कार्य कर रही दूसरी समान एजेन्सी के साथ समन्वय करने के लिए एक मंच भी बन जाती है। ट्रेवल एजेन्सी की यह भूमिका दर्शकों को मदद करती है। ऐसे में पर्याप्त जानकारी एवं दर्शकों की रूचि के अनुसार देश में ठहराव में भी वृद्धि होती है तथा लोग एक तरह के दर्शनीय स्थलों से दूसरे प्रकार के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए चले जाते हैं। इस तरह दर्शकों की जानकारी बढ़ती है और बाद में वे अन्य समय ज्यादा दर्शन के लिए भारत के अन्य भागों में पहुँच जाते हैं।

ट्रेवल एजेन्सियों का, समस्त पर्यटक क्षेत्रों में, अपना तंत्र होता है और उनके पास प्रत्येक जानकारी को शीघ्रतम संचार माध्यम द्वारा भेजने के साधन होते हैं। वे पर्यटकों के समूह के लिए सर्किट मार्ग के रास्ते पैकेज टुअर की व्यवस्था करते हैं और रियायती दाम पर यातायात, आवास एवं भोजन की व्यवस्था करते हैं। यह व्यवस्था कठिन क्षेत्रों जैसे हिमालय में विशेष रूप से सहायक होती है, क्योंकि उन क्षेत्रों में ऐसी सुविधायें कम उपलब्ध होती हैं। एजेन्सियां, पर्यटकों की तरफ से, सम्बधित अधिकारियों से परमिट, वीसा प्राप्ति प्रमाणपत्र, और मुद्रा लेनदेन के लिए सम्पर्क करती हैं। वे लम्बी दूरी के यातायात के पुष्टीकरण का बोझिल कार्य भी करती है। वे पर्यटन के विभिन्न भागों के बीच कड़ी का कार्य करते है, तथा हवाई अड्डे या रेलवे स्टेशनों से होटलों तक स्थानीय यातायात का भी प्रबन्ध करते हैं। ट्रेवल एजेन्सियां बहुधा संबद्ध पर्यटक समूह और पर्वतारोहण, स्कीइंग, हेली स्कीइंग, और स्नोर्टिंग में प्रशिक्षण आयोजित करने वाली संस्थाओं के बीच पुल के रूप में कार्य करती है। वे पर्यटकों को, स्थानीय कपड़ा, शिल्प और शिल्प जैसी बनावटी चीजें, पर्यटकों को उचित दुकानों या राज्य इम्पोरियम से खरीदने की सलाह भी देते हैं। ट्रेवल एजेन्सियों का कार्य विस्तृत हो रहा है क्योंकि पर्यटन स्वयं कई उप–शाखाओं में बट रहा है। पर्यटकों की विविध अभिरुचियां इसका वास्तविक कारण है। ट्रेवल एजेन्सियां, मुख्य मध्यस्थ के रूप में, दंत चिकित्सक और आयुर्वेदिक मालिश की सेवा और योग प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं से सम्पर्क करती हैं। ये पर्यटकों में नव विकसित रुचिओं को बढ़ाने का प्रयत्न करती है।।

टुअर मैनेजर, निरीक्षणात्मक स्तर पर ट्रेवल एजेन्सी के परिचालन सम्बन्धी कार्य की देखभाल करता है। यह उनके उत्तरदायित्व का ही भाग है कि वे न केवल दैनिक प्रबन्ध के प्रति चिन्तित रहे अपितु विविध प्रकार की विशिष्ठ संस्थाओं के साथ बढ़ते हुए सम्बन्ध को सुदृढ़ करना भी उनका मकसद होता है। वे एजेन्सी को प्राप्त आवश्यक सूचना देने के लिए समस्त कार्यों की निगरानी करते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसी प्राप्त सूचना, या जानकारी आंकड़े का आधार होती है। यह पर्यटन के प्रबन्ध को सुधारने में मदद करती है, लुप्तांशों की भराई करती है। समय–समय पर पर्यटन नीति में आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए सरकारी एजेन्सियों या विभागों को जानकारी भिजवाता है।

टिप्पणी

31.4 ऋतु विशेष और गन्तव्य विशेष भ्रमण परिचालन

आम गंतव्य विशेष भ्रमण परिचालन के विपरीत, कुछ क्षेत्र, विशिष्ट मौसमों में भ्रमण करने के लिए उपयुक्त होते हैं। हिमाचल प्रदेश के उत्तरी भाग में लाहौल–स्पीति जो हिमालय और कश्मीर के लद्दाख–जास्कर प्रदेश का ऊँचा और अत्यधिक दूरस्थ प्रदेश है, इसका उदाहरण है। यह क्षेत्र, अपनी लम्बी एवं कठोर सर्दियों के दौरान बर्फ द्वारा मार्ग अवरूद्ध हो जाने के कारण राज्यों के मुख्य क्षेत्रों से एकदम अलग पड़ जाता है। वास्तव में गम्भीर रूप से जोखिम प्रिय पर्यटक यहां केवल गर्मी के छोटे मौसम में आते हैं। यद्यपि यहां का वातावरण नीरस होता है, तथा अनावृत परन्तु बहुरंगी चट्टाने और बर्फीली हवायें असत्कारशील होती है। इसी कारण गर्मियों के बरसाती महीने भ्रमण करने के लिए उपयुक्त हैं।

चूँकि वे मानसून के वृष्टि–छाया क्षेत्र में स्थित है, वे उस समय भ्रमण के लिए अनुकूल होते है। इन राज्यों के दक्षिणी भागों में भारी वर्षा होती हैं। कोई भी टुअर ऑपरेटर वर्ष के इन दिनों में गम्भीर पर्यटक को भूबद्ध क्षेत्र में ले जाने से फायदे में रहता है। अद्भुत सांस्कृतिक आकर्षण के कारण वह पर्यटकों के दिल में एक विशेष स्थान बनाने में कामयाब होता है। पर्वत के शिखर पर बौद्ध मठ पाये जाते हैं जो बर्फ से ढकी पर्वतमालाओं द्वारा छाया में पड़ जाते हैं। परन्तु उनकी आदिकालीन वास्तुकला, भित्ति चित्र और मठवासीय जीवन की कथायें बरकरार हैं। ये आकर्षण, यात्रा की कठिनाइयों और अच्छी पर्यटक सुविधाओं के अभाव की कुछ हद तक क्षतिपूर्ति कर लेते हैं। सिर्फ, पर्यटकों को जनजातीय परिवारों के साथ के लिए तैयार होना चाहिए।

भक्तजनों की, कश्मीर में अमरनाथ, ऊँचे हिमालय में उत्तराखण्ड में ब्रदीनाथ, केदारनाथ व हेमकुण्ड के चुनिंदा गंतव्यों की, वार्षिक यात्रा भी सिर्फ गर्मी के विशेष मौसम में भ्रमण परिचालन के लिए सम्भव होता है।

दूसरी ओर, अण्डमान व निकोबार द्वीपों में, वर्षाकाल में नहीं जाना चाहिए। इस कारण दक्षिणी भारत का बड़ा भाग बेहतर विकल्प है। यह शीतकालीन पर्यटकों को, भारत के उत्तरी मैदानों की कठोर सर्दी से बचने और दक्षिणी क्षेत्र की हल्की सर्दी का आनंद प्रदान करता है। ऐसी स्थिति में, पर्यटक की पसन्द ऋतु–विशिष्ट होती है यद्यपि कोई एक या एक से ज्यादा गंतव्यों के लिए आ सकता है। राजस्थान में, जैसलमेर के बालू के टीले, उसके रेगिस्तान और ऊँट उत्सव शीतकालीन भ्रमण के लिये प्रसिद्ध हैं। गंतव्य–बद्ध भ्रमण परिचालन, स्थान विशेष या उनके पर्यटक आकर्षण के लिए स्थानीय क्षेत्र मुख्यतः घूमने की इच्छा पर निर्भर होते हैं। भारत के तटों पर गोआ, केरल और पुरी की पुलिनें सर्वोत्तम पर्यटक गंतव्य हैं क्योंकि वहां शान्त समुद्र के किनारे बालू, जलमार्ग, बेकवाटर और जलक्रीड़ाओं की सुविधायें उपलब्ध है। इसी तरह से, भ्रमण परिचालन, जब हिमालय में पहाड़ी स्टेशनों, मध्य पहाड़ी श्रेणियों, पश्चिमी घाटों और नीलगिरि के लिये संचालित किया जाता है, तो गंतव्य विशिष्ट होता है। यात्रा और ठहरने की अवधि का निर्णय पहाड़ी गंतव्यों द्वारा प्रस्तुत आकर्षण के अनुसार होता है।

टिप्पणी

- पूर्णतया प्रशिक्षित टुअर गाइड और टुअर मैनेजर, व्यक्ति और टीम के रूप में, ट्रेवल एजेन्सी चलाने वाले संचालक स्टाफ की श्रृंखला में अत्यावश्यक कड़ियां बन गये हैं।
- भ्रमण प्रचालन, विदेशी पर्यटकों की स्थिति में प्रतिबंधित क्षेत्रों में घूमने जाने के वीसा प्रमाण पत्रों, बीमा और अनुमति पत्र लाना होता है।
- ट्रेवल टुअर प्रचालकों की सेवाओं की आवश्यकता ठहरने के स्थान की बुकिंग, आरक्षित शायिकाओं या सीटों के लिए टिकट लाने और पर्यटकों को किसी प्रकार की जानकारी देने के लिए होती है। आज के व्यस्त पर्यटन के समय में, महीनों पहले आरक्षण सम्बन्धी औपचारिकताओं को पूरा करना होता है अतः टुअर प्रचालकों की सेवायें बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।
- कुछ टुअर प्रचालन, वर्ष के कुछ समय के दौरान प्रतिकूल मौसम की स्थिति मे ऋतु–विशेष होता है, जबकि दूसरे प्रकार के टुअर प्रचालन गन्तव्य–विशेष होते हैं। इनमें टुअर प्रचालन आकर्षणों के लिए पर्यटकों की रूचि के अनुसार होते हैं।
- पर्यटन के विकास के दौरान, पर्यटन का प्रबन्ध एक व्यवसाय बन गया है और प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं का काम अब विशिष्ट प्रकृति का बन गया है।

पाठगत प्रश्न 31.1

1. निम्नलिखित के लिए एक उपयुक्त शब्द बताएं :

   (क) झील में बहता होटल

   (ख) रास्ते के किनारे छोटा होटल जो कमरों के समीप कारों की पार्किंग की जगह प्रदान करता है और भविष्य में जगह को विस्तारित किया जा सकता है।

   (ग) सड़क किनारे स्टॉल जो यात्रियों को शीघ्र पकने वाला आहार बेचते हैं।

   (घ) क्षेत्र में पर्यटक स्थानों पर ले जाने के लिए तैयार यात्रा अनुसूची।

   (ड़) भारत में सबसे बड़ा जल वन्य क्षेत्र जो अधिकांश रूप से जलमार्गों द्वारा पहुँचने योग्य है।

2. (क) तीन बस मार्गों की सूची तैयार करें जो पर्यटकों द्वारा रोमांचकारी बताये गये हैं।

   (ख) अंतर्राष्ट्रीय होटल प्रांगण के चार विशेष लक्षण बताएं।

टिप्पणी

3. पर्यटक आवागमन बढ़ने के लिए चार बड़े प्रोत्साहन क्या है?

4. उच्च वर्ग के यात्री हवाई यात्रा कम्पनियों द्वारा दी जा रही कटौतियों की रियायतों को पाने की फिक्र क्यों नहीं करते हैं?

आपने क्या सीखा

बुनियादी संसाधनों, जैसे कुशल परिवहन तन्त्र, होटल, सत्कारशील सेवायें और अन्य विभिन्न सुख साधनों का विकास आधुनिक पर्यटन के संचालन के लिए आधार है। पर्यटन, चाहे घरेलू हो या अंतर्राष्ट्रीय, का अस्तित्व और संवृद्धि सब श्रेणियों के ठहरने के स्थान में वृद्धि पर मुख्य रूप से निर्भर करती है। इससे विशेष रूप से व्यस्त शिखर समय में भी पर्यटक स्थानों पर पर्यटकों की भीड़ से निबटा जा सकता है। अल्प दूरी एवं लंबी दूरी के भ्रमण के लिए, हवाई, जल और स्थल परिवहन को विकसित करने की आवश्यकता है। परिवहन के विभिन्न वैकल्पिक साधन, समेकित ढंग से उपयोग के लिए प्रदान किये जाने चाहिए ताकि एक दूसरे के पूरक बन सके।

पर्यटन जैसा संवेदनशील सेवा उद्योग, विभिन्न टुअर कार्यकर्ताओं जैसे टुअर गाइड और टुअर प्रचालकों के कुशल कार्य पर समान रूप से निर्भर करता है। उन्हें अपने कार्य को प्रशिक्षित पेशेवरों के रूप में अपनाना चाहिये। ये दोनों कार्य अब सुव्यक्त रूप से सुस्पष्ट होते जा रहे हैं और वे विशिष्ट प्रकृति के हैं। इन कार्यकर्ताओं को ध्यानपूर्वक कार्यक्रम के साथ प्रशिक्षण लेना चाहिए। इससे पहले कि उन्हें भिन्न प्रकार के पर्यटकों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से अंतःक्रिया करें उन्हें कदम दर कदम श्रृंखलाबद्ध प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

विदेशी पर्यटक अपने गन्तव्य देश में, पूर्व नियोजन अवस्था से लेकर वापस घर जाने की अवस्था तक टुअर प्रचालक पर निर्भर होता है। उन्हें उनके वीसा, आवश्यक परमिटों की बीमा, और उनके भ्रमण व होटलों में ठहरने के दौरान टिकट लेने या आरक्षण के बारे में पूर्व जानकारी दी जानी चाहिए।

टुअर आपरेटर सब प्रकार के पर्यटकों को, विशेषरूप से शिखर मौसम के दौरान पर्यटकों के तीव्र प्रवाह की दृष्टि से, उनके पूर्व निश्चित टुअर अनुसूची को नियोजित करने में मदद करता है। वह हवाई अड्डे पर कानूनी औपचारिकताओं और पर्यटकों के सामान की देखभाल करता है। टुअर आपरेटर मौसम–विशेष या गंतव्य–विशेष हो सकता है, पर वो विशेष या विभिन्न प्रकार के आकर्षणों के लिए यात्रियों के हित की देखभाल करते हैं। जबकि टुअर आपरेटर की जिम्मेदारी पर्यटक या पर्यटकों के समूह

टिप्पणी

के अपने देश या घर के स्थान से शुरू हो जाती है। टुअर गाइड पर्यटक स्थल पर काम करता है। दोनों टुअर मैनेजर के समग्र संचालन एवं निगरानी के अंदर कार्य करते हैं। ये सभी लोग, कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न उद्देश्यों के लिए उनकी सहायता करते है, सभी सुस्थापित ट्रेवल एजेन्सी के आवश्यक अंग है।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दें :

   (क) पर्यटन के लिए कोंकण रेलवे की क्या संभाव्यता है?

   (ख) भारत में मेट्रो–रेल कहां पर शुरू की जा रही हैं

2. टुअर गाइडों और ट्रेवल एजेन्टों के प्रशिक्षण में किन चार बातों का अनुपालन किया जाता है?

3. निम्नलिखित के संदर्भ में, बढ़ते हुए पर्यटक आवागमन से निबटने के लिए एक–एक प्रमुख कदम बताइए

   (क) सड़कें, (ख) रेलवे, (ग) हवाई मार्ग, (घ) होटल

4. कौन से चार राज्य अभी तक छोटी लाइन की पर्वती ट्रेनें चला रहे हैं? उनके द्वारा पहुँचने वाले अंतिम हिल स्टेशन का नाम बताएं।

5. निम्नलिखित के बीच संक्षेप में अन्तर बताइए:

   (क) परिवहन के ढंग और साधन

   (ख) स्वर्णिम त्रिभुज और स्वर्णिम चतुर्भुज

   (ग) पर्यटक सर्किट एवं चक्रीय रेलवे टिकट

   (घ) खिलौना ट्रेन एवं हेलीपैड टेक्सी

   (ड़) फेयरी क्वीन और हिमालयन क्वीन

6. उपलब्ध स्थानीय टुअर गाइडों को अलग कर देने का क्या परिणाम होता है? सोदाहरण बतायें।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

1. (क) शिकारा (ख) मोटल, (ग) किऑस्क, (घ) परिधि भ्रमण, (ड़) सुन्दरवन

2. (क) मनाली–लेह, दार्जिलिंग–गंगटोक, मदुराई–कोडईकनाल मार्ग।

   (ख) सम्मेलन हॉल, इंटरनेट सुविधाओं के साथ संचार सम्बन्ध, स्वास्थ्य क्लब, शापिंग मार्ट/ट्रेडिंग आउटलेट

3. (क) परिवहन प्रणाली की क्षमता में वृद्धि, (ख) आरामदेय सीटों में उचित वृद्धि, (ग) उच्च गतियां, (घ) किराये में कटौती।

4. अनुच्छेद 31. 1 (क) देखें।

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. (क) 31.1 के अंतर्गत पैरा 1 देखें।

   (ख) अनुच्छेद 31.1 घ देखें।

2. दिल्ली–कोलकाता, दिल्ली–मुम्बई, मुम्बई–चेन्नई और कोलकाता–चेन्नई को जोड़ने वाले रेल मार्ग स्वर्णिम चतुर्भुज बनाते हैं, जबकि दिल्ली–आगरा–जयपुर और वापस दिल्ली पर्यटक परिधि सड़क मार्ग स्वर्णिम त्रिभुज कहलाता है।

3. (क) बहु–पथ/सीमा चौकी की औपचारिकताओं और यातायात जमाव की निकासी की क्षमता प्रदान करने के लिए विद्यमान सड़को का सुधार।

   (ख) रेलवे आरक्षण और आहार व्यवस्था की सुविधाओं में सुधार।

   (ग) हवाई उड़ान की सुरक्षा, आराम और नियमितता सुनिश्चित करने की बेहतर सुविधाएं।

   (घ) अच्छी आहार व्यवस्था और सत्कारशील सेवाएं प्रदान करने हेतु कुशल व प्रशिक्षित संचालन स्टाफ।

4.

राज्य	हिल स्टेशन
(क) हिमाचल प्रदेश	शिमला

टिप्पणी

(ख) पश्चिम बंगाल दार्जिलिंग

(ग) महाराष्ट्र माथेरान

(घ) तमिलनाडु उदगमंडलम (ऊटी)

5. (क) अनुच्छेद 31.1 देखिए।

(ख) अनुच्छेद 31.1 देखिए।

(ग) अनुच्छेद 31.1 (ग) व (घ) देखिए।

(घ) अनुच्छेद 31.1 देखिए।

(ड़) अनुच्छेद 31.1 (घ) देखिए।

6. अनुच्छेद 31.1 (क) देखिए।

टिप्पणी

32

वृत्त अध्ययन के द्वारा सुझाव

हमने अब तक स्थानीय क्षेत्र नियोजन के विभिन्न आयामों और आंकड़ों/जानकारियों की प्रक्रिया की तकनीकों के बारे में पढ़ा। ये आयाम विभिन्न भौगोलिक ढ़ांचों के अंर्तगत वृत्त अध्ययन का संचालन करने में मदद करेंगे। हमने आपका कार्य सुविधाजनक बनाने के लिए, चार वृत्त अध्ययनों की चर्चा की है। ये वृत्त अध्ययन बाजार, मलिन बस्ती, जनजातीय और पहाड़ी क्षेत्रों से सम्बंधित है। इस इकाई में, हमने वृत्त अध्ययन का विस्तृत ब्यौरा दिया है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- वृत्त अध्ययन को पढ़ने का मूल आधार उचित ठहरा सकेंगे;
- विभिन्न वृत्त अध्ययनों को और उनके स्थानीय क्षेत्र के महत्व को जान सकेंगे;
- विभिन्न भौगोलिक विन्यासों के अंतर्गत स्थितियों और अवस्थाओं की तुलना कर पाएंगे;
- स्थानीय क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास और भौगोलिक अवस्थाओं के साथ सम्बन्ध को विश्लेषित और स्थापित कर पाएंगे;
- केस अध्ययनों को, उनकी नियोजन प्राथमिकताओं और स्थानीय लोगों के सामाजिक आर्थिक महत्व के विषयों के सम्बन्ध में, स्पष्ट कर पाएंगे;
- आगे और विकास के लिए योजना का सुझाव दे पाएंगे।

32.1 वृत्त अध्ययन का महत्व

देश के विभिन्न भागों में लोगों के विकास के स्तरों और सामाजिक आर्थिक अवस्थाओं और भौगोलिक विन्यास के सम्बन्ध में उल्लेखनीय भिन्नताएं हैं। हम धरातलीय वास्तविकताओं का क्षेत्रीय सर्वेक्षण करके बेहतर समझ सकते हैं। क्षेत्रीय सर्वेक्षण की विचार पद्धति सामान्यतः नियमित होती है और हर प्रकार के सर्वेक्षणों के लिए पूछताछ

के निधार्रित मानदण्ड होते है। परन्तु यह तरीका विशिष्ट वृत्त अध्ययनों, जो अपने आप में अलग होते हैं, और नियोजित समस्याओं के समाधान होते है, के लिए पर्याप्त नहीं है। यह भ्रम उत्पन्न करता है और कुछ मुद्दों को, जो दूसरे तंत्र में तुलनात्मक रूप से कम अर्थपूर्ण हैं, अनुचित महत्व प्रदान करती है। ऐसे में, वृत्त अध्ययन की आवश्यकता है जो क्षेत्र और लोग विशिष्ट अवस्थाओं के साथ सम्बधित हों और स्थितियों का विश्लेषण करने के तरीके पेश करे। वृत्त अध्ययन लोगों और क्षेत्रों के विशिष्ट समूह द्वारा झेले जाने वाली विभिन्न समस्याओं को प्रतिबिम्बित करती हैं। यह विभिन्न स्थानीय क्षेत्रों और लोगों के लिए नियोजन की प्राथमिकताओं को भी प्रतिबिम्बित करती हैं। उदाहरण के लिए, बाजार क्षेत्रों को– जहाँ उन्हें पार्किंग स्थान, भीड़–भाड़ और लोगों के असाध ाारण जमाव, विभिन्न स्तरों के उत्पादकों व उपभोक्ताओं के लिए वस्तुओं की गुणवत्ता और विविधता के मुद्दों का सामना करना पड़ता है। इसके विपरीत, जनजातीय क्षेत्र कम विकसित प्रौद्योगिकीय आधार, गंदगी, निर्धनता, और पर्यावरणीय अधःपतन को भुगतते हैं।

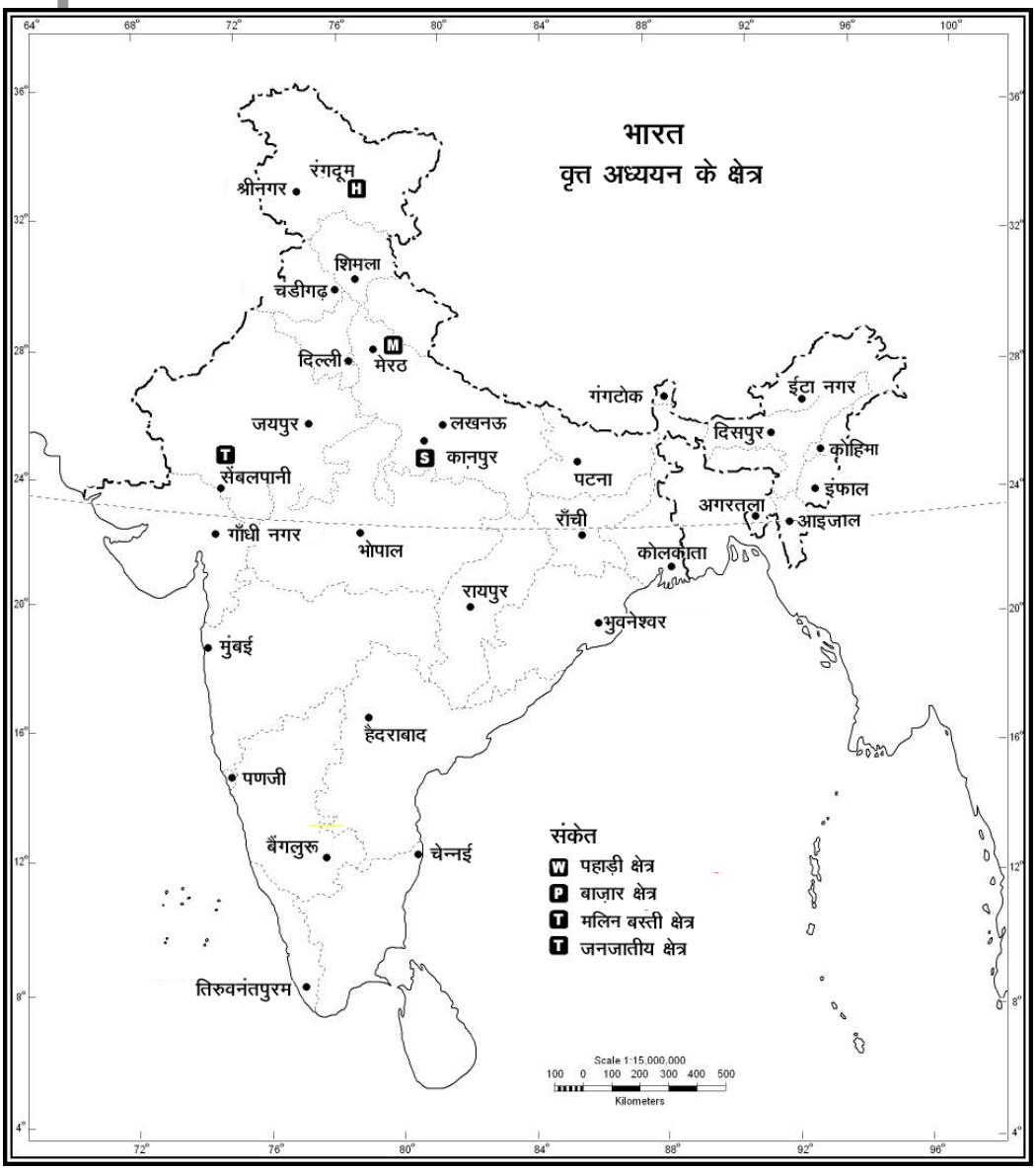

मानचित्र चित्र 32.1 वृत्त अध्ययनों के स्थल

टिप्पणी

स्लम क्षेत्रों की प्राथमिकताएं, स्वच्छता स्वास्थ्य हैं, जबकि पहाड़ी क्षेत्रों की प्राथमिकताएं अगम्यता दूरी की वजह से एकांतता, कठोर पर्यावरणीय अवस्था हैं। यही प्रकार्यात्मक या कारोबार सम्बन्धी सर्वेक्षणों के मामले में भी सत्य है। पहाड़ी क्षेत्रों, पठारी और समतल मैदानों में कृषि अत्यधिक भिन्न होती है। एक तंत्र के अन्दर भी उल्लेखनीय भिन्नताएं उपस्थित रहती हैं। उदाहरण के लिए, पंजाब की कृषि आसाम के मैदानों की या केरल और तमिलनाडु के बगानों की कृषि से भिन्न होती है। अतः केस अध्ययन क्षेत्र–विशिष्ट नियोजन सम्बंधित मुद्दों के लिए वास्तविक आधार प्रदान करती है।

वृत्त अध्ययन की पृष्ठभूमि

जिन वृत्त अध्ययनों को यहां पेश किया गया है, भौगोलिक विश्लेषण में उनके महत्व के सम्बन्ध में उनकी यहां संक्षिप्त चर्चा की गई है।

बाजार क्षेत्र के वृत्त अध्ययन का सम्बन्ध अब स्थिति से रहता है जहां कि लोग अपने उत्पादों और सेवाओं को बेचते हैं, जबकि अन्य उपभोग या आगे और प्रौसेसिंग करने के लिए माल और वस्तुएं खरीदते हैं। बाजार भिन्न–भिन्न होते हैं—ग्रामीण बाजार, साप्ताहिक हाट, विशिष्ट बाजार और मॉल। बाजार के अध्ययन में, वस्तुओं और सेवाओं के आदान–प्रदान के लिए अंत क्रिया सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है।

मलिन बस्ती का वृत्त अध्ययन उस भौगोलिक स्थिति से सम्बन्ध रखता है जिसमें लोगों का समूह निवास स्थल में, मुख्य तौर पर खराब आर्थिक परिस्थितियों की वजह से, गंदी और अस्वास्थ्य कर स्थितियों में रहने को बाध्य होते हैं। मलिन बस्ती का अध्ययन स्थान की समस्या से अवगत कराता है और इनमें से कुछ मुद्दों को विकासात्मक गतिविधियों के जरिये ठीक करने की चेष्टा करता है।

जनजातीय क्षेत्र का केस अध्ययन लोगों के समूह के निवास क्षेत्र, अर्थव्यवस्था और समाज से सम्बंधित होती है। इस समूह के लोग पारम्परिक तरीके से उत्पादन व वितरण में लगे होते हैं। जनजातीय समूह सामान्यतः दूरस्थ छोटे भौगोलिक क्षेत्र जैसे वन, पहाड़ियां, घास स्थल और ऊँचे प्रदेश या निचले प्रदेशों में कम उपजाऊ अंचलों में बसता है। जनजातीय क्षेत्र का अध्ययन स्पष्ट करता है कि किस प्रकार समुदाय, निम्न उत्पादनों और निम्न स्तर के आधारिक ढांचे के बावजूद, प्रकृति के साथ ताल–मेल में रहता है। जनजातीय क्षेत्रों का दूरस्थ अलगाव उनकी संस्कृति को ज्यों का त्यों रखता है और उसमें सुधार आता रहता है। धीमा परिवर्तन उन्हें कम आधुनिक श्रेणी में रखता है।

पहाड़ी क्षेत्र का वृत्त अध्ययन भू–खण्ड की कठोरता, उसकी समुद्र तल से अधिक ऊँचाई, तेज ढाल और सीमित भूमि संसाधनों को स्पष्ट करता हैं। तदनुसार, सीमित उपजाऊ भूमि पर दबाव काफी अधिक है। यह ध्यान दिया जाए कि पहाड़ी क्षेत्र आयाम और महत्व में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ी स्टेशन, घाटी क्षेत्र और औसत ढलान के क्षेत्रों में जनसंख्या दबाव, भूमि की भिन्न धारण क्षमता की वजह से, भिन्न–भिन्न होता है। हिमपात पहाड़ी क्षेत्रों में स्थान विशिष्ट रुकावटें हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में समुदाय प्रकृति जन्य आरोपित प्रतिरोधों का सामना करने के लिए संगठित, सुगठित और ठोस बना रहता है।

पाठगत प्रश्न 32.1

1. देश के विभिन्न भागों में विविधता उत्पन्न करने वाले तीन कारक बताइए।

   (क) _____ (ख) _____ (ग) _____

2. सामान्य क्षेत्रीय सर्वेक्षण और विशिष्ट वृत्त अध्ययन के बीच दो अन्तर स्पष्ट कीजिए।

   क. _____

   ख. _____

3. निम्न में से प्रत्येक से सम्बंधित नियोजन की दो–दो प्राथमिकताएं बताइए।

   (क) बाजार क्षेत्र — नियोजन प्राथमिकताएं

   (i) _____

   (ii) _____

   (ख) पहाड़ी क्षेत्र

   (i) _____

   (ii) _____

32.2 वृत्त अध्ययन -I

बाजार/साप्ताहिक बाजार का सर्वेक्षण

बाजार स्थल वो स्थान हैं जहां विक्रेता और क्रेता मिलते हैं और भुगतान पर माल और वस्तुओं का आदान–प्रदान करते हैं। क्रेता वो हैं जो अपनी जरूरत की चीजें खरीदते हैं जबकि विक्रेता वो हैं जो भुगतान पर चीजें (माल व वस्तुएं) बेचते हैं। बाजार–स्थल मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं—सामान्य या परचून बाजार और विशिष्ट या थोक बाजार। सामान्य बाजार स्थल लगभग सभी प्रकार के माल/वस्तुओं की विपणन सुविधा पेश करते हैं। विक्रय वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रत्येक दुकान भिन्न होती है। परचून बाजार केंद्र के मामले में वस्तुओं की संख्या और विविधता सीमित रहती है। वो उस इलाके और आस–पास के स्थानों की जरूरत की वस्तुएं और माल मुहैया कराता है। परचून बाजार केंद्रों के आकार में बहुत भिन्नताएं होती है। आवासीय ठिकानों या ग्रामीण बाजार क्षेत्रों में कुछ दुकानों से लेकर परचून बाजार केन्द्र इतना बड़ा हो सकता है जितना कि दुकानों का बड़ा समूह। खरीद क्षेत्र के ढांचे और स्थायित्व के आधार पर, बाजारों को नियमित और साप्ताहिक बाजारों में विभाजित किया जा सकता है। नियमित

टिप्पणी

बाजार वो है जहां दुकानों का स्थायी भौतिक ढांचा होता है और जो नियमित या दैनिक आधार पर खरीद सुविधा पेश करता है। साप्ताहिक बाजार वो हैं जिनका अपना स्थायी भौतिक ढांचा नहीं होता है, बल्कि ये दुकानें चलती–फिरती होती हैं और सप्ताह में निश्चित दिन को खरीद सुविधा प्रदान करती है। इन बाजारों का खुला या आंशिक आवरण का अस्थायी टेन्ट या दुकाननुमा ढांचे होते हैं जिसका बंडल बांधा या लपेटा जा सकता है और जिन्हें दूसरे स्थान पर भेजा जा सकता है, जहां कि अगले दिन साप्ताहिक बाजार लगाना निश्चित हुआ है। साप्ताहिक बाजार, ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से विविध उपभोक्ताओं को सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। परिवार की लगभग सभी अनिवार्य जरूरतें इन बाजारों में बेची जाती हैं। साप्ताहिक बाजारों के भिन्न स्थानीय नाम होते हैं—''पैठ'', ''हाट'', ''बाजार'', इत्यादि। इन बाजारों को साप्ताहिक दिनों के नाम भी दिए जाते हैं जैसे– शुक्र बाजार, बुध बाजार आदि।

क्षेत्रीय कार्य का संचालन

क्षेत्रीय सर्वेक्षण करने के प्रति पहला कार्यभार बाजार क्षेत्र का चयन है जो कि आपकी पहुँच से अत्यधिक दूर नहीं होना चाहिए और महत्वपूर्ण होना चाहिए। उसे सामान्य मिश्रित प्रकार का बाजार होना चाहिए। कौन सी वस्तुएं और माल बेचे जा रहे हैं मालूम करने के लिए पूर्व परीक्षा सर्वेक्षण करें, प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत दो या पांच दुकानें चुनें, कुल सर्वेक्षण के लिए 25 दुकानें तक चुनी जा सकती हैं। अगला सोपान मूलभूत जानकारी एकत्रित करने का है और बाजार का आधार मानचित्र बनाएं। मूलभूत जानकारी जैसे जनसंख्या, क्षेत्र और नागरिक सुख साधन और बाजार का मानचित्र स्थानीय सरकार के कार्यालय, नगर निगम, नगरपालिका इत्यादि से प्राप्त किया जा सकता है। यदि मानचित्र उपलब्ध नहीं हों, तो स्केच मैप खींचे जा सकते हैं। यह मानचित्र जगह की श्रेणीबद्धता और दिशा प्रदान करने के लिए होते हैं और अक्सर पैमाने अनुसार नहीं खींचे जाते हैं। सब दुकानें उतनी ही जगह के साथ दिखाई जाती है। ऐसे मानचित्र अध्ययन का सीमित उद्देश्य पूरा करते हैं।

बाजार सर्वेक्षण की कार्यविधि, उपलब्ध समय और क्षेत्रीय कार्य के उद्देश्यों पर आधारित होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि बाजार केन्द्र छोटा है, तो सभी दुकानों का सर्वेक्षण किया जा सकता है। तथापि, मध्यम और बड़े बाजार के बाजार केन्द्रों के मामले में, हमें विभिन्न प्रकार की भिन्न–भिन्न दुकानें चुननी चाहिए। सिर्फ स्थानीय जाने पहचाने बाजार जैसे ''रविवारीय बाजार'', ''बुध बाजार'', ''मंगल बाजार'' इत्यादि का भी सर्वेक्षण किया जा सकता है। इन बाजारों को ''तह बाजारी प्रणाली'' के अंतर्गत नियंत्रित किया जाता है। इस प्रणाली के अंतर्गत, स्थानीय सरकार (निगम समिति या ग्राम पंचायत) बाजार की निर्विघ्न कार्यशीलता के लिए 'तह बाजारी' के ठेके ठेकेदारों (व्यक्तियों का समूह या व्यक्ति हो सकता है) को देती है। 'तह बाजार' के दाम दुकानों द्वारा लिए क्षेत्र के अनुपात में होता है। उदाहरण के लिए, जूता मरम्मत दुकान एक वर्गमीटर क्षेत्र घेरती है, तो इसे 5/- रुपये देने पड़ सकते हैं, जबकि कपड़े के व्यापारी को 8 से 10 मीटर के क्षेत्र की दुकान के साथ, शायद 50 - 99 रुपये बाजार दिन के लिए चुकाने होंगे।

टिप्पणी

विशिष्ट बाजार कुछ माल/वस्तुओं की खरीद फरोख्त से सम्बंधित होते है। इन बाजारों की विशेषता दुकानों का झुंड या समूह होता है और यह एक ही विशिष्ट मद की बिक्री करता हैं। ऐसे अधिकांश बाजार थोक व्यापार से सम्बंधित होते हैं और विशिष्ट मद या वस्तु की गुणवत्ता की काफी किस्में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, अनाज बाजार (गल्ला बाजार), दालों का बाजार (दाल मंडी), फलों का बाजार (फल मंडी), सब्जी बाजार (सब्जी मंडी), कपड़ा बाजार (बाजार बजाजा), जेवरों का बाजार (बाजार सर्राफा), स्टेशनरी बाजार (काग़जी बाजार) इत्यादि।

बाजार स्थलों के ग्राहक दोनों पास–पड़ोस और देहाती क्षेत्र (पास के गांव) से होते हैं। क्योंकि कृषि सम्बन्धी क्रिया–कलाप मौसमी प्रकृति के होते हैं, तो दोनों परचून और थोक बाजार में उतार–चढ़ाव होते रहते हैं। इसी तरह से, त्यौहारों और उत्सवों के अवसरों के समय, व्यापारिक गतिविधि में तेजी आ जाती है। इसके विपरीत, प्रतिकूल मौसम की अवस्थाओं के दौरान, बाजार सम्बन्धी गतिविधियों में काफी कमी आ जाती है। व्यापार के नियत समय के दौरान भी, ग्राहकों की संख्या में वृद्धि या कमी होती रहती है। सुबह 10.30 से 12.30 और 4.30 शाम से 6.30 शाम का समय व्यापारिक गतिविधियों का व्यस्ततम समय होता है। जिन दुकानों का सर्वेक्षण करना है उन्हें उपयुक्त सैम्पलिंग तकनीक के आधार पर चुनना चाहिए। तथापि, सैम्पल की पुनरावृति से बचना चाहिए जिससे परिणामों में त्रुटियों की संभावना कम हो जाए। दुकानों का सैम्पल (प्रतिदर्शी) और व्यापार गतिविधि का सैम्पल (सामान्य व्यापारी, पंसारी/किराना बेचने वाला, बजाज/वस्त्र विक्रेता, लेखन सामग्री विक्रेता आदि) चुन लेने के बाद, हमें दुकानों के अनुसार बाजार सर्वेक्षण करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 32.2

1. निम्नलिखित कथनों का एक शब्द में उत्तर दीजिए–

   (क) स्थान जहां विक्रेता और क्रेता मिलते हैं और भुगतान पर माल व वस्तुओं का आदान–प्रदान करते हैं।

   (ख) दुकानों का स्थायी भौतिक ढांचे सहित स्थल जो दैनिक आधार पर खरीद सुविधा प्रदान करता है।

   (ग) सप्ताह में निश्चित दिन पर दुकानों के अस्थायी ढांचे वाला स्थल।

   (घ) बहुत विविधता और गुणवत्ता की बहुत विशिष्ट मदों से सम्बंधित बाजार केंद्र।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक की दो–दो विशेषताएं सूचीगत कीजिए।

   (क) परचून बाजार

   (i) _____ (ii) _____

टिप्पणी

(ख) थोक बाजार

(i) _____ (ii) _____

32.3 वृत्त अध्ययन -II

मलिन बस्ती क्षेत्र विकास : कानपुर शहर का वृत्त अध्ययन

मलिन बस्ती शहरी निर्धनों का आश्रय स्थल हैं। मात्र न्यूनतम सामाजिक सुविधाओं और सुख–साधनों के अभाव में, वो अस्वच्छपूर्ण परिस्थितियां प्रतिबिम्बित करते हैं। प्रति व्यक्ति न्यूनतम आय और रहने की जगह अत्यन्त निम्न स्तर की विशेषता के साथ, मलिन बस्ती भारत के अधिकांश महानगरों में शहरी निर्धनों के आश्रय स्थल हैं। एक अनुमान के अनुसार, बड़े शहरों में जनसंख्या का करीब 20 से 40 प्रतिशत मलिन बस्ती में रहता है। बढ़ता हुआ औद्योगिकीकरण, पूंजी विनियोग में हो रही वृद्धि और शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर, ग्रामीण प्रवासियों को, आजीविका के कम से कम गुजर बसर के माध्यमों की व्यवस्था के आश्वासन द्वारा निरन्तर आकर्षित कर रहे हैं। तथापि, मकानों की बढ़ती हुई लागत और किराये ने अधिकांश लोगों को स्लम में रहने के लिए बाध्य किया है। अतः, यह ग्रामीण निर्धनता का शहरी क्षेत्रों में हस्तान्तरण है। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की बहुसंख्या अशिक्षित है। इसलिए, वो निम्न पारिश्रमिक वाली नौकरियों में रोजगार पाते हैं या निम्न आय व्यवसायों में कार्य करते हैं। मलिन बस्ती सामान्यतः कलकत्ता में बस्ती, मुम्बई में चॉल और कानपुर में अहाता के नाम से जानी जाती है। अतः भिन्न शहरों में मलिन बस्ती की स्थान स्थिति के अनुसार विशिष्ट नाम हैं। भारत में 2001 में, 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों में करीब 1.65 करोड़ जनसंख्या मलिन बस्ती में रहती थी।

कानपुर महानगर, उत्तर प्रदेश राज्य में, गंगा नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। भारतीय जनगणना 2001 के अनुसार, कानपुर में कुल जनसंख्या 25, 51, 337 थी और भारतीय शहरों में इसका 8वां स्थान था। 1901 में 2, 02, 797 की कुल जनसंख्या से, पिछली शताब्दी के दौरान, इस शहर की जनसख्या में 12.5 गुना की वृद्धि हुई है। तदानुरूप, लगभग 24 हजार व्यक्ति प्रत्येक वर्ष बढ़ते गए। उद्योगों, व्यापार और वाणिज्य की तीव्र वृद्धि ने उत्तर प्रदेश के आस पास के जिलों से श्रमिकों के लिए गुरुत्वार्कषण शक्ति के रूप में कार्य किया है। एक अनुमान के अनुसार कानपुर शहर की लगभग 76.27 प्रतिशत जनसंख्या शहर केन्द्र के भीड़–भाड़ वाले हिस्से में रहती है।

कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों का क्षेत्र सर्वेक्षण दो चरणों में किया गया था। यहाँ

क्षेत्रीय सर्वेक्षण का पहला चरण कुल मलिन बस्तियों के आवासों का (बांस मंडी, दर्शन पुरवा, चमन गंज) वहाँ पर उपलब्ध स्वच्छता, स्वास्थ्य दशाएँ और सार्वजनिक उपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता पर आधारित था। दूसरा चरण परिवारों (25) के सैम्पल सर्वेक्षण से सम्बंधित था। यह परिवार शहर के अन्दरुनी, मध्य और बाहरी अंचलों के मलिन बस्तियों के ठिकानों से बेतरतीब रूप से चुने गए थे। सर्वेक्षण जनसंख्या के आकार, रहने के स्थान, रोजगार और परिवारों की आय से सम्बधित था।

जनसंख्या का ढ़ांचा और परिवार का आकार

औसतनः, मलिन बस्ती क्षेत्र में एक परिवार लगभग 10 से 15 वर्ग मीटर के क्षेत्र पर निवास करता है। जनसंख्या का घनत्व, कानपुर के अधिकांश मलिन बस्ती क्षेत्रों में प्रति हैक्टेयर 3000 से 4000 व्यक्तियों के बीच में हैं। केन्द्रीय वाणिज्य क्रोड़ और शहर के औद्योगिक पॉकेटों द्वारा घिरे निवास क्षेत्रों की लगातार एक पेटी है। आवासीय ब्लाक सामान्यतः दो मंजिले या तीन मंजिले हैं और तंग गलियों द्वारा अलग दिखते हैं। मलिन बस्तियों का सम्पूर्ण दृश्य मानवीय निवास के लिये अत्यधिक अस्वच्छ अवस्था प्रस्तुत करता है। भारत की 2001 की जनगणना के अनुसार, कानपुर शहर में मलिन बस्तियों की कुल जनसंख्या 3,68, 808 व्यक्ति थी।

मलिन बस्तियों, सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में अधिकांशतः पृथक क्षेत्र हैं। यह देखा गया है कि मलिन बस्तियों में मुख्यतः सामाजिक समूह का एक वर्ग ही रहता है (इस मामले में हिन्दू या मुस्लिम)। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक सामाजिक समूह के अन्दर, मलिन बस्तियों में जाति समूह या विशिष्ट क्षेत्र से प्रवासित लोग मुख्यतः हो सकते हैं। प्रकार्यात्मक रूप से, मलिन बस्ती, मोटे तौर पर, एक ही आर्थिक पेशा और आर्थिक स्तर प्रतिरूपित करती है। अधिकांश मलिन बस्ती निवासी आर्थिक रूप से गरीब हैं।

परिवार का औसत आकार 6:1 है। तथापि, आप छोटे और मध्यम आकार के परिवार देख सकते हैं जो 1-5 व्यक्तियों के बीच; बड़ा परिवार 6 से 11 व्यक्तियों के बीच का हो सकता है और बहुत बड़ा 12 या अधिक व्यक्तियों का हो सकता है। मलिन बस्तियों में परिवारों के सर्वेक्षण ने दर्शाया है कि 38.4 प्रतिशत छोटे और माध्यम आकार के परिवार थे, 54.7 प्रतिशत बड़े आकार के और 6.9 प्रतिशत बहुत बड़े परिवार थे।

व्यावसायिक ढ़ांचा

अध्ययन से पता चलता है कि 46.4 प्रतिशत परिवार व्यावसायिक सेवाओं में लगे हुए थे जैसे नलकारी का काम, राजगीरी का काम इत्यादि, और 32.8 प्रतिशत व्यापार और वाणिज्य में सहायक, 18.12 प्रतिशत दैनिक अकुशल श्रमिक और 1.8 प्रतिशत बेरोजगार थे और रोजगार ढूंढ़ रहे थे। खण्डीय रोजगार के सम्बन्ध में, लगभग 46.9 प्रतिशत श्रमिक अनौपचारिक क्षेत्र में लगे थे।

टिप्पणी

सारिणी क्र. 32.1 कानपुर के मलिन बस्ती क्षेत्र में परिवारों का आकार और व्यावसायिक ढ़ाँचा

परिवार का आकार	सेवाएँ		व्यापार		श्रमिक		बेरोजगार		कुल	
	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
छोटे एवं मध्यम (1-5 व्यक्ति)	44	45.36	27	27.84	22	22.68	4	4.12	97	100
बड़े (6-11 व्यक्ति)	63	46.47	47	34.81	25	18.52	0	0.00	135	100
बहुत बड़े (12 और अधिक व्यक्ति)	9	50.00	8	44.44	1	5.56	-	-	18	100
	116	46.40	82	32.80	48	19.20	4	1.60	250	100

परिणाम दर्शाते हैं कि अधिकांश मलिन बस्ती निवासी सेवा क्षेत्र में लगे हैं। इसमें दोनों औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र सेवाएं शामिल हैं। व्यापार क्षेत्र में नौकरियां आनुपातिक रूप से बड़े और बहुत बड़े परिवार समूहों में से अधिक है। इसके विपरीत, दैनिक मजदूरी उपार्जनकर्ताओं (दैनिक मजदूर) का अनुपात छोटे और मध्यम आकार के परिवार समूहों में ज्यादा है। यह समूह बेरोजगार या रोजगार इच्छुकों को भी प्रतिबिम्बित करता है।

अतः उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि बड़े और बहुत बड़े परिवार अपनी आर्थिक गतिविधियों में विविधता लाकर पारिवारिक आमदनी को बढ़ाते हैं। इसके बदले में, यह परिवार की बढ़ी हुई आय की वजह से विभिन्न प्रकार की व्यापारिक गतिविधियों को जन्म देते हैं। स्लम बस्ती में संयुक्त परिवार व्यवस्था का छोटे परिवार व्यवस्था की तुलना में ज्यादा संचयी उत्पत्ति प्रभाव होता है।

आय सृजन का स्तर

कुल मिला कर मलिन बस्तियों से शहरी निर्धनों के समूह का आभास मिलता है। तथापि, आप मलिन बस्ती निवासियों के बीच आय भिन्नतायें देख सकता है। क्षेत्र सर्वेक्षण तीन स्तर दर्शाता है: मासिक आय के आधार पर निम्न, मध्यम और उच्च स्तर।

सारिणी क्र. 32.2 कानपुर के मलिन बस्ती क्षेत्र में मासिक आय के स्तर

आय समूह	परिवारों की संख्या	प्रतिशत में हिस्सा
निम्न (1000 से कम)	185	74.0
मध्यम (रु. 1001–2000)	52	21.2
उच्च (रु. 2000 से अधिक)	12	4.8
कुल	250	100.00

185 निम्न आय समूहों में से, 74 छोटे और मध्यम से आए, 106 बड़े, और सिर्फ 5 बहुत बड़े परिवार आकारों से थे। 53 मध्यम आय समूहों में से, 74 छोटे और मध्यम से दर्ज किए गए थे, 28 बड़े और 11 बहुत बड़े परिवार आकारों से थे। ज्यादा उच्च आय समूहों में, यह संख्या 3, 6 और 3 क्रमशः दर्ज की गई थी। निम्नलिखित सारिणी प्रतिव्यक्ति आय और परिवार के आकार के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट करती है।

सारिणी क्र. 32.3 दैनिक प्रति व्यक्ति आय

परिवार का आकार	50 रु. से कम	रु. 50–100	रु.101–150	रु. 151–200	200 रु. से अधिक	कुल
छोटे/मध्यम	22	38	37	6	4	97 (38.8)
बड़े	46	42	33	13	1	135 (54.0)
बहुत बड़े	4	8	4	2	–	18 (7.2)
कुल परिवार	72 (28.8)	88 (35.2)	64 (25.6)	21 (8.4)	5 (2.0)	250 (100.00)

परिणाम दर्शाते हैं कि मलिन बस्ती निवासियों का 28.8 प्रतिशत दैनिक आधार पर 50 रुपये या कम कमाता है, लगभग 35.2 प्रतिशत 51 रु.—100 रु. के बीच, 25.6 प्रतिशत 101 रु.—150 रु के बीच, 8.4 प्रतिशत 151 रु.—200 रु. के बीच और बाकी लगभग 2 प्रतिशत 200 रु. से अधिक कमाते हैं। अतः अधिकांश स्लम निवासियों की प्रतिव्यक्ति आय निम्न हैं। छोटे और मध्यम आकार के परिवारों की औसत आय 90 रुपये थी, बड़े परिवारों की 81 रुपये और बहुत बड़े परिवारों की 86 रुपये थी।

साक्षरता

250 परिवारों में से, 158 (63.2%) साक्षर थे और 92 (36.8%) निरक्षर थे। 158 साक्षरों में से, 98 सेवा क्षेत्र में से थे, 54 व्यापार और 2 अकुशल श्रपिकों से थे और उनमें से 4 सेवा क्षेत्र से रिटायर हो गए थे। 92 निरक्षरों में से, 18 सेवा क्षेत्र से, 29 व्यापार से और 45 श्रमिकों में से थे।

आवासीय ढांचा

परिवारों को उपलब्ध निवास स्थान 10 वर्ग मीटर से 15 वर्ग मीटर के बीच थे। आवासीय स्थान इस प्रकार वर्गीकृत किया गया थाः (i) छोटा–10 वर्गमीटर से कम, (ii) मध्यम–10 से 12 वर्गमीटर और बड़े–12 वर्गमीटर से ज्यादा जगह के साथ।

टिप्पणी

सारिणी क्र. 32.4 कानपुर के मलिन बस्ती क्षेत्र में आवासीय ढ़ांचा

उपलब्ध जगह के प्रकार	संरचनाओं की संख्या	प्रतिशत
छोटे	149	59.6
मध्यम	53	21.2
बड़े	48	19.2
कुल	250	100.00

सारिणी 32.4 दर्शाती है कि मलिन बस्ती में रहने वाले अधिकांश लोगों का छोटा निवास स्थान है। 250 सर्वेक्षित परिवारों में से, 149 छोटे में, 53 मध्यम और 48 तुलनात्मक रूप से बड़े निवास स्थान में रहते थे।

मलिन बस्ती निवासी अधिकांशतः किरायेदार थे (83 प्रतिशत) और एक कमरे में रहते थे, और औसतनः 62 रुपये का मासिक किराया देते थे। करीब 85 प्रतिशत निवास गृहों में बिजली थी, 21.3 प्रतिशत में स्नानघर था और 43.5 प्रतिशत के पास शौचालय था और 28.2 प्रतिशत में नल सुविधाएं थी।

बड़ी नालियों, रेलवे लाइनों और कूड़ा स्थलों के साथ ही साथ मलिन बस्ती निवासियों के छप्पर, मिट्टी तथा टेन्ट घर के आम स्थल देखे जा सकते हैं। कभी–कभी इन लोगों को नगर विकास प्राधिकरण द्वारा निम्न लागत पर आवास भी प्रदान किए जाते हैं। अतः वो हमेशा विस्थापित बने रहते हैं और पुर्नवास तथा पुनः बसाने की समस्या उनकी आम समस्या बनी रहती है।

मलिन बस्ती शहरी निर्धनों का आश्रय स्थल है। वो मात्र न्यूनतम सामाजिक सुख–साधनों और सुविधाओं के अभाव में अस्वच्छता की अवस्था प्रतिबिम्बित करते हैं। मलिन बस्ती ग्रामीण निर्धनता, बड़े पैमाने पर विस्थापन और शहरों में बढ़ते रोजगार के अवसरों का परिणाम है।

मलिन बस्ती क्षेत्र विकास

मलिन बस्ती क्षेत्र मानव अधिवास के सर्वाधिक वंचित ठिकाने हैं।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण और भिन्न शहरों में मलिन बस्ती सुधार के अनुभवों के आधार पर निम्नलिखित नियोजन का सुझाव दिया गया है।

1. मूलभूत सामाजिक सुख साधनों की व्यवस्था

सुरक्षित पेय जल, स्वच्छता, शौचालय, संवातन, स्कूल, दवाखाना, डाकघर, सड़क, परिवहन और संचार के माध्यम, बाजार केन्द्र, सामुदायिक केन्द्र इत्यादि प्रत्येक स्थानीय

बस्ती को, बिना उसकी हैसियत (अमीर या गरीब) पर ध्यान दिए, प्रदान करना चाहिए। यह मानव कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए किया जा सकता है। ''सुलभ'' इंटरनेशनल (गैर–सरकारी संस्था) की सेवाएं सर्वाधिक मितव्ययी और स्वच्छ प्रमाणित हुई हैं। यह सम्पूर्ण समुदाय के लिये सृजित करने की आवश्यकता है क्योंकि लोग गरीब हैं और पारिवारिक स्तर पर इनमें से बहुत से सुविधाओं का खर्चा नहीं दे सकते।

2. आर्थिक धन्धों के लिए व्यवस्था

लघु पैमाने के व्यापार और कुटीर उद्योग स्व–रोजगार सृजित करने और आय बढ़ाने के लिए आसानी से नियोजित किए जा सकते हैं। छोटे व्यवसाय जैसे कि सांयकालीन चॉट बाजार, साप्ताहिक बाजार, फल और सब्जी की दुकानें इत्यादि की स्थानीय लोगों के लिए योजना बनाई जा सकती है। व्यापार के अलावा, कुटीर उद्योग जैसे कि मूर्तियॉ बनाना, कढ़ाई के काम, प्रतिमा या बुत बनाना, पत्थर का काम, लकड़ी का काम, लोहा और मरम्मत कार्य इत्यादि की, यदि योजना बनाई जाए तो मलिन बस्ती क्षेत्रों के लिये वो रोजगार और आय सृजन में अर्थपूर्ण हो सकते हैं।

3. अन्य कल्याण कार्य

क्योंकि मलिन बस्ती में रहने वाले अधिकांश लोग परिसम्पत्तियों, मनबहलाव और मनोरंजन के साधनों से वंचित है, सामाजिक समूहन के लिए स्थान और मनोरंजन के साधन प्रदान करने के लिए सामुदायिक केन्द्रों की योजना बनाई जानी चाहिए।

4. पर्यावरणीय गुणवत्ता नियन्त्रण

मलिन बस्ती क्षेत्र अस्वच्छता की अवस्थाएं प्रतिबिम्बित करते हैं। मलिन बस्तियाँ कचरा फेंकने के स्थलों, कूड़ा–करकट के स्थानों के समीप और नालियों के साथ में बन जाते हैं। बागान छाया बढ़ाने में सहायता कर सकते हैं; प्रदूषण स्तर में गिरावट और रद्दी फेंकने के स्थलों, सड़क और नालियों की बगल में हरित वातावरण उत्पन्न कर सकते है। अधिकांश मलिन बस्तियों में जगह की समस्या होती है, ऐसे में बौने और फूल वाले वृक्ष के बागान सर्वाधिक उपयुक्त हैं।

नालियों और कूड़ा फेंकने के स्थलों को ढ़कने के लिए भी नियोजित प्रयत्नों की आवश्यकता है। मलिन बस्ती सुधार के नियोजित प्रयत्नों ने धारावी–मुम्बई की मलिन बस्ती में जीवन की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं।

पाठगत प्रश्न 32.3

1. मलिन बस्ती की तीन विशेषताएं लिखिए।

   क. _____

   ख. _____

ग. _____

2. उन तीन कारकों को सूचीबद्ध करें जिन्होंने भारतीय शहरों की मलिन बस्ती जनसंख्या की तीव्र वृद्धि में योगदान दिया है।

क. _____

ख. _____

ग. _____

3. मलिन बस्ती क्षेत्र के सुधार के लिए नियोजन की तीन प्राथमिकताएं बताइए।

क. _____

ख. _____

ग. _____

32.4 वृत्त अध्ययन–III

जनजातीय ग्राम का अध्ययनः सम्बलपानी (जिला बनासकांठा–गुजरात)

जनजातीय क्षेत्र विकासः सम्बलपानी जनजातीय ग्राम का वृत्त अध्ययन (जिला बनासकांठा, गुजरात)

परिचय

अध्ययन क्षेत्र, सम्बलपानी मुख्यतया जनजातीय गांव है और लगभग 24°20′ उत्तरी अक्षांश और 72°44′ पूर्वी देशांतर पर गुजरात राज्य के बनासकांठा जिला की दान्ता तहसील में स्थित है। पालनपुर–अम्बाणी सड़क (गुजरात) गांव के पास से गुजरती है और राजस्थान में मांऊन्ट आबू को जोड़ती है। यह गांव अम्बाजी नगर के पश्चिम में, लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

यह क्षेत्र राजस्थान राज्य में जिला सिरोही से लगी अरावली पहाड़ियों के दक्षिण–पूर्वी विस्तार का हिस्सा है। गांव सम्बलपानी अम्बाजी माता पहाड़ी प्रांगण का हिस्सा है। यह प्रांगण तीव्र पहाड़ी की विशेषताएं, पर्वत श्रेणियाँ और छोटी पहाड़ियों को प्रतिरूपित करता है। अध्ययन क्षेत्र का सामान्य उच्चावच समुद्र तल से लगभग 650 मीटर है। सरस्वती नदी जो साबरमती नदी की सहायक नदी है, इस क्षेत्र में से बहती है। इस पहाड़ी क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 830 मि.मी. होती है, जो अधिकतर दक्षिण–पश्चिम मानसून से प्राप्त होती है। वनस्पति सामान्य रूप से शुष्क पर्णपाती प्रकार की है। टीक, महुआ, बांस, गूलर, हलद, बीजा, कान्धी और सान्दी (स्थानीय नाम) जैसे वृक्ष यहां होते हैं। किसी–किसी स्थान पर, वनस्पति आवरण मुख्यतः झाडियों और खुले घास स्थलों का है।

सम्बलपानी का क्षेत्र 1542.48 हेक्टेयर और कुल जनसंख्या 642 व्यक्ति है। गांव में 106 परिवार है (सारिणी–32.5)। कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का अनुपात 74.06 प्रतिशत है। भारवद जनजातीय समुदाय है, जबकि रबारी गैर–जनजातीय समुदाय है (सारिणी–32.6)। लिंग अनुपात (प्रति 1000 पुरुष जनसंख्या पर महिलाओं का अनुपात) 871 है। महिलाओं में साक्षरता का अनुपात 14.5 प्रतिशत है जबकि पुरुषों में यह 26.4 प्रतिशत है।

सारिणी क्र. 32.5: सम्बलपानी जनजातीय गाँव में परिवारों का प्रतिरूप 2006

सम्बलपानी परिवार

परिवारों की कुल संख्या	कुल जनसंख्या	नमूना परिवारों की संख्या	परिवार के सदस्य
106	642	30	210

सारिणी क्र. 32.6: जनसंख्या की विशेषताएँ

क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग कि.मी.	लिंग अनुपात	साक्षरता का प्रतिशत	
					पु.	म
1542.48	642	74.6	46	871	26.4	14.5

रबारी लोग अर्द्ध–यायावर पशु पालक लोग हैं। यह कौतूहल का विषय है कि वो छोटी शंक्वाकार झोंपड़ी जिसे 'खुबा' कहा जाता है, में रहते हैं। रबारी लोग चरावाही या अर्द्ध–चरावाही लोगों का समूह बन गए हैं और इसने स्थानीय जाति प्रणाली के अन्य अवयवों के साथ स्थायी आर्थिक सम्बन्ध बना लिया है।

भूमि उपयोग

कुल भौगोलिक क्षेत्र (1542.48 हैक्टेयर) का करीब 7.5 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है और 92.1 प्रतिशत कृषि योग्य नहीं है। भूमि के अन्य उपयोग में 0.4 प्रतिशत भूमि है। (सारणी–32.7)। गांव में सीमित कृषि, विस्तृत वन्य भूमि और बड़ा चारागाह है। भूमि आधारित गतिविधियों में पशुचारण और जीवन निर्वाह खेती शामिल है। अधिकांश घर छप्पर के, कच्चे, विस्तृत जगह अन्तराल के साथ, लम्बे और आंशिक बाड़े का अहाता वाले होते हैं, जो पशुओं, पशुओं के चारे जैसे भूसा, घास और खेती के उपकरण रखने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। गांव में चराई मैदान जनजातीय समुदाय द्वारा समान रूप से प्रयोग किए जाते है। आमतौर पर सूखे के काल में ऋतु प्रवास किया जाता है। गर्मी के मौसम में चरवाहे अपने पशुओं के साथ अरावली की उच्च भूमि पर चले जाते हैं और सर्दी के मौसम में कच्छ, काठियावाड़ क्षेत्र की ओर चले जाते हैं।

टिप्पणी

सारणी क्र. 32.7: भूमि प्रयोग का प्रारूप (हैक्टेयर में)

कुल भौगोलिक क्षेत्र (हैक्टेयर में)	कृषि योग्य भूमि	अकृषीय भूमि भूमि	वन आवरण	अन्य
1542-48 (100%)	116.20 (7.5%)	1420.26 (92.1%)	0.0 (0.0)	6.02 (0.4%)

आर्थिक गतिविधियाँ और आय के स्रोत

कुल कार्यशील जनसंख्या का करीब 53 प्रतिशत सीधे पशुचारण और सम्बंधित गतिविधियों में लगे हैं, लगभग 41 प्रतिशत कृषि–चरावाही गतिविधियों में और बाकी करीब 6 प्रतिशत कुटीर उद्योगों, व्यापार, परिवहन और सेवा के क्षेत्र में लगे हैं (सारिणी–32.8)।

सारणी क्र. 32.8 आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता

कृषि			श्रमिक			अन्य			कुल		
कुल	पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल	पु.	म.
14	3	11	20	12	8	8	5	3	42	20	22

औसतनः एक परिवार के पास लगभग 60 पालतु पशु होते हैं। गाय, भैंस, बकरी, भेंड़, खच्चर और ऊंट इत्यादि आमतौर पर इस क्षेत्र में पाले जाते हैं। पशु पालने के अलावा, परिवार वन उत्पादों जैसे शहद, घास, गुग्गल, धॉलमुसली और बोर एकत्र करने का काम भी करते हैं। कृषि तुलनात्मक रूप से समतल सपाट भूमि और गहन मृदा आवरण के साथ कुछ ही भागों पर की जाती है। कृषि के लिए अधिकतर बरसात के पानी का उपयोग होता है। यहां बाजरा तिलहन और दालों की फसलें उगाई जाती हैं।

सारणी क्र. 32.9 विभिन्न स्रोतों से आय

विभिन्न स्त्रोतों से प्रति परिवार औसत आय (रु. में)

कृषि	श्रम उत्पाद	वन उत्पाद	पशु उद्योग	कपास	कुल
2330 (24.89%)	519 (5.54%)	3149 (33.64%)	3356 (35.85%)	7 (0.08%)	9361 (100.00%)

(कोष्ठ में संख्या प्रतिशत इंगित करती है)

आय के स्रोत पशु और पशु उत्पाद जैसे दूध, घी इत्यादि की बिक्री, और वन उत्पादों, कृषि और सम्बंधित गतिविधियों, कुटीर उद्योगों और विभिन्न स्थानीय सेवाओं की बिक्री है। सब स्रोतों से परिवार की औसत वार्षिक आय 9361 रुपये होती है। पशु और वन उत्पादों से आय सृजन लगभग 69 प्रतिशत का होता है, कृषि से लगभग 25 प्रतिशत,

टिप्पणी

शारीरिक श्रम से करीब 6 (5.54) प्रतिशत होता है और बाकी शिल्प तथा अन्य कार्यो के जरिये हैं (सारिणी 32.9)।

पारिवारिक परिसम्पत्तियां

जनजातीय समुदाय के पास बहुत सीमित पारिवारिक परिसम्पत्तियां है। घर, बर्तन, फर्नीचर, अनाज भंडारण ड्रम, टोकरियां, संगीत वाद्य एवं कृषि उपकरण परिवार की परिसम्पत्तियां हैं। परिवार की परिसम्पत्ति का पैसे में मूल्य 6001 रुपये से 9001 रुपये के बीच में आता है। औसतन, घर की कीमत 6800/- रुपये, खेती के औजारों की कीमत 384/- रुपये, बर्तनों की 279/- रुपये, फर्नीचर की 210/- रुपये, संगीत वाद्यों की 69- रुपये, अनाज के ड्रम की 68 रुपये, टोकरियों की 38/- रुपये और अन्य की 81/- रुपये दर्ज की गई थी। (सारिणी–32.10)।

सारणी क्र. 32.10 पारिवारिक परिसम्पत्ति का औसत मूल्य (रु. में)

घर	फर्नीचर	औजार	टोकरियाँ	अनाज ड्रम	कृषि उपकरण	संगीत	अन्य	कुल
6800	210	279	38	68	384	69	81	7929

आय, दूध, मांस और वस्तुओं के विनिमय का मुख्य स्रोत पशु होते हैं। जनजातीय समुदाय में परिवार की हैसियत इस बात से मालूम की जाती है कि परिवार के पास पशुओं की कितनी संख्या है। कृषि गांव में कुछ भागों में सीमित है। पारिवारिक आय को अनुपूरित करने के लिए चरवाही गतिविधियों के साथ–साथ खेती भी की जाती है। परिवार के एक या दो सदस्य मूंगफली और कपास के उत्पादन में काम करने के लिए समुद्रतटीय गुजरात की तरफ भी जाते हैं। विषम परिस्थितियों में रहना और कठोर जीवन व्यतीत करना जनजातीय लोगों के लिए इस क्षेत्र में आम बात है। निर्धनता और बार–बार सूखा पड़ने से बाध्य होकर, जनजातीय लोगों को अक्सर अपने जीवन निर्वाह के लिए पशुओं और फसल उत्पादों की कुर्की करनी पड़ती है।

अतर्क्रियाएं

अध्ययन क्षेत्र में जनजातीय जनसंख्या थोड़ी और मध्यम दूरी की अतंर्क्रियाएं बनाए रखती है। अम्बाजी सबसे समीप का बाजार क्षेत्र है जहां अधिकांश पशु, कृषि और वन उत्पादों की बिक्री होती है (सारिणी–32.10-32.12)। कपड़ा, बर्तन, मसाले, अनाज इत्यादि की पारिवारिक जरूरतें भी मौसम अनुसार अम्बाजी बाजार से खरीदी जाती है। कार्यस्थल से सम्बंधित अतंर्क्रियाओं का जहां तक सवाल है, श्रमिकों का लगभग 87 प्रतिशत गांव (सम्बलपानी) में ही कार्य करता है। श्रमिकों का लगभग 7 प्रतिशत नौकरी की खोज में अन्य स्थानों पर जाता है। यह लगभग 7 से 8 महीनों के लिए आस–पास के गांवों और बाजारों में 10 किलोमीटर की दूरी तक का आना जाना करते है। बाकी

टिप्पणी

करीब 6 प्रतिशत श्रमिक करीब 4 से 6 महीनों तक आस–पास के जिलों में मूंगफली और कपास के खेतों में काम करने के लिए ज्यादा लम्बी दूरी (50 कि.मी. से ज्यादा) तक जाते हैं। चारे की घास और पेड़ के पत्तों का अभाव भी चरवाहकों को अपने पशुओं के झुंड समेत उत्तर–पूर्व की ओर अरावली की पहाड़ियों के साथ–साथ में और गुजरात के मैदानों में नदी की घाटियों (बनास, सरस्वती और साबरमती) की बगल में छोटी अवधि के लिए जाने को बाध्य करता है।

सारणी क्र. 32.11 कार्य स्थल

सम्बलपानि	कुल श्रमिक	उसी गांव में	अन्य गांव दूरी के साथ कम अवधि	दूरी के साथ अधिक अवधि
	123	107	7 (30.0 किमी.)	9 (8.0 किमी.)
	(100.00%)	(86.95%)	4 महीने (5.71%)	8 महीने (7.34%)

सारणी क्र. 32.12 वस्तुओं की खरीद और बिक्री के लिए आर्थिक अतंर्क्रियाएं

अम्बाजी	सम्बलपानी	कुल
20	4	24

सारणी क्र. 32.13 वन उत्पाद और उनकी बिक्री का स्थल

उत्पाद	ईंधन	गुग्गल	घास	शहद	धोली मुसली	बोर
स्थान	अम्बाजी	सम्बल–पानी	सम्बल–पानी	अम्बाजी	अम्बाजी	अम्बाजी

भारत की कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का लगभग 8 प्रतिशत हिस्सा है। वे लोग आमतौर पर ऊँचे स्थानों के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में पाए जाते हैं। संसाधनों जैसे वन और चारागाह इत्यादि का स्वामित्व समुदाय का संयुक्त है। जनजाति के लोग, पौधों और साथ ही जंगली पशुओं के रक्षण और प्रौन्नति के लिए जाने जाते हैं। वस्तुओं और सेवाओं का आदान प्रदान करने के लिए जनजाति के लोग सामान्यतया वस्तु विनिमय प्रणाली का अनुपालन करते हैं।

जनजाति क्षेत्र विकास के लिए नियोजन का परामर्श

जनजाति क्षेत्र विकास, पारिस्थितिक वृद्धि और आर्थिक विकास संतुलित बनाए रखते हुए जनजाति सांस्कृतिक विरासत को प्रौन्नत करने की चेष्टा में रहता है। क्योंकि जनजाति समुदाय मुख्यतः जीवन निर्वाह के साधनों के रूप में चरवाही, जीवन निर्वहन खेती, मछली पालन, शिकार इत्यादि पर आधारित है। भूमि, पौधे और वन्य पशुओं का विकास

जनजाति क्षेत्र विकास के मूलभूत अवयव हैं। अध्ययन क्षेत्र से सम्बंधित नियोजन प्रस्तावों के विभिन्न पहलुओं पर संक्षिप्त चर्चा नीचे दी गई है:

पारिस्थितिक नियोजन

बंजर या ऊसर भूमि, पहाड़ी ढ़लान स्थल, नदी घाटी के क्षेत्र और सड़क के किनारे सूखा प्रतिरोधी पौधों जैसे नीम, शीशम, महुआ, बांस इत्यादि के रोपण की जरूरत है। इन पौधों की उत्तर जीविता और वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए, तालाबों, कुओं, नलकूपों की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। यह स्थानीय लोगों को शायद रोजगार उपलब्ध कराएगा और स्थायी भौतिक विशेषताएँ उत्पन्न करेगा। जल स्रोतों में वृद्धि से भूमि को हरित चारागाहों में रूपान्तरित करने और खेतों व वनों की उत्पादकता में वृद्धि करने में मदद मिलेगी। हरित चारागाह, वनस्थली और जल संकटापन्न (जोखिम में पड़े) पारिस्थितिक व्यवस्था का पुनरूत्थान करेंगी जो वन्य जीवन के संवर्धन के लिए अत्यन्त अनिवार्य है।

सामाजिक सुविधाओं की योजना बनाना

सामाजिक विकास सुनिश्चित करने के लिए, सामाजिक सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए। सम्बलपानी गांव में एक प्राथमिक स्कूल है और स्थानीय लोगों के लिए तीन दुकानें हैं। गांव के लिए जल आपूर्ति का स्रोत दो कुँए, एक तालाब और समीप एक नदी है। ग्रामीण सड़क (अर्द्ध–पक्की) गांव को अम्बाजी बाजार केन्द्र से जोड़ती है। ऐसे में, जिन सामाजिक सुविधाओं की योजना बनानी चाहिए वो हैं—एक उच्चतर बेसिक स्कूल, एक महिला डाक्टर, एक पशु रोग डाक्टर, दवाखाना, पी.सी.ओ. और एक डाकघर। सड़क को अम्बाजी नगर तक पक्का करना है जिससे सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था कायम हो सके।

आर्थिक विकास का नियोजन

गांव की विद्यमान स्थानीय अर्थव्यवस्था जो अपने जीवन निर्वाह के स्तर पर है, उसे प्रौद्योगिकीय सहायता चाहिये जिससे अधिक उत्पादन हो सके। डेयरी पशु जो बहुत कम दूध देते हैं, उन्हें गाय, भेड़ और भैंसों की उच्च उत्पादन किस्मों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। स्थानीय किस्मों की गुणवत्ता भी संकरण के जरिये सुधारी जा सकती है। इसी तरह से, माँस देने वाले पशुओं और भार ढ़ोने वाले पशुओं का भी बेहतर आर्थिक प्रतिफल उत्पन्न करने के लिए, गुणात्मक रूप से सुधारा जा सकता है। व्यवासायिक फललें जैसे कि कपास, मूँगफली और चारा देने वाली फसलों को ज्यादा कृषि उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। कृषि–आधारित उद्योगों, कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्पों को, अतिरेक कृषि उत्पाद की प्रौससिंग करने के लिए, स्थापित करना चाहिए।

जनजातीय क्षेत्र विकास में सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य

यदि मौका दिया जाए, तो जनजातीय समुदाय सामाजिक–आर्थिक विकास में श्रेष्ठ

होगा और अपने गैर–जनजातीय प्रतिपक्षों के साथ मिलान कर पाएगा। इस तथ्य के बावजूद कि जनजातीय लोग उत्पादन के पारम्परिक ढंग का अनुपालन करते हैं और आर्थिक रूप से गरीब हैं, उनके पास जड़ी बूटियों, पौधों, पत्थरों का विशाल ज्ञान है जो वे अपना स्वास्थ्य बनाए रखने में उपयोग करते हैं। जनजातीय नृत्य, संगीत और विरासत कलाए उच्चतर गुणवत्ता की हैं। अतः, स्थानीय दवाओं और संस्कृति के बारे में जनजातीय परिपाटियों और ज्ञान को आगे और प्रौन्नत किया जा सकता है और उसे रोजगार व आय सृजन के लिये उपयोग करने की जरूरत है। सुरम्य अभिव्यंजना और पहाड़ी परिवेश, जोखिम पर्यटन जैसे पर्वतारोहण, चट्टानों के ऊपर चढ़ना और रिवर राफ्टिंग इत्यादि के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

मूलभूत सामाजिक सुविधाएं, सुनिश्चित सिंचाई और जल आपूर्ति व्यवस्था, ऊर्जा उपलब्धता इत्यादि बागान, वनारोपण, व्यावसायिक चरावाही और खेती की गति को अत्यधिक तेज कर देंगे। यह फिर जनजातीय परिवारों के रोजगार और आय स्तर में वृद्धि करेंगे। जनजातीय संस्कृति, विरासत और ज्ञान को सतत आधार पर प्रौन्नत करने की आवश्यकता है। यह गर्व की संवेदना को प्रौन्नत करेगी और लोगों की सहभागिता तथा अनुकूल नीतियों के जरिये स्थानीय क्षेत्र विकास की गति को तेज करेगी।

पाठगत प्रश्न 32.4

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए उपयुक्त शब्द लिखिए:

   कथन:

   (क) कुल भारतीय जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का अनुपात————————है।

   (ख) छोटी शंक्वाकार झोंपड़ियां जिनमें सम्बलपानी की जनजातीय जनसंख्या रहती है को _____ कहते हैं।

   (ग) जनजातीय समुदायों में आय के प्रमुख स्रोत_____हैं।

   (घ) चारागाहों की खोज में पशुओं के झुंड के साथ–साथ आनेजाने की जनजातीय परिपाटी_____कहलाती है।

2. जनजातीय समुदाय की तीन विशेषताएं बताइए।

   (क)_____(ख)_____(ग)_____

3. जनजातीय क्षेत्र विकास नियोजन के लिए तीन प्राथमिकताएं बताइए।

   (क)_____(ख)_____(ग)_____

टिप्पणी

32.5 वृत्त अध्ययन–IV

पहाड़ी गांव रंगदूम का अध्ययन

(जिला कारगिल–जम्मू और कश्मीर)

रंगदूम जम्मू और कश्मीर राज्य में वृहत हिमालयी पर्वतमालाओं के पार स्थित एक पहाड़ी गांव है। भौगोलिक रूप से, यह लद्दाख क्षेत्र के कारगिल जिले में 33°42' उत्तर और 76°12' पूर्व देशान्तर पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 3820 मीटर है। कारगिल–पदूम राष्ट्रीय राजमार्ग रंगदूम से गुजरता है। राष्ट्रीय राजमार्ग के मध्य भाग में स्थित होने की वजह से, रंगदूम कारगिल से दक्षिण की ओर लगभग 118 किलोमीटर की दूरी पर है। कारगिल से लेह के बीच दूरी लगभग 176 किलोमीटर है। यह पिछड़ा हुआ मठवासीय गांव है और तुलनात्मक रूप से ज्यादा एकांकी उच्चतर सुरु घाटी में घाटी की सतह पर स्थित है। गांव में स्कूल, डाकघर और कैम्पिंग मैदान है। कुछ दुकानें हैं जो परिवारों के लिए सामान्य परचून का सामान रखती हैं। गांव की जनसंख्या 300 व्यक्तियों की है और कुल 72 परिवार है। पहाड़ी क्षेत्रों में सामान्यतया छोटे आकार के गांव होते हैं और वो छितरे हुए होते हैं। गांव में, उपलब्ध भूमि संसाधनों के आगे और विभाजन से बचने के लिए बहुपति परिवार प्रथा का चलन है।

रंगदूम सुरु नदी, जो शक्तिशाली सिन्धु नदी की बाई ओर की सहायक नदी है, के दाएं किनारे पर स्थित है। सुरु नदी पांजीला (दर्रा) के जल विभाजन से मूलतः प्रारम्भ होती है। यह जल विभाजक जास्कर नदी के जलग्रहण क्षेत्र को सुरु से पृथक करता है। यह सिन्धु को कारगिल नगर, जो उसके बाएं किनारे पर स्थित है, के उत्तर में मिलती है। सुरू एक सदानीरा नदी है। गर्मी के मौसम में, जब बर्फ के क्षेत्र और हिमनदियाँ पिघलने लगते हैं, तो नदी में पानी का बहाव साधारण रूप से अधिक बना रहता है। जबकि सर्दी के मौसम में नदी की धारा कम हो जाती है क्योंकि तापमान हिमांक बिन्दु से नीचा होने पर बर्फ नहीं पिघलती है।

रंगदूम चौड़ी घाटी में स्थित हैं जहां कई धाराएं सुरु नदी में आकर मिलती है, और इस घाटी में दो उपग्राम या पुरवा है, जुलडो और ट्शी टुंगडा जो एक दूसरे से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दोनों के बीच में पहाड़ी पर रंगदूम गोम्पा स्थित है। भूमि गोलाश्मों और कंकड़ों से भरी हुई है और ज्यादा उपजाऊ नहीं है।

रंगदूम गोम्पा

गोम्पा शब्द बौद्ध मठावास का संकेत करता है। यह धार्मिक संस्था है और लद्दाखी बौद्धों के जीवन के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। रंगदूम में सारी भूमि पर गोम्पा का स्वामित्व है और ग्रामवासी इस पर काश्तकार के रूप में कार्य करते हैं। लामा, बौद्ध सन्यासी कोई शरीरिक कार्य नहीं करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यदि वो शारीरिक श्रम करता है तो यह बहुत से जीवों की मृत्यु को ओर अग्रसर करेगा। रंगदूम गोम्पा छोटी पहाड़ी पर केन्द्र में स्थित है और जुलडो और ट्शी टुंगडा उपग्रामों के

टिप्पणी

सामाजिक–आर्थिक जीवन को नियन्त्रित करता है। एक वयस्क लामा, जो मठ के वित्तीय मामलों की देख रेख करता है, चक्क–जोड के नाम से जाना जाता है। इसलिए, भूमि समुदाय की होती है और स्थानीय प्रशासन गोम्पा व्यवस्था द्वारा संचालित होता है। गांव में लोग वंशानुक्रम के आधार पर स्थायी काश्तकार के रूप में कार्य करते हैं और गोम्पा द्वारा निर्धारित नियमों का अनुपालन करते हैं। उत्पादन का एक भाग मठ को दिया जाता है। तथापि, उत्पादन में से हिस्से का अनुपात स्थानीय स्थितियों और जरूरतों के आधार पर समय–समय पर बदलता रहता है।

जलवायु

गांव की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की विषम है। इसकी जलवायु की विशेषताएं हल्की बरसात, वार्षिक और दैनिक तापमानों में उच्च परास, हल्का गर्मी का मौसम और अत्याधिक ठंडा सर्दी का मौसम हैं। औसत मासिक तापमान जनवरी में 12°C से जुलाई में -12°C तक परिवर्तित होता है। तापमान की अनुमानित वार्षिक परास लगभग 24°C है। गांव, वृष्टि–छाया–क्षेत्र में स्थित है और वार्षिक वर्षा 15 सें.मी. से भी कम प्राप्त करता है। दुर्भाग्यवश, वर्षण की बड़ी मात्रा सर्दी के महीनों में हिमपात के रूप में होती है। समीप में ही मौसम और जलवायु सम्बन्धी आंकड़े रिकार्ड करने के लिए गुलमातान्गो वेधशाला है।

वनस्पति

रंगदूम एक ओर, समुद्र तल से काफी ऊंचाई और नितान्त ऊबड़–खाबड़ धरातल होने के कारण और दूसरी ओर ठंडी मरुस्थलीय जलवायु की वजह से यहाँ प्रतिकूल वातावरण है। वनस्पति का सम्पूर्ण प्रारूप जलवायु द्वारा निर्देशित होता है। यह क्षेत्र प्रत्यावर्ती घाटियों और पर्वतों की व्यवस्था प्रस्तुत करता है। पर्वतमालाओं की बंजर चट्टानी सतह मृदा और वनस्पति के आवरण से वंचित है। अधिकांश पौधों को, बीजों के अंकुरण और पौधों की वृद्धि के लिए कम से कम 6^0C तापमान की जरूरत होती है। उच्च दैनिक ताप परिसर औसत तापमान के मानों को काफी भ्रामक बना देता है। पौधों के बढ़ने का मौसम वर्ष में 6 महीनों से कम तक सीमित होता है। लगभग सब के सब पौधे भूमि–स्पर्शी झाड़ियां और छोटे वृक्ष हैं। सब पत्तियां पोषक तत्वों से भरी होती है। वनस्पति घास, झाड़ियों और छोटे वृक्षों के प्रकार की है।

सर्द शुष्क अवस्थाओं की वजह से बहुत बड़े क्षेत्र पर बहुत कम वनस्पति का आवरण है। वनस्पति, चराई से बहुत जल्दी प्रभावित होती है और निर्बल किस्म की है। समुद्र तल से ऊंचाई के साथ–साथ वनस्पति की किस्म बदलती है। चरवाही घास और घास–पात (पोली गोनम टॉरचूसम इत्यादि) रंगदूम के पास सामान्य रुप से होती है। गर्मियों में पशु चारण सर्वाधिक आम गतिविधि है। गांव, बहुत थोड़ी हरियाली के साथ, बहुत विरान दृश्य प्रस्तुत करता है। सीबकथोर्न जिसका स्थानीय नाम "ज़रमाँग" है, खाद्य, ईंधन और चारे के लिये इस्तेमाल किया जाता है। यह औषधि युक्त पौधा है और इसका रस शून्य से कम तापमान पर भी जमता नहीं है।

टिप्पणी

कृषि

गांव का कुल भौगोलिक क्षेत्र 289.76 हैक्टेयर है। कुल कृषि क्षेत्र 94.29 हैक्टेयर है। कृषि योग्य बंजर भूमि का क्षेत्र 49.37 हैक्टेयर है और बाकी 104.82 हैक्टेयर कृषि के लिए उपलब्ध नहीं है। ऐसे में, कुल भूमि क्षेत्र के 40 प्रतिशत से भी कम भाग पर कृषि होती है। लगभग 68.2 प्रतिशत भूमि जोतें एक हैक्टेयर से भी कम की है। 27.3 प्रतिशत 1 से 2.5 हैक्टेयर की है और बाकी 4.5 प्रतिशत 5 से 10 हैक्टेयर की है। यह भी अवलोकन किया गया है कि कृषि के लिये पट्टे पर ली भूमि का 35.8 प्रतिशत एक हैक्टेयर से कम का है, 32.7 प्रतिशत 1 से 2.5 हैक्टेयर, और बाकी 31.4 प्रतिशत 5 से 10 हैक्टेयर का है। अतः रंगदूम गांव में 95.5 प्रतिशत से अधिक किसान 2.5 हैक्टेयर से कम भूमि पर खेती कर रहे थे। एक संसाधन के रूप में भूमि का वितरण बहुत असमान है।

इस गांव में कृषि जीवन निर्वाह प्रकार की है। इस प्रदेश में बोई जाने वाली महत्वपूर्ण फसलों में ग्रिम (आवरण रहित बाजरा), गेहूं और मटर है। गेहूं, मटर और ग्रिम को इकट्ठे भून कर और पीस कर साम्पा (एक प्रकार का सत्तु) बनाया जाता है। यह मुख्य खाद्य पदार्थ है। ग्रिम को छांग बनाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है, जो इस प्रदेश के बौद्ध लोगों में लोकप्रिय पेय है। छांग को ग्रिम का खमीर बना कर बनाया जाता है। मटर को दोनों सब्जी के रूप में और ज़म्पा बनाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। अन्य फसलों में चारे के लिए ओल (अल्फा अल्फा) और कुछ ट्रुम्बा (बक गेहूं) और मारास्ल (फलियां) शामिल है। आजकल पर्यटकों और समीप के बाजार क्षेत्र के लिए कुछ सब्जियों को भी उगाना शुरू किया गया है। तथापि, इनमें से अधिकांश फसलों को मुख्यतः स्व उपभोग के लिए उगाया जाता है। विभिन्न फसलों का तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि कुल रोपित क्षेत्र का लगभग 64.6 प्रतिशत पर ग्रिम उगाया जाता है। इसके बाद क्रमशः मटर (23.1 प्रतिशत), चारा (4.8 प्रतिशत), गरस/बाक्ला (4.1 प्रतिशत), गेहूँ (2.4 प्रतिशत) और अन्य फसलें (1 प्रतिशत)। अतः कृषि मौसमी गतिविधि है जो साल में लगभग 5 से 6 महीने तक चलती है। खेती पारम्परिक औजारों के साथ की जाती है। याक (बैल की जाति का पशु) या द्जो की पशु शक्ति को हल चलाने और भूसा को अलग करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। मानवीय भ्रम करने वाले बीजों की अधिकांश कार्यों के लिये उपयोग किया जाता है। आधुनिक मशीनरी, खाद और उच्च उत्पादन करने वाले बीजों की किस्मों का उपयोग बहुत सीमित है। सामूहिक प्रकार की खेती भी गांव में आम है। उसे फासपुन नाम से जाना जाता है। इसमें श्रम प्रधान गहन कार्य जैसे बुआई, कटाई आदि पूरा करने के लिये परिवारों के समूह इकट्ठे मिल जाते हैं।

खेती में खाद (गोबर आदि की) का महत्वपूर्ण योगदान है। इसमें पशु का गोबर और मल आता है। क्योंकि सर्दी के मौसम में अत्याधिक ठन्ड होती है, इसलिए प्रत्येक घर में शौचालय की व्यवस्था होती है। यह अक्सर पहली मंजिल पर लकड़ी के फर्श पर

टिप्पणी

सुराख करके बनाया जाता है। मल तलीय मंजिल पर इकट्ठी हो जाती है। इसे मिट्टी के साथ मिश्रित करके खेतों में खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

चरावाही गतिविधियां

पशुपालन अर्थव्यवस्था का अन्य महत्वपूर्ण घटक है। अधिकांश पालतू पशु, कृषि कार्यों के लिये जो जरूरत हैं उन्हें छोड़कर, गर्मी के महीनों में प्राकृतिक चारागाहों में ले जाए जाते हैं। अधिकांश चारागाह ऊंचाई के स्थलों पर स्थित है। भेड़, बकरी, टट्टू और याक ही अधिकांश पशु हैं जिन्हें इन चारागाहों पर पाला जाता है। भेड़ और बकरियों के बड़े झुँड इन क्षेत्रों में रखे जाते हैं। सामान्यतया, प्रत्येक गांव से एक परिवार पशुओं को गर्मी के चारागाहों में ले जाता हैं और वहीं झोंपड़ी में, जिसे ''दक्ष'' कहते हैं, रहता हैं। यह अस्थायी ढ़ांचा होता है। इस गतिविधि या पशुचारण को गांव के सभी परिवार वार्षिक आधार पर करते है। दूध और दूध उत्पाद दक्ष में बनाए जाते हैं। दूध तथा दूध उत्पादों के अलावा, मांस और ऊन, पशु चारण से प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण उत्पाद हैं।

पर्यटन

रंगदूम गर्मियों के पर्यटन के लिये महत्वपूर्ण केन्द्र है। पर्यटक और ट्रैकर गर्मी के मौसम में रंगदूम आते हैं। एक अनुमान के अनुसार, गर्मी के मौसम के दौरान लगभग 1000 दशर्नार्थी इस स्थान पर आते हैं। कुल पर्यटकों में से, लगभग 47.3 प्रतिशत ट्रेकर्स होते है, 38.2 प्रतिशत वैज्ञानिक और लगभग 14.5 प्रतिशत अन्य अवर्गीकृत दशर्नार्थी होते हैं। लगभग 78 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक होते हैं और बाकी 22 प्रतिशत देशी पर्यटक आते हैं। यहां दो महत्वपूर्ण त्यौहार होते हैं जो पर्यटकों को रंगदूम गोम्पा आने के लिये आर्कषित करते है। लद्दाख त्योहार प्रत्येक वर्ष 15 सितम्बर को मनाया जाता है और ''सिन्धु दर्शन'' जून में मनाया जाता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक इन दोनों त्योहारों में भाग लेने में रुचि लेते हैं।

विकास के लिये आशाएं

पूरा विश्लेषण दर्शाता है कि रंगदूम में ग्रामवासी निर्वाह खेती और यायावर पशुचारण मौसमी आधार पर करते हैं। कृषि और चरवाही दोनों में सामूहिक क्रियाओं की भूमिका गांव की अर्थव्यवस्था में अभी भी प्रमुख है। इस दूरस्थ पहाड़ी गांव में लोग वस्तुओं और सेवाओं के आदान–प्रदान के लिये वस्तु विनिमय प्रणाली पर निर्भर हैं। तथापि, फासपुन (सामुहिक अनुक्रियाएं) कम हो रहा है और यह किराये के श्रम से प्रतिस्थापित हो रहा है। परिवर्तन धीमा और गत्यात्मक है। पहाड़ी क्षेत्रों में, मानवीय गतिविधियों का मुख्य निर्धारक प्रकृति होती है। पर्यटन पहाड़ी अर्थव्यवस्था का एक नया आयाम है। समाज मुख्यतः एकजुट और शान्त है। पहाड़ी क्षेत्रों में विकास की गुन्जाइश अनिवार्य आधारिक ढांचे जैसे सड़कें, सामाजिक सुविधाएं, बाजार इत्यादि की प्रदत्त व्यवस्था पर निर्भर करता है। कृषि में यांत्रिकीकरण और व्यापारिक पशुचारण अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जो पहाड़ी क्षेत्रों जैसे कि रंगदूम में विकास की गति को तेज कर सकते हैं।

टिप्पणी

- **कृषि योग्य बंजर भूमि**—वो भूमि जो खेती के लिये उपयुक्त है पर इस समय खेती के लिये उपयोग नहीं की जा रही है।
- **पट्टे पर ली गई भूमि**—कुछ समय के लिये पट्टे पर खेती लेना।
- **निर्वाह प्रकार की कृषि**—यह इस प्रकार की कृषि है जिसमें सीमित उत्पादन होता है जो कि अधिकांश रूप से स्थानीय तौर पर उपभोग कर लिया जाता है।

पहाड़ी क्षेत्र के विकास के लिए नियोजन का सुझाव

पहाड़ी क्षेत्र सामान्यतयां कठोर जलवायु सम्बन्धी परिस्थितियों और अन्य प्राकृतिक अवरोधों की वजह से पिछड़ा हुआ रहता है। तथापि, स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित नियोजन के प्रयत्न पहाड़ी पर्यावरण में लोगों की सहभागिता और स्थानीय क्षेत्र विकास को तेज कर सकते हैं।

नियोजन की निम्नलिखित प्राथमिकताएं रंगदूम क्षेत्र के विकास के लिये सुझाई गई हैं।

1. मूलभूत सुख-साधनों और सुविधाओं के लिये व्यवस्था

मूलभूत अधारिक ढ़ांचे जैसे कि पक्की सड़कें, परिवहन के माध्यम, राजमार्ग रेस्तरां और गेस्ट हाऊस, स्वास्थ्य केन्द्र, मौसम स्टेशन, स्कूल, पशु रोग केन्द्र, बाजार बैंक और डाक सेवाओं का स्तर ऊंचा करने और कारगिल–पदूम राजमार्ग पर स्थापित करने की जरूरत है। यह मानव अंतर्क्रिया और स्थानीय क्षेत्रीय विकास के लिये आधार के रूप में कार्य करेगी।

2. पारिस्थितिक तन्त्र और आर्थिक आधार के सुधार की व्यवस्था

पारिस्थितिक तन्त्र या व्यवस्था वनस्पति से व्यापक रूप से वंचित है। बड़े पैमाने पर चरवाही गतिविधियों के फलस्वरूप पारिस्थितिक व्यवस्था का अधःपतन हो रहा है। पशु संख्या का दबाव पर्वतमालाओं पर पड़ता है और यह लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में यह परामर्श दिया जाता है कि राष्ट्रीय राजमार्ग पर और सुरु घाटी क्षेत्र के साथ–साथ में ऊंचाई पर सर्दी प्रतिरोधी वृक्षों का रोपण किया जाना चाहिये। जेरमांग, स्थानीय बेर वृक्ष जिसका व्यापारिक मूल्य सुविदित है क्योंकि इसका जूस हिमांक बिन्दु से नीचे तापमान पर भी जमता नहीं है को उगाना संभव है। इसी तरह से, चारागाहों का प्रबन्ध सिंचाई के स्रोतों द्वारा होना चाहिये। सुरु घाटी के आसपास रासानियक उर्वरकों का उपयोग और सुनिश्चित सिंचाई कृषि विकास के विद्यमान स्तरों को सुधार सकते हैं।

3. पर्यटक प्रौन्नति

असमान धरातल और हिमनदाच्छादित भू–दृश्य खोज यात्राओं, जोखिम पर्यटन, चट्टानों पर चढ़ना, स्केटिंग, ट्रेकिंग इत्यादि के लिये आदर्श प्राकृतिक परिस्थितियाँ पेश करता है। नौनकुन चोटियों और पान्जी ला दरों के बीच ऐसे पर्यटन को बढ़ाने के लिये

टिप्पणी

रंगदूम की केन्द्रिय स्थिति है। तथापि, पर्यटक सुख–साधनों जैसे कि होटल, केम्पस्थल, गाइड, सुरक्षा कर्मियों आदि की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक और सांस्कृतिक पर्यटन के भी विकसित होने की गुंजाइश है। वैज्ञानिक और सांस्कृतिक पर्यटक पहले से ही बौद्ध संस्कृति, गोम्पा संगठन, चट्टानों और पौधों की खोजबीन के प्रति आकर्षित हैं।

4. व्यापारिक चारावाही और कुटीर उद्योगों का विकास

चारावाही इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण आर्थिक अनुक्रिया हैं। तथापि, पशु उत्पादों और पशुओं की गुणवत्ता काफी खराब है। ऐसे में, पशुओं–भेड़े, बकरियां, याक, टट्टू इत्यादि की गुणवत्ता का स्तर ऊंचा करने की अत्यधिक आवश्यकता हैं। स्थानीय किस्मों का करकुईल भेड़, बकरी के साथ संकरण दूध, ऊन इत्यादि की गुणवत्ता और साथ ही मात्रा में सुधार कर सकता है। कुटीर उद्योग जो सर्दियों में घर के अन्दर करने के लिये आधार है, उन्हें आधुनिक औजारों और बाजारों से सम्पन्न करना चाहिये। यह स्थानीय लोगों का आर्थिक दर्जा सुधारेगा।

5. व्यापारिक सम्बन्ध और प्रादेशिक अतंर्क्रियाएं

स्थानीय अतिरेक उत्पादों के व्यापारिक सम्बन्ध प्रादेशिक और राष्ट्रीय बाज़ारों से जोड़ने की जरूरत है। स्थानीय लोग अपने उत्पादों को, तंगी में बाध्य होकर बेचने की वजह से न्यूनतम प्रतिफल पाते हैं। सेवा केन्द्रों को खोलकर, रियायत देकर और सहयोग संस्थाएँ स्थापित करने में सरकारी सहायता, स्थानीय और प्रादेशिक उत्पादों की बिक्री करने में सर्वाधिक उपयोगी हो सकती है। यह स्थानीय आर्थिक अवस्थाओं में भी सुधार करेंगी। पारम्परिक मार्ग और व्यापारिक सम्बन्धों को आगे और सुदृढ़ करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 32.5

1. उपयुक्त शब्दों के साथ निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए:

कथन

(क) तीव्र ढलुआं ढलानों और समुद्रतल से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्र को _____ कहते हैं।

(ख) लद्दाख प्रदेश में बौद्ध मठ को _____ कहते हैं।

(ग) मठ के वित्तीय मामलों की देखरेख करने वाला वयस्क लामा _____ कहलाता है।

(घ) पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण अधिवासों का वितरण _____ बना हुआ है।

2. सूची I का सूची II से मिलान कीजिए:

सूची-I शब्द	**सूची–II परिभाषाएं**
(क) फॉसपुन	(i) लद्दाख प्रदेश में लोकप्रिय पेय
(ख) छाँग	(ii) झोंपड़ी जो गर्मी के मौसम में अस्थायी मानवीय आवास के रूप में उपयोग होती है
(ग) ज़ो	(iii) कृषि सम्बन्धी संक्रियाओं का सामूहिक रूप
(घ) दक्ष	(iv) हल चलाने तथा गहाई के लिये उपयोग किए जाने वाला पशु

3. पहाड़ी क्षेत्र विकास के नियोजन के लिये तीन प्राथमिकताऐं बताइए।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में, आपने पढ़ा कि लोगों और स्थानों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय कार्य आवश्यक है। इस तरह से प्राप्त जानकारी, सामान्य धारणाएं और अर्थपूर्ण स्पष्टीकरण विकसित करने में उपयोगी होती है। तथापि, क्षेत्रीय कार्य क्षेत्रीय विकास से सम्बंधित भिन्न विषय प्रसंगों और मुद्दों पर नियोजन के प्रस्ताव तैयार करने के लिए अपर्याप्त रहता है। विषय प्रसंग या समस्या विशिष्ट स्थितियां, विशेष मुद्दों से सम्बन्धित गहन जानकारियों की मांग करती है। और यह वृत्त अध्ययन के द्वारा हो पाता है। क्योंकि मुद्दें एक स्थिति से दूसरी स्थिति के लिए भिन्न होते हैं, तो वृत्त अध्ययन का प्रारूप मुद्दों के साथ बदलता है जिससे कि अनुसंधान के सूक्ष्म विवरण इकट्ठे किये जा सके। इस पाठ में चार वृत्त अध्ययन यथा, बाजार, मलिन बस्ती जनजातीय और पहाड़ी क्षेत्र, प्रस्तुत किए गए हैं। बाजार क्षेत्र पर वृत्त अध्ययन, भिन्न बाजारों में बिक्री की मदों के लिये विशिष्टीकरण और ढांचे से सम्बधित उल्लेखनीय भिन्नतायें दर्शाती हैं।

जबकि सप्ताहिक बाजार में अस्थायी ढ़ांचा और चलती–फिरती खरीद व्यवस्था होती है। थोक बाज़ारों का स्थायी ढ़ांचा और नियमित खरीद व्यवस्था होती है। मलिन बस्ती पर वृत्त अध्ययन मात्र न्यूनतम सुविधाओं से वंचित स्थल, बड़े पैमाने का विस्थापन और ग्रामीण निर्धनता का शहरी निर्धनता में अंतप्रर्वाह दर्शाता है। जनजातीय क्षेत्र भी अर्द्धविकसित होते है। यह पर्वतीय क्षेत्रों के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र होते हैं। जनजातीय लोग सीमित खेती और चरावाही करते हैं। पौधों और पशुओं का संरक्षण और प्रौन्नति जनजातीय संस्कृति और विरासत में आम बात है। भारत की कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का भाग करीब 8 प्रतिशत है। पहाड़ी क्षेत्रों में ऊबड़ खाबड़ भू–आकृति, अधिकांशतः वनस्पति से वंचित, पहुंच के रास्ते खराब और जलवायु

टिप्पणी

स्थितियों की विषमता उनकी विशेषतायें हैं। फलस्वरूप, पहाड़ी क्षेत्रों, में संयुक्त चरावाही मैदान, सीमित कृषि, सामूहिक अनुक्रियाओं का प्रचलन और वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय की वस्तु विनिमय प्रणाली चलती है। पिछड़ी हुई व्यवस्था में, भी समुदाय गठित, संगठित और सहयोगी बना हुआ है।

पाठांत प्रश्न

1. विशिष्ट क्षेत्रों और मुद्दों की उनके नियोजन की प्राथमिकताओं से सम्बंधित समस्याओं को बेहतर समझने के लिए किस प्रकार वृत्त अध्ययन आवश्यक है?
2. किस प्रकार दुकानों की प्रकृति और ढांचा एक प्रकार के बाजार से दूसरे में भिन्न है, समझाइए।
3. शहरों में मलिन बस्तियों की वृद्धि के लिए कौन से कारक उत्तरदायी हैं?
4. जनजातीय लोग कहां रहते हैं?
5. जनजातीय व्यवस्था में पौधों और वन्य पशुओं का क्या महत्व है?
6. सामूहिक कृषि क्रियाएं, पशुपालन और विनिमय की वस्तु विनिमय प्रणाली पहाड़ी लोगों के जीवन में क्यों महत्वपूर्ण है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

1. (क) भौगोलिक व्यवस्था (ख) सामाजिक–आर्थिक स्थितियां

   (ग) विकासात्मक स्तर

2. (क) क्षेत्रीय सर्वेक्षण पूछताछ के निर्धारित नियमों का पालन करता है और सामन्यत्या व्यवस्थित रहता है, जबकि वृत्त अध्ययन भिन्न मुद्दों के लिए पूछताछ का समस्या–विशिष्ट उपागम अपनाती है।

   (ख) क्षेत्रीय सर्वेक्षण क्षेत्र या स्थितियों की सामान्य पृष्ठभूमि के बारे में ज्ञान/जानकारी प्रदान करता है, जबकि वृत्त अध्ययन विशेष मुद्दों के साथ जूझती है और अनुसंधान के मुद्दे पर ज्यादा अधिक अतंर्दृष्टि प्रदान करती है।

3. (क) बाजार क्षेत्र–नियोजन की प्राथमिकताएं

   (i) पाकिंग जगह की व्यवस्था

   (ii) अत्यधिक भीड़–भाड़ को कम करने का वैकल्पिक बन्दोबस्त

टिप्पणी

(ख) पहाड़ी क्षेत्र–नियोजन की प्राथमिकताएं

(i) परिवहन के लिये व्यवस्था

(ii) पर्यावरणीय पुनरूत्थान

32.2

1. (क) बाजार (ख) नियमित बाजार (ग) सप्ताहिक बाजार (घ) विशिष्ट बाजार
2. (क) परचून बाजार–विशेषताएं

(i) बिक्री के लिये वस्तुओं की संख्या और विभिन्नता सीमित रहती है।

(ii) यह स्थानीय ठिकाने और आसपास के स्थानों को वस्तुएं उपलब्ध करता है।

(ख) थोक बाजार–विशेषताएं

(i) बिक्री के लिये वस्तुओं की संख्या और विभिन्नता अधिकायता में और विकल्पों का विस्तार काफी होता है।

(ii) कुछ चयनित विशिष्ट मदे होती है और बड़े क्षेत्र व जनसंख्या को मुहैया कराता है।

32.3

1. मलिन बस्ती की विशेषताएं

(क) प्रति व्यक्ति आय का निम्नस्तर

(ख) न्यूनतम सामाजिक सुख साधनों और सुविधाओं का अभाव

(ग) अस्वच्छता की स्थितियां फैली रहती हैं।

2. मलिन बस्ती की जनसंख्या की वृद्धि के लिये उत्तरदायीकारक

(क) बढ़ता हुआ औद्योगिकीकरण और सेवाओं का शहरों में केन्द्रीयकरण

(ख) शहरों में बढ़ता पूंजी विनियोग

(ग) शहरी क्षेत्रों में रोजगार अवसर

3. मलिन बस्ती क्षेत्रों के सुधार के लिये नियोजन प्राथमिकताओं का सुझाव

(क) मूलभूत सामाजिक सुविधाओं और सुख–साधनों के लिये व्यवस्था करना

(ख) पुनर्वास और पुनः अधिवास के कल्याणकारी योजनाएं प्रारम्भ करना

(ग) स्व रोजगार के लिये आर्थिक अनुक्रियाओं को सुलभ बनाना

टिप्पणी

32.4

1. उपयुक्त शब्दः

   (क) लगभग 8 प्रतिशत

   (ख) खुबा

   (ग) पशु

   (घ) ऋतु–प्रवास

2. जनजातीय समुदाय की विशेषताएंः

   (क) उत्पादन का पारम्परिक तरीका

   (ख) चराई मैदानों का समुदाय द्वारा साझा उपयोग

   (ग) पौधों और पशु जीवन का संरक्षण और प्रौन्नति जनजातीय संस्कृति और विरासत का अंतरंग हिस्सा है।

3. जनजातीय क्षेत्र विकास के नियोजन की प्राथमिकताएं

   (क) सामाजिक सुविधाओं और सुखसाधनों की व्यवस्था करना

   (ख) वन पारिस्थितिक व्यवस्था का, हरित चरावाहों और वन्य प्रदेशों का झीलों, तालाबों, कुंओं, नलकूपों और लघु वाटरशेडों के जरिये पुन र्सृजन करना।

   (ग) वन, पशु और कृषि उत्पादों पर आधारित छोटे पैमाने के प्रौससिंग इकाइयों की स्थापना करना।

32.5

1. उपयुक्त शब्द

   (क) पहाड़ी क्षेत्र (ख) गोम्पा, (ग) छक–जोड़े (घ) छितरा हुआ

2. सूची–I का सूची–II के साथ मिलान करे

   (क) iii, (ख) i, (ग) iv, (घ) ii

3. पहाड़ी क्षेत्र के विकास के लिये सुझाया नियोजन

   (क) मूलभूत सुख साधनों और सुविधाओं का व्यवस्था करना

   (ख) स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल के आधार पर कुटीर उद्योगों को प्रोन्नत करना

   (ग) पर्यटन का विकास करना

टिप्पणी

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. अनुच्छेद 32.1 देखिए
2. अनुच्छेद 32.2 देखिए
3. अनुच्छेद 32.3 देखिए
4. अनुच्छेद 32.4 देखिए
5. अनुच्छेद 32.4 देखिए
6. अनुच्छेद 32.5 देखिए